विचार दृष्टि

वर्ष : 7 अंक : 23 अप्रैल-जून 2005 25 रुपये

सार्वजनिक जीवन में 'खोटे सिक्कों' का चलन

खतरे में लोकतंत्र !

रेणु की कहानियों में ग्रामीण जीवन के यथार्थ

राष्ट्रीय एकता के अभियान को आंदोलन का रूप देने का संकल्प

हरियाणा को छोड़ बिहार एवं झारखंड में खंडित जनादेश

पटना हड्डी एवं रीढ़ रोग अस्पताल प्रा.लि.

Patna Bone & Spine Hospital Pvt. Ltd.

A Centre Dedicated to Advanced Care of Bone & Spine Surgery Only

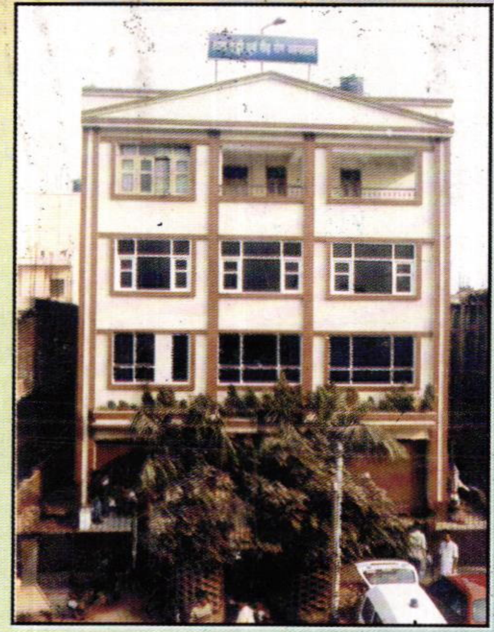

1. टूटी हड्डियों को कम्प्यूट्रीकृत एक्सरे (IIT) के द्वारा बैठाने की सुविधा।
2. हाथ/पाँव की सभी हड्डियों के टूट बिना प्लास्टर, बिना ज्यादा चीर-फाड़ के क्लोज्ड इन्टर लौकिंग नेल (Close Interlocking Nail) द्वारा इलाज, ताकि मरीज तुरन्त चल सके।
3. छोटे छिद्र द्वारा (Arthroscopic) घुटने के अन्दर की खराबियों का इलाज।
4. जन्मजात, पोलियो, चोट के बाद टेढ़ी-मेढ़ी हड्डियों का इलिजारोब (Ilizarov) तकनीक द्वारा इलाज।
5. रीढ़ (गर्दन समेत) की हड्डियों एवं नस का ऑपरेशन, छोटे छिद्र (Microdiscectomy) द्वारा डिस्क प्रोलैप्स का ऑपरेशन।
6. रीढ़ की चोट की सम्पूर्ण एवं विशिष्ट चिकित्सा।
7. पूर्ण जोड़ प्रत्यावर्तन (Total Joint Replacement)।
8. वास्कुलर, न्यूरो, प्लास्टिक, फेसियोमैक्जिलरी, माइक्रो सर्जरी के विशेषज्ञों द्वारा एक दल के रूप में बहुअंगीय (Polytrauma) कठिन चोटों का इलाज।
9. हृदय, न्यूरो, छाती के औषधि विशेषज्ञों की देख-रेख।

Dr. Vishvendra Kumar Sinha
M.B.B.S. (Pat.), D. orth. (Pat.) M.S. (orth.), FICS (USA) Ph.D. (orth.)

H-3, Doctors Colony, Kankarbagh, PATNA-800 020 Ph. : 2361180

एच.-3, डॉक्टर्स कॉलोनी, कंकड़बाग, पटना-800 020. फोन : 2361180

विचार दृष्टि

(राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक त्रैमासिकी)

वर्ष-7 अप्रैल-जून, 2005 अंक-23

संपादक व प्रकाशक:

सिद्धेश्वर

सं. सलाहकार: गिरीश चंद्र श्रीवास्तव

प्रबंध संपादक : सुधीर रंजन

सहा.संपादक : डॉ० शाहिद जमील

संपादन सहायक : अंजलि

साज-सज्जा: दिलीप सिन्हा एवं सुधांशु

शब्द संयोजन : सोलूसंस प्वायंट

(शशि भूषण, दीपक कुमार)

प्रकाशकीय कार्यालय:

'दृष्टि', 6 विचार विहार, यू०-207

शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92

दूरभाष: (011) 22530652/22059410

मो०-9811281443 फैक्स: (011)22530652

E-mail: vichardrishti@hotmail.com

पटना कार्यालय:

'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1

दूरभाष: 0612-2228519

ब्यूरो प्रमुख

मुम्बई: प्रो० मनोज कुमार ☎ 2553701

कोलकाता: जितेन्द्रधीर ☎ 24692624

चेन्नई: डॉ० मधु धवन ☎26262778

तिरूवनंतपुरम:डॉ०रति सक्सेना ☎2446243

बैंगलूर:पी०एस०चन्द्रशेखर ☎26568867

हैदराबाद: डॉ० ऋषभदेव शर्मा

जयपुर: डॉ० सत्येंद्र चतुर्वेदी ☎ 2225676

अहमदाबाद:वीरेंद्र सिंह ठाकुर ☎ 2870167

प्रतिनिधि

लखनऊ: प्रो. पासरनाथ श्रीवास्तव,

ग्वालियर: डॉ. महेंद्र भटनागर ☎ 2341955

सतना: रामसिया सिंह पटेल

देहरादून: डॉ. राजनारायण राय ☎ 2773124

मुद्रक: प्रोलिफिक इनकारपोरेटेड

एक्स-47, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया,फेज-2, नई दिल्ली-20

मूल्य: एक प्रति 25 रुपये

वार्षिक: 100 रुपये

द्विवार्षिक: 200 रुपये

आजीवन सदस्य: 1000रुपये

विदेश में:

एक प्रति:US $5, द्विवार्षिक:US $20,

आजीवन: US $250

(पत्रिका-परिवार के सभी सदस्य अवैतनिक हैं)

रचना और रचनाकार

पाठकीय पन्ना /2

संपादकीय /3

विचार प्रवाह :

खतरे में लोकतंत्र! /8

-डॉ० शिवनारायण

साहित्य :

रेत के फूल-कहानी-गिरीश चंद्र श्रीवास्तव/10

फिरौती-कहानी -कृष्ण कु. राय /14

लहरों के चोर-कहानी /18

-सुनीता जाजोदिया

प्रेमचंद के कथा साहित्य में... /20

-प्रो. लखनलाल सिंह आरोही

काव्य-कुंज :

हर्षलता श्रीमाली, पार्वती, /22

एड्वर्डस, विराट, पौलोमी, राजू

समीक्षा :

इन्हें कुछ न कहें-डॉ. तपेश्वरनाथ/26

आम आदमी की बेचैनी-कृष्णानंद/27

मेरी यूरोप यात्रा...डॉ. राधाकृष्ण /29

'संवर्त' -वैजनाथ राय /30

चिंतन की रेखाएं /32

-डॉ. ऋषभदेव शर्मा

चेतना:

पारदर्शिता /34

फौजी की कहानी /34

साक्षात्कार:

भोजपुरी गीतों के बादशाह /36

भाषा/संस्कृति:

भाषा अभिव्यक्ति का साधन है /37

दृष्टि :

हरियाणा को छोड़... /39

राजनीतिक नजरिया:

तीसरे मोर्चे की प्रासंगिकता /41

अगली बार जब सरकार बनेगी /42

गतिविधियाँ : /43

मधुर शास्त्री हुए 75 के /43

वैचारिक क्रांति... /44

रेणु की कहानियों में... /45

दक्षिण दिशा /48

हैदराबाद की चिट्ठी

चेन्नई की चिट्ठी

केरल के करीम का इतिहास

प्रकृति और मानव

सम्मान /50

मृणाल सेन को फाल्के पुरस्कार

संस्मरण /51

रजनी: एक बाल साहित्यकार का निधन

श्रद्धांजलि /54

प्रभुजी तुम चंदन हम पानी

साभार स्वीकार /55

साक्षात्कार

चुनाव

सम्मान

संस्मरण

श्रद्धांजलि

पत्रिका-परामर्शी

❑पद्मश्री डॉ.श्यामसिंह 'शशि'❑प्रो .रामबुझावन सिंह❑श्री गिरीशचंद्र श्रीवास्तव, ❑श्री जियालाल आर्य ❑डॉ० बालशौरि रेड्डी ❑डॉ० सच्चिदानंद सिंह 'साथी' ❑श्री बाँकेनन्दन प्रसाद सिन्हा ❑प्रो० धर्मेन्द्र नाथ 'अमन'❑डॉ० एल.एन शर्मा

रचनाकारों के विचारों से पत्रिका-परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं।

पाठकीय पन्ना

लेख चिंतन-प्रधान

विचार दृष्टि के नववर्ष 2005 अंक 22 वैचारिक दृष्टि से निरंतर अपना प्रतिमान स्थापित करती जा रही है। मैं जानता हूँ कि इसके पीछे आपका अथक श्रम एवं समर्पित भावना केंद्रित है। अन्यथा ऐसे गंभीर विषयों पर संतुलित विचारात्मक आलेख प्रस्तुत करना सरल नहीं है। पत्रकारिता का प्रतीक बन पड़ा है, यह अंक। आपकी संपादकीय टिप्पणियाँ भी संतुलित होने के साथ चिंतनपरक होते हैं, आपके विचारों में गहराई दर्शित होती है साथ संपादकीय दायित्व का बोध भी। यह एक मानक बने यही मेरी 2005 की प्रबल आकांक्षा है। लोकतंत्र के लिए कैसे मतदान करें, भारतीयता की पुकार एवं जनता दल यू की विफलता और बिखराव वाले लेख स्तरीय होने के साथ चिंतन-प्रधान हैं। मुखचित्र अद्भुत है। बधाई स्वीकार करें।

डॉ० बालशौरि रेड्डी, चेन्नै-33

संपादकीय बेबाक, प्रभावशाली और पठनीय

सर्वप्रथम नव-वर्ष 2005 के लिये मेरी हार्दिक शुभ कामनाएँ स्वीकार करें। यह वर्ष आपके तथा विचार दृष्टि परिवार के लिये मंगलमय हो और आप स्वस्थ, सानंद तथा निरंतर सक्रिय रहें यही मेरी कामना हैं

पत्रिका के कलात्मक आवरण के भीतरी पृष्ठों पर छपी रंगीन चित्रावली देखकर मन मुग्ध हो गया। आपकी गतिविधियों और व्यस्त कार्यक्रमों की झाँकी इन चित्रों में देखने को मिली। पत्रिका की बढ़ती हुई लोकप्रियता को देखकर बड़ी खुशी होती है। विगत कुछ वर्षो में ही आपने अपने कुशल संपादन और अथक परिश्रम से इसे हिंदी की श्रेष्ठ पत्रिकाओं की श्रेणी में पहुँचा दिया है। आपकी संपादकीय टिप्पणियाँ सदैव बड़ी ही बेबाक, प्रभावशाली और पठनीय होती हैं।

कृष्ण कुमार राय, वाराणसी

साधुवाद निर्भीक पत्रकारिता को

विचार दृष्टि के जनवरी-मार्च 05 अंक के जद(यू) की विफलता और बिखराव पढ़कर ऐसा लगा जैसे आपने आम लोगों के मन को अपनी पैनी दृष्टि से पढ़कर लिपिबद्ध कर दिया हो।

जद (यू) में अपराधी एवं भ्रष्ट किस्म के लोगों का आना, कर्मठ कार्यकर्ताओं की अनदेखी, भाजपा, के साथ तालमेल का कार्यकर्त्ताओं द्वारा पसंद नही किया जाना, समर्पित कार्यकत्ताओं द्वारा धीरे-धीरे दल से बाहर जाना, परस्पर सम्मान एवं सहनशीलता का अभाव, दल के नेताओं में प्रकृति एवं प्रवृति का अभाव आदि कारणों को निर्भिकता से आपने विश्लेषण किया।

साधुवाद आपकी निर्मिक पत्रकारिता को तथा आपकी लेखनी को। भारतीय जनमानस को कचोटनेवाली उक्त घटनाओं को आपने आत्म अनुसंधान के द्वारा जाग्रत कर असलीयत पहचानने एवं मतदाताओं के नब्ज टटोलने की सही सलाह दी।

योगानंद सिन्हा, पटना

वैचारिक स्वाभिमान का वाहक

विचार दृष्टि का नया अंक (वर्ष-6, अंक-21) देखकर मन हर्षित हुआ और पत्र लिखने को तत्पर हुआ। आपका संपादकीय राष्ट्रीय स्वाभिमान की दिशा में हमें जाग्रत करता है। और अपने कर्त्तव्यों के प्रति आशक्त रहने की प्रेरणा करता है। विश्व परिपार्श्व का आपका वैचारिक दृष्टिकोण संपूर्ण राष्ट्र के वैचारिक स्वाभिमान का वाहक है। पता नहीं राष्ट्र की चैतन्य धारा कहाँ और क्यों बाधित है। आपके वृहत प्रयास को साधुवाद है। विशेषांक के अन्य लेख भी उत्तम हैं।

अशोक कु. ज्योति, गुड़गाँव, हरियाणा

डमालूप्रभू नित्य कामना प्रदान करे जी

जनवरी-मार्च 2005 का अंक प्राप्त हुआ, बहुत ही सुन्दर व स्वच्छ अंक है। फुर्सत व गहराई से किये संपादन के एक-एक पल को ढेरो-ढेरो बधाई जी डमालूप्रभू आपको नित्य कामना किया प्रदान करे जी।

सुन्दर अंक में मेरी कविता को स्थान देने का कोटिश: धन्यवाद। हम आपके इन भावों के सदा आभारी है जी।

जयसिह अलवरी, न्यू दिल्ली स्वीट स्टॉल, सिरुगुप्पा-583121, बेल्लारी, कर्नाटक

पत्रिका नहीं अपितु आंदोलन भी

सामाजिक समरसता को बढ़ाने तथा नई दृष्टि देने के सक्षम यह सिर्फ पत्रिका नहीं अपितु आंदोलन भी है,

यू. सी. अग्रवाल का आलेख लोकतंत्र के लिए कैसे मतदान करें बहुत अच्छा है उनका यह सुझाव कि बदनाम दल का सुयोग्य प्रत्याशी, अच्छे दल के निकम्मे प्रात्याशी से बेहतर है बहुत पसंद आया मगर वह यह बताने से चूक गये के यदि मतदान न करने दिया जाए, बूथ कैप्चरिंग हो जाए, तब क्या करें? इसी प्रकार सिद्धेश्वर जी का राजनीतिक लेख जद (यू) की विफलता और बिखराव सामयिक एवं विचरोत्तेजक हैं उनका यह कथन कि प्रकृति किसी को भी सर्वगुण संपन्न नहीं बनाती यदि एक कमी दूसरे का पूरक बन जाए तो बहुत अच्छा हो नया समा बनाने की चाह रखनेवालों के लिए बीज-मंत्र की तरह है।

चितरंजन लाल भारती
क्वा.नं.-246, एचपीसी टाउनशिप, पो. पंचग्राम, असम 788802

उत्कृष्टता की निर्भीक अभिव्यक्ति

इसकी सुष्ठ प्रस्तुति ने मन मोह लिया दिनानुदिन इसकी निर्भीक अभिव्यक्ति उत्कृष्टता को प्राप्त कर रही है।

संपादकीय में बिहार और झारखंड की राजनीति का बेवाकपन बहुत भाया। काश बिहार और झांरखंड की जनता इसे समझ कर ज़ीवन में उतारती। भारतीय राजनीति के अपराधीकरण पर डॉ. जगपाल सिंह के विचार अभिनन्दनीय है। महामहिम राष्ट्रपति डॉ. अब्दूल कलाम की रचना राष्ट्र को अर्पित है तुम्हारी जवानी उनकी दिल की पुकार है। मधुर शास्त्री की रचना मेरे देश में परिवर्तत्तन का संदेश हैं क्रांतिदशी कवि डॉ. सहदेव सिंह पाचर की रचना भारतीय राजनीति को बेनकाब करती है। डॉ श्रीरजंन सूरिदेव का आलोख धर्म और उसका राष्ट्रीय स्वरूप विचार प्रधान रचना है। सोचने को मजबूर करता है। चन्द्र कुमार सुकुमार ने अणुव्रत के सन्दर्भ खोलकर जीवन और जगत में नैतिकता के सन्दर्भ को रखा है, जो अनुकरणीय हैं सिद्धेश्वर जी की रचना जद (यू) की विफलता और बिखराव रचनात्मक दृष्टि से लिखी गई रचना है, जो व्योम बिहारी नेताओं को सीख देती है ताकि कुशासन की दु:स्थिति में सशक्त विकल्प बन सके। काश! नेताओं की अन्तरदृष्टि खुलती अन्य रचनाएँ भी किसी से कम नहीं। सभी अपनी विशिष्टता एवं उत्कृष्टता के लिए पठनीय हैं। बधाई।

डॉ० पी.एन. विद्यार्थी
बी. 140, हरमू हाउसिंग कॉलोनी,
राँची-2

कौशलपूर्ण संपादन

विचार दृष्टि का अंक आ गया 2005 के उपलक्ष्य में आभारी हूँ।

अपने लेखन, लालित्य कौशलपूर्ण संपादन एवं समाजोत्कर्षक कार्य के लिए शाधिक सम्मान सुमन माताओं से आप लोकादृत हो यही इस अकिचंन की हृदयेच्छा है।

डॉ. राज नारायण राय, देहरादून

नववर्ष का वैचारिक उपहार जैसा अंक

विचार दृष्टि जनवरी-मार्च 2005 अंक एक तरह से नव वर्ष का अनुपम वैचारिक उपहार जैसा है। विचार दृष्टि का यह अंक वस्तुत: वैचारिक दर्पण लगता है। वर्तमान युगबोध-अथवा शोध दृष्टि का प्रतिबिम्ब है। महामहिम राष्ट्रपति डा. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम की काव्य रचना राष्ट्र को अर्पित जवानी तुम्हारी अर्पित उत्तम भावों की अभिव्यक्ति है। रचना महामहिम के काव्य प्रेम को प्रकट करती हैं दर्शाती है वहीं उक्त रचना राष्ट्र को समर्पित वीर सपूत जवान जो वास्तव में राष्ट्र के गौरव हुआ करते हैं उन्हें अर्पित कविता सराहनीय है। अनुकरणीय एवं प्रेरक है। महामहिम एवं कवि की यह पंक्तियाँ बहादुरों करे हम प्रार्थना तुम्हारे वास्ते ईश्वर की तुम पर रहे, सदा कृपा, कवि एवं कवि हृदय की अपनी विशिष्टता व्यक्ति करती है। अंक में पाठकीय पन्ना मात्र पन्ना नहीं, पारखियों की अपनी अभिव्यक्ति हैं। सम्पादक जी की कलम से बिहार, चुनाव, लालू पर स्पष्ट बेबाक विचार एवं अंत में दी गई सलाह वाकई बड़े अच्छे विचार हैं। संक्राति काव्य-साकेत, भारतीयता की पुकार में अच्छे विचारों का समावेश हुआ है। सेनानी कहानी अच्छी है। चेतना में सभी के विचारों का अपना महत्व है। मानना होगा बाल साहित्य बोध में काफी अच्छे विचार हैं। आलेखों में राष्ट्रीय पर्व त्यौहार, धर्म और उसका राष्ट्रीय स्वरूप मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना की वैचारिकता-सराहनीय हैं। सिद्धेश्वर जी का अपना राजनीतिक नजरिया बहुत कुछ कह देता है। अंक में काव्य कुंज, विशेष अर्थ देता है। श्री मधुर शास्त्री, मंजुला गुप्ता डा पाचर, डा देवेन्द्र आर्य की कविताएं हृदयग्राही मन को छुने वाली हैं वहीं श्री चन्द्रसेन विराट की कविता, सच सच बतलाना भाई अपने विस्तृत विराट स्वरूप में वह सब कुछ और बहुत कुछ, विशिष्ट और विशेष ज्यों माने, जिसे बहुत कम लोग कह पाते हैं मानना होगा, कविता में विशेष प्रकट हुआ हैं या यह कविता में वास्तविकता, सच्चाई, सत्यता, यथार्थ असलियत ही है। अंत में श्रद्धाजलि में एक युग का अंत, टिप्पणी भी उपयुक्त व अच्छी है।

रामगोपाल राही
लाखेरी, बूँदी, राजस्थान

विचार प्रवण संपादकीय

विचार दृष्टि का अक्तूबर-दिसंबर 2004 अंक प्राप्त हुआ। एक ही अंक में इतनी विविधतापूर्ण एवं बहुआयामी सामग्री पाकर दिल खुश हो गया। इससे आपकी संपादकीय सिद्धहस्तता के दर्शन सहज ही होते हैं। आपका धारदार एवं विचारप्रवण संपादकीय एवं राष्ट्र चेतना खण्ड ने विशेष तौर पर प्रभावित किया।

संजय जोशी 'प्रेमी',
के-10, आशिआना अपार्टमेंट, नं.9, वीनस कॉलोनी, 2री क्रॉस स्ट्रीट, अलवरपेट, चेन्नई - 600 018

रचनाओं पर आपकी प्रतिक्रिया का स्वागत है, क्योंकि वे ही हमारे संबल हैं। आपके सुझाव हमारे लिए बहुत ही कीमत रखते हैं।

हमें इस पते पर लिखें:
पाठकीय पन्ना,
'विचार दृष्टि'
'दृष्टि', यू०-207, शकरपुर,
विकास मार्ग, दिल्ली-92

विचार संपन्न-विचार दृष्टि

तलवार लाती है
सदा खूनी-क्रांति
भंग होती है इससे
जन-मन की शांति
कलम लाती है
वैचारिक-क्रांति
हर लेती है वह
जन-मन की भ्रांति
कार्यशील इस दिशा में
त्रैमासिकी 'विचार दृष्टि'
कर रही यह पत्रिका
नूतन विचारों की सृष्टि
संपादक सिद्धेश्वर की
बड़ी व्यापक है दृष्टि
बिगाड़ नहीं पाएगी
इन्हें किसी की कुदृष्टि
सूखने वाली नहीं है
कभी कलम की स्याही
संपादक जी को सर्वत्र
मिल रही है वाहवाही
होकर रहेगी अब तो
वैचारिक-क्रांति
जन-जीवन में लाएगी
यह समता, सुख-शांति
पत्रिका कर रही है
नये विचारों की वृष्टि
विषमता अब मिटेगी
जगत-जीवन की
पीड़ा हरेगी पत्रिका
पीड़ित जन-मन की
समता लाना मात्र
लक्ष्य है पत्रिका का
उज्ज्वल भविष्य का
फहरे नव वर्ष में
मानवता की सर्वत्र
हो विजय-पताका
यही तो अभीष्ट है
विचार-संपन्न
'विचार दृष्टि' पत्रिका का।

युगलकिशोर प्रसाद, पटना

●

हास्य-व्यंग्य हाइकु

सुरेन्द्र वर्मा

मैं बड़बोला
खुद को ही कहता
अकलमंद

देख ने पाया
जिद थी सीधा चलूँ
गिरा कुएँ में

कुत्ता उसका
पूर्व जन्म का मित्र
पूछ हिलाता

दल कितने
पर हर दल में
नेता अद्वैत

नकटे हुए
पहचान बनी तब
नाकवालों की

परिभाषित
आदमी लिबास से
पत्तों से गोभी

श्रीमति गंधे
उचकाती हैं कंधे
डालती फंदे

कैसा स्वागत
हर साल लगा है।
आना सालों का

सुबह सबेरे
स्वागत में बोले
ब्रश करिए

संपर्क: *10, एच.आई.जी., 1, सर्कुलर रोड, इलाहाबाद-211001*

●

जरा इनकी भी सुनें

खेती को बढ़ावा दिये बिना देश महाशक्ति नहीं हो सकता।

– मुलायम सिंह यादव, मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

राज्य में स्वच्छ एवं पारदर्शी शासन व्यवस्था मुहैया कराना हमारी प्राथमिकता होगी।

– अर्जुन मुंडा, झारखंड के मुख्यमंत्री

जबतक महिलाएँ आर्थिक रूप से सशक्त नहीं होंगी, उनके चतुर्दिक विकास की बात बेमानी है।

– रजनी पाटिल, अध्यक्ष, केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड

ऑक्सफोर्ड की तर्ज पर हरियाणा में एजुकेशन सिटी होगी।

भुपेन्द्र सिंह हुड्डा, हरियाणा के मुख्यमंत्री

अधिक वोट पानेवाले की बजाय, अधिक मत प्रतिशत पानेवाली पार्टी को विजयी घोषित किया जाय।

टी.एस.कृष्णमूर्त्ति, मुख्य चुनाव आयुक्त

झारखंड प्रकरण की पूरी पटकथा 10, जनपथ के निर्देश पर लिखी गयी।

राजनाथ सिंह, भाजपा महासचिव

केवल कानूनी रूप से वैध पत्नी को ही गुजाराभत्ता पाने का हक है। उच्चतम न्यायालय राज्यपाल के पद को ही समाप्त कर देना चाहिए।

बिहार में सरकार के गठन की कोशिश में जद(यू) थोड़ा पीछे हटने को तैयार है, लेकिन लोजपा को भी थोड़ा पीछे हटना होगा।

जद(यू) नेता नीतीश कुमार

सार्वजनिक जीवन में 'खोटे सिक्कों' का चलन

देश की आजादी की लड़ाई के वक्त समाज के विभिन्न क्षेत्रों की श्रेष्ठतम प्रतिभाएँ आकर्षित होकर उन्होंने अपना ज्ञान, सम्मान और संपत्ति सब कुछ न्योछाबर कर दिया था, किंतु आजादी के बाद सत्ता मोह, दलीय लाभ-हानि, निजी मान-सम्मान, गुण-दोष योग्यता की परख करनेवाले विवेक पर हावी और प्रभावी हो गए। नतीजा यह हुआ कि सत्ता और समाज का संचालन करने के लिए योग्यता-संपन्न के स्थान पर मनपसंद व्यक्तियों को वरीयता दी जाने लगी। वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री, साहित्यकार, कूटनीतिज्ञ, राजनीतिज्ञ, विधिवेत्ता, प्रशासक, सलाहकार और सहयोगी ऐसे लोग नियुक्त किए जाने लगे जो योग्य हों या न हों, किंतु नेतृत्व को पसंद हों। परिणामस्वरूप घटिया व्यक्ति सत्ता प्रतिष्ठान का संरक्षण प्राप्त करके सम्मान के अधिकारी बन गए और योग्य एवं प्रतिभावान व्यक्ति अवसर की तलाश में निराश होकर निष्क्रिय हो गए। इसी प्रक्रिया ने अवसरवादी गुंडा एवं अपराधी तत्त्वों को उपर उछाला और अब तो राजनीति का ही अपराधीकरण हो चुका है।

भारतीय राजनीति के मौजूदा दौर में आज चारित्र्यसंपन्न, प्रबुद्ध प्रतिष्ठित, उदारचेता, प्रतिभाशाली एवं समन्वित दृष्टिकोणवाले व्यक्ति आकृष्ट नहीं हो पा रहे हैं क्योंकि समाज में रचनात्मक और समाज सेवा कार्यों में रत व्यक्तियों एवं संस्थाओं को सम्मान नहीं देता। बल्कि सच तो यह है कि समाज आज उन्हें महिमामंडित कर रहा है जो डंके की चोट पर उन्हें लूटते हैं, उपेक्षा और अपमान की खरीद पर उन्हें तराशते हैं। आज जो जितना ही अधिक तिकड़मी, भ्रष्ट, असामाजिक और आपराधिक प्रवृति का है वह उतना ही प्रतिष्ठित, सफल, कुशल और सम्मानित व्यक्ति है। उसके लिए प्रतिष्ठा और प्रगति के द्वार खुले हुए हैं।

इस प्रकार आज सार्वजनिक जीवन में 'खोटे सिक्कों' का चलन इतना अधिक हो गया है कि अब 'खरे सिक्के' यदि कहीं दिखाई भी देते हैं तो वे नकली होने का भ्रम डाल देते हैं। स्थिति यहाँ तक आ गई है कि आज जिसे अपराधियों, बाहुबलियों तथा डाकुओं की सहायता मिलेगी वही चुनाव जितेगा। जिसे कालेधन की सहायता मिलेगी वही राजनीति का मुखिया होगा। जिसके पीछे कोई जाति, संप्रदाय अथवा मजहब होता है उसके संकेत पर सत्ता प्रतिष्ठान के नियंता उठते-बैठते हैं। जो जितना अधिक क्षेत्रीय और संकीर्ण है, वह उतना ही अधिक सबल है। जो मंच पर सदाचारी और घर में भ्रष्टाचारी है उसे महानता की ऊँचाई तक उठा हुआ मान लिया जाता है। गद्दार देशभक्ति का उपदेश देता है और विदेशी धन एवं सामान पर पलनेवाला स्वदेशी का प्रवक्ता बनता है। देश की अखंडता एवं एकता को खंडित करने के लिए प्रयत्नशील तत्त्व राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता का प्रतिपादन करते हैं। जिसे समुचित सम्मान मिलना चाहिए वह आज असम्मानित हो रहा है और जिसे प्रतिष्ठा की सीढ़ी के सबसे निचले पायदान पर होना था वह आज शिखर पर है। जो सत्ता में है और संपत्ति का मालिक बन बैठा है वही समाज का नियंता है। उसके बिना समाज के सभी अनुष्ठान अधूरे माने जाते हैं। पर सच तो यह है कि जब मार्यादाएँ भंग हो जाती हैं तो अमर्यादित जिंदगी कोई भी बँधन नहीं मानती। उसके सामने जिंदगी का नक्शा ही उलट जाता है।

इस वक्त प्रबुद्धजन भी एक खास किस्म की छटपटाहट से गुजर रहा है। राजनीतिक-सामाजिक स्तर पर उनकी कोई भी ऐसी गतिविधि नजर नहीं आती जो भविष्य के प्रति उम्मीद बँधाती हो। वे बौद्धिक गतिविधियाँ जो समाज और उसकी नियामक शक्तियों पर सार्थक टिप्पणियाँ प्रस्तुत करती चलती हैं और किसी न किसी रूप में अपनी नेतृत्वकारी भूमिका बनाए रखती हैं, वह भी आज दम तोड़ती हुई दिखाई देती हैं। और अगर आज बुद्धिजीवियों की कोई भूमिका है भी तो वह अपनी-अपनी संरक्षक राजनीतिक-आर्थिक ताकतों के यशोगान तक सीमित होकर रह गई हैं, जिसमें किसी भी तरह के सार्थक परिवर्तन की चिंगारी मौजूद नहीं है। ऐसे समय में अगर जिनकी प्रतिबद्धता अभी तक सामान्यजन से जुड़ी हुई है और वे उसके लिए चिंतित दिखाई देते हैं तो यह भी एक शुभ संकेत ही है। अगर बुद्धिजीवियों को प्रासंगिक बने रहना है तो उनकी संवेदनशीलता व रचनाशीलता सामाजिक एवं राजनीतिक आंदोलनों से जुड़नी चाहिए, क्योंकि विचार की दरिद्रता और विचार करनेवाले लोगों की कमी के इस दौर में सामाजिक एवं सांस्कृतिक संकट का सबसे ज्यादा अहसास बुद्धिजीवी को ही है। यही नहीं, उसकी मुख्यता इसी में होती है कि वह प्रवहमान धारा को अपनी व्यक्तिगत प्रतिभा और अध्ययन के अनुरूप तथा समय की आवश्यकतानुसार नई दिशा में मोड़ देता है।

कहना नहीं होगा कि ऐसी विषम परिस्थिति में अगर बुद्धिजीवी स्वयं भाववाद से हटकर वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाएँ

और समाज में इसके प्रचार-प्रसार की भूमिका निभाएँ तो बहुत-सी समस्याओं का समाधान तलाशा जा सकता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण यानी मनुष्य की भौतिक चेतना के साथ-साथ आत्मिक चेतना का परिष्कार किया जाए तो एक व्यावहारिक संस्कृति का विकास होगा जिससे समाज की विघटक, विध्वंसक, हिंसक जैसी प्रवृतियों का शमन किया जा सकता है। इसके लिए हमारे राजनीतिक-आर्थिक-सामाजिक ढाँचों से आकस्मिकता और अविश्वसनीयता के तत्त्वों को हटाना होगा।

कहा जाता है कि चुनाव एक महापर्व है, पर चुनाव में निरापराधी तथा योग्य उम्मीदवार अपराधियों से हार जाते हैं। ईमान की मौत और बेइमानी को जीवनदान मिलते रहता है। अच्छे व्यक्तियों के शासन में नहीं आने से भय, आतंक, शोषण और दुर्गति का चमन गुलजार होते रहता है। आखिर अपराधियों को चुनाव मैदान में आने से रोके बिना न तो सज्जनों को जीवनदान मिलेगा और न समाज में सुख-शांति आ पाएगी। निश्चित रूप से जब अपराधमुक्त लोगों का शासन होगा तभी समाज का नक्शा बदलेगा। अतएव स्वच्छ और निश्पक्ष चुनाव के लिए कड़ा कानून का होना आवश्यक है। ऐसे संगीन मामले जिसके विरूद्ध अदालत केस एडमीट कर लिया हो अथवा हत्या, अपहरण, घोटाला आदि के मामले में प्रथम द्रष्टवा मिल गया हो, वैसे लोगों को चुनाव लड़ने से वंचित किया जाना चाहिए। ऐसा नहीं होने का ही नतीजा है कि विगत 58 वर्षों से अपराधियों और बाहुबलियों की पीठ थपथपाकर निर्दोषों का गला रेतने का व्यापार अब पहले से कई गुणा अधिक फल-फूल रहा है। अब अपराधी चारों ओर नजर आने लगे हैं और निरापराधी नन्हीं शबनम की तरह सूख रहे हैं। फूल कम काँटे अधिक। ईमानदार कम बेईमान अधिक। संसद हो या विधानमंडल इन लोकतांत्रिक एवं संवैधानिक संस्थानों में जनप्रतिनिधियों के आए दिन गाली-गलौज, अभद्र नारे और अशोभनीय आचरण देखे जा रहे हैं। यदि नियम-कानून सख्त होंगे और उसे सख्ती से लागू किया जाएगा, तो संसद व विधानसभाओं में बेदाग लोग ही जा पाएँगे।

आज का सर्वाधिक दुखद पहलू यह है कि सौ नेता उँगलियों पर गिने जा सकते हैं, जिन पर कोई बड़ा आरोप न हो। अधिकांश के सिर पर हत्या, अपहरण, बलात्कार और जन-धन की लूट के मुकदमें चल रहे हैं। स्वार्थांध इन नेताओं की वजह से लोकतंत्र राजनीतिक प्रदूषण का पर्याय बन चुका है। इस प्रणाली में सर्वाधिक निरीह कोई है तो वह भूखी फटेहाल जनता ही है, जिसे जाति और मजहब के नाम विभाजित कर दिया गया है। नेता को कुर्सी चाहिए, लेकिन व्यवस्था लोकतांत्रिक है, नेता भीतर में अधिनायक हैं पर ऊपर से जनसेवक होने का ढोंग रचा रहे हैं। मुझे रघुवीर सहाय की कविता की ये पंक्तियाँ याद आती हैं-

'राष्ट्रगीत में भला कौन वह भारतभाग्य विधाता है,
फटा सुथन्ना पहने जिसका गुण हरचरना गाता है।'

दरअसल इंसान के जब सपने चोरी होते हैं तो उसकी छवियों में सुराख हो जाता है। गरीबी हटाओ और समाजवाद का सपना चोरी हुआ, धर्मनिरपेक्षता की आँच आ गयी। आजादी के बाद आम आदमी की छवियों में अनगिनत सुराख हुए।

पिछले फरवरी में तीन राज्यों के संपन्न विधानसभा चुनावों में पहली बार निर्वाचन आयोग ने अपनी ताकत दिखाकर यह सिद्ध कर दिया कि अगर ईमानदारी का जज्बा हो तो कुछ भी असंभव नहीं है। पर अफसोस तो इस बात का है कि राजनेता इस बात से सरोकार नहीं रखते हैं। उन्हें तो बस किसी प्रकार 'कुर्सी' चाहिए। इस बार के चुनाव को भी बाधित करने का हर संभव प्रयास राजनीतिक दलों एवं उसके अपराधी आकाओं द्वारा कम नहीं किया गया, पर निर्वाचन आयोग की दृढ़ता और निश्पक्ष चुनाव कराने की आकांक्षा के समक्ष उनकी एक न चली। जब बूथ पर इनका ओछापन नहीं चला तो जाति विशेष मतदाताओं को डराया-धमकाया गया और मतदान केंद्र पर जाने से उन्हें रोकने का प्रयास किया गया। तरह-तरह की अफवाहें फैलाई गईं। समाज को बाँटने और खोखला करनेवाले अवसादों को फैलाकर सत्ता की नकेल थामने से लोकतंत्र निश्चित रूप से कमजोर होगा और जनता का विश्वास उस पर से डगमगाएगा। जिस प्रकार चुनाव आयोग ने इस बार पाठ सिखाए हैं, अगर प्रशासन भी उसे आत्मसात करे तो बेहतर परिणाम आ सकते हैं।

बिहार जैसे राज्य में चुनाव हो-हल्ला, हुड़दंग, बूथ कब्जा तथा हिंसा-प्रतिहिंसा का पर्याय माना जाता है, वहाँ चुनाव आयोग की कड़ी हिदायतों व चाक-चौबंद प्रशासनिक व्यवस्था के शांतिपूर्ण वातावरण में स्वतंत्र व निश्पक्ष चुनाव संपन्न होना सुखद आश्चर्य से कम नहीं है। 'मिशन फेयर पोल' के नाम से पहचाने जानेवाले तथा पूर्व निर्वाचन आयुक्त लिंग्दोह की किताब में 'रियल हीरो' के खिताब से नवाजे गए चुनाव आयोग के विधि सलाहकार के.जे. राव बधाई के पात्र हैं, जिन्होंने बिहार सूत्रे

में बड़ी मुस्तैदी से 'रूल ऑफ लॉ' को स्थापित कर भय व आतंकमुक्त माहौल में मतदान करवाया। पर अब सवाल यह उठता है कि श्री राव व अन्य प्रशासनिक अधिकारियों ने बहरहाल इस राज्य के कराहते लोकतंत्र को पीड़ा मुक्त तो बना दिया, लेकिन क्या नई सरकार, चाहे जब बने जनाकांक्षाओं की कसौटी' पर खरी उतरेगी?

तीन राज्यों के चुनाव परिणामों ने हरियाणा के इनेलो और बिहार के राजद जैसे क्षेत्रीय दलों को गहरा झटका इसलिए दिया है कि जनता के मन में इन दलों के प्रति अच्छी-खासी नाराजगी थी। इन दलों के नेताओं ने सत्ता में रहकर विकास का काम कम और अहंकार का प्रदर्शन अधिक किया। सत्ता मद में अधिकतर जन-प्रतिनिधियों ने जनता के दु:ख-दर्द को समझने की कभी चेष्टा नहीं की जिसका खामियाजा तो उन्हें भुगतना ही था। इसलिए जैसे ही मौका मिला, मतदाताओं ने अपने 'बदले' चुका लिये। इस बात से यह सिद्ध होता है कि लोकतांत्रिक पद्धति के प्रति जनता की समझ लगातार अधिकाधिक पक्की होती जा रही है। जनता अब वादों और आश्वासनों की छलनाओं में फँसनेवाली नहीं है, उसे ठोसे काम चाहिए। बड़ी से बड़ी समस्या पर गंभीर न होना और हर बात को मसखरे की तरह हँस कर उड़ा देना बहुत दिनों तक नहीं चल सकता।

हरियाणा विधानसभा चुनाव के नतीजे पर जब हम गौर करते हैं तब एक दिलचस्प स्थिति यह देखने को मिलती है कि जात-पांत की अँधगली से गुजरती आज की भारतीय राजनीति में ओम प्रकाश चौटाला की पार्टी का जनाधार हरियाणा के जाट मतदाताओं में रहने के बावजूद इनेलो के कुल नौ विजयी विधायकों में चौटाला ही एकमात्र जाट हैं। दूसरी बात यह है कि जहाँ चौटाला सरकार के सभी पूर्व मंत्री हारे तो वहीं भाजपा के सभी पूर्व विधायकों को पराजय का मुँह देखना पड़ा। बिहार में भी जद(यू) और भाजपा दोनों दलों के 14-14 विधायक इस बार नहीं जीत पाये। बिहार और झारखंड के चुनाव परिणाम बताते हैं कि इन राज्यों में स्थापित राजनीतिक नेतृत्व के खिलाफ स्थानीय ताकतों का उभार है। बिहार में राम विलास पासवान की लोजपा का तीसरा पक्ष बनकर उभरना तथा झारखंड में निर्दलीय उम्मीदवारों का उभार इसी बात का द्योतक है। दूसरी ओर चुनाव आयोग की सख्ती, परिवर्तन की हवा, 'माई' समीकरण में दरार के बावजूद राजद का 74 सीटों पर जीत कर सबसे बड़े दल के रूप में उभरना हमें यह सोचने को विवश करता है कि या तो जमीनी स्तर पर लालू प्रसाद की पकड़ कायम है या फिर बिहार की जनता के चाहते हुए भी नीतीश कुमार उनका सही विकल्प नहीं बन पा रहे हैं। आखिर इसके क्या कारण हैं, इस पर नेताओं को गंभीरता से विचार करना उनके अपने तथा बिहार के हक में होगा।

जहाँ तक काँग्रेस का सवाल है उसके लिए ये चुनाव आँखें खोलनेवाले होने चाहिए। पर ऐसा लगता है कि काँग्रेस पार्टी अभी भी पिछले विधानसभा के आम चुनावों में मिली सफलता के नशे में चूर नजर आती है। हरियाणा की शानदार जीत को छोड़ दिया जाए तो बिहार एवं झारखंड के कुल 324 सीटों में से मात्र 19 सीटें हासिल कर ही उसे संतोष करना पड़ा। यह इस बात सूचक है कि हिंदी भाषी क्षेत्र के बड़े राज्यों में उसका आधार निरंतर खिसकता जा रहा है, फिर भी 10, जनपथ में राजनीतिक हलचल तेज और सोनिया जी का यशोगान जारी है।

इस पूरे चुनाव के नतीजे तथा गठबंधन राजनीति पर जब हम एक नजर डालते हैं तो पाते हैं कि खंडित जनादेश अब कहीं अधिक गंभीर समस्याएँ लेकर आता है। खंडित जनादेश आते ही राजनीतिक पार्टियाँ जिस प्रकार मौकापरस्ती का परिचय देने लगती हैं उससे जनता के निर्णय का अपमान ही होता है। चुनाव बाद विरोधी दलों से हाथ मिलाना गठबंधन राजनीति नहीं, बल्कि एक प्रकार से मतदाताओं की इच्छाओं का गला घोंटना है। अगर गठबंधन राजनीति के इस गोरख-धंधे को रोकने के लिए कोई कारगर कदम नहीं उठाये गए तो विश्व के सबसे बड़े भारतीय लोकतंत्र की जगहँसाई ही होगी, क्योंकि पिछले एक दशक से इस देश में गठबंधन राजनीति का जो दौर चल रहा है उसमें जनादेश की खुलकर खिल्ली उड़ाई जा रही है। जिस तरह जंग और प्यार में सब कुछ जायज़ माना जाता है उसी तरह की स्थिति आज गठबंधन राजनीति में भी देखने को मिल रही है। आपने देखा नहीं गोवा, झारखंड तथा बिहार में गठबंधन राजनीति के नाम पर अनैतिकता और सिद्धांतहीनता की राजनीति का जमकर प्रदर्शन किया गया और जनता को मूर्ख बनाते हुए चुनाव नतीजों की मनमानी व्याख्या की गई।

राजनीति के अपराधीकरण से

खतरे में लोकतंत्र!

डॉ. शिवनारायण

' गन-तंत्र के हाथों जहाँ
गणतंत्र मौन हैं,
ये सभासद सारे कौन हैं ?'

ऐसे सभासदों की शिनाख्त करना आज तकनीकी कारणों से भले सरकारी हुक्मरानों एवं चुनाव आयोग के लिए मकड़जाल बनकर रह गया हो, जिन्होंने अपनी आपराधिक हरकतों से अठावन वर्षीय भारतीय लोकतंत्र को शर्मसार कर रखा है, लेकिन इस देश की जनता उन्हें जान-समझ रही है। आज राजनीति का अपराधीकरण एक ऐसा शोकगीत हो गया है, जिसके कोरसगान में सभी आठ-आठ आँसू बहाते नजर आते हैं, किंतु उसके खिलाफ गोलबंद नहीं होते। अभी-अभी हरियाणा, झारखंड और बिहार में विधानसभा के चुनाव संपन्न हुए, जिनमें आपराधिक पृष्ठभूमि के उम्मीदवारों ने अपनी भारी बढ़त से पिछले तमाम चुनावों को कहीं पीछे धकेल दिया, जिस कारण इन चुनावों में विकास की अपेक्षा राजनीति के अपराधीकरण का विमर्श ही ज्वलंत मुद्दा जनता के बीच बना रहा। आज सभी छोटे-बड़े दल अपराधी नेताओं के यशोगान में जुटे हैं। प्रांतीय दलों समेत राष्ट्रीय दलों ने भी उम्मीदवारी घोषित करने में उनकी शैक्षिक, सामाजिक तथा राजनीतिक योग्यता को न देखते हुए सिर्फ जाति, दबंगता और उनके धन-गन-बल को ही प्राथमिकताएँ दीं और ऐसा करते हुए उन्होंने एक से एक बेशर्म दलीलें दीं, मसलन कहा गया कि शेर के सामने बकरी को तो खड़ा नहीं किया जा सकता है। नहले पे दहले के अंदाज में ही बाहुबली उम्मीदवार तय किए गए।

राजनीति किसी लोकतांत्रिक प्रणाली में जनता की सेवा से निकलकर उसके प्रति वफादारी रखने तक की हदों में घूमती रहती है। जब तक कोई राजनेता या दल लोकतंत्र की हदों में निष्ठा प्रदर्शित करते हुए जनसेवा में समर्पित रहता है, तब तक उन्हें जनता के अपार विश्वास को पाने के लिए जाति, धर्म, धन-बल आदि किसी भी चीज की आवश्यकता ही नहीं पड़ती है। आजादी के कुछ वर्षों बाद तक राजनेताओं की जनसेवा का यह सिलसिला चला भी। फिर सत्ता के स्वाद ने उनके मिजाज को बदल दिया। जनसेवा के बदले वे राजभक्ति दिखलाने वाले पूंजीपतियों की सेवा में रुचि लेने लगे। जनता से उनकी दूरी बढ़ती चली गई। फिर, राजनीति में 'गरीबी हटायेंगे'.......'भ्रष्टाचार मिटायेंगे' जैसे चित्ताकर्षक नारे उछलने लगे। नारे वादों में बदलते गए। वादे यानी छलावा दर छलावा की राजनीति चल पड़ी, जिसे सत्ता तक पहुँचने का आसान मार्ग मान लिया गया। आठवें-नवें दशक तक तो उसी नीति के तहत राजनेताओं की चालें फलती-फूलती रहीं......शायद इसीलिए स्वतंत्रता के बाद से 1993 तक बिहार में 25 सरकारें बनीं। इनमें 3 दिनों से लेकर 13 महीने की अवधि की एक दर्जन सरकारें भी थीं। उस दरम्यान 5 बार राष्ट्रपति शासन भी रहे। 1993 तक जातिवाद, भ्रष्टाचार का तांडव, भूमि सुधारों की घोर उपेक्षा, जन अपेक्षाओं को बर्बरतापूर्वक कुचला जाना, विकास का छलावा आदि ने बिहार की राजनीतिक अस्थिरता में ऐसा घी डाला, कि अपराधियों के कुनबों ने राजनीति के सिर चढ़कर गुर्राना आरंभ कर दिया। उस समय तक जनता में राजनेताओं की घटती शाख के कारण चुनाव में जीत हासिल करने के लिए अपराधियों से सहयोग लेने की परंपरा परवान चढ़ चुकी थी। तब तक अपराधी चुनाव में सीधे उतरने से कतराते थे, क्योंकि समाज के नैतिक बल को वे तोड़ नहीं पाए थे। हालांकि दस्यु गिरोहों के राजनीतिकरण की शुरूआत भारत में, विशेषकर बिहार में स्वतंत्रता के बहुत पहले ही ब्रिटिश शासकों ने कर दी थी, जिसके उदाहरण मौजूद हैं। तब उसका स्वरूप अलग था।

नवें दशक के उत्तरार्द्ध में दलित-पिछड़ों में आए उभार को लक्षित करते हुए मंडल कमीशन ने भारतीय राजनीति में जो भूचाल पैदा किया, उसकी वजह से दलित-पिछड़े और अल्पसंख्यक वोटों (विशेषतः मुस्लिम वोट) के ध्रुवीकरण ने कांग्रेस के होश ठिकाने लगा दिए। तब भारतीय राजनीति में जो सुनामी लहरें उठीं, उसने केंद्रीय सत्ता में एक दल के वर्चस्व को बुरी तरह ध्वस्त कर दिए। उसके बाद प्रांतीय दल बनने लगे। उससे भी छोटे-छोटे दल क्षेत्रीय विकास के नाम पर बने। सत्ता में भागीदारी ने उनकी महत्त्वाकांक्षाएँ बढ़ा दीं। घुटभैये नेताओं की सत्ता में भागीदारी बढ़ी, तो आपराधिक पृष्ठभूमि के गोबरछत्ते धड़ाधड़ उगने लगे। विधानसभाओं में उनकी सीधी दखल शुरू हो गई। एक अध्ययन के अनुसार 1985 के बिहार विधानसभा चुनाव में आपराधिक पृष्ठभूमि के 30 उम्मीदवारों ने जीत दर्ज की। 1995 के चुनाव में यह संख्या दुगुनी हो गई, सन् 2000 के चुनाव में तीगुनी। यहाँ इस तथ्य का उल्लेख प्रासंगिक होगा कि 12 वीं लोकसभा चुनाव में देश के न्यायविदों, समाजसेवियों तथा अन्य क्षेत्र के विशिष्ट व्यक्तियों के एक पैनल ने 72 ऐसे उम्मीदवारों की शिनाख्त की थी, जिन पर गंभीर आपराधिक मुकदमे चल रहे थे। उन 72 अपराधियों में 17 प्रतिशत की भागीदारी बिहार के उम्मीदवारों की थी।

1990 के बाद के चुनावों में जब अधिक से अधिक सीटों पर जीत दर्ज कराने की लगभग सभी दलों में होड़ मची, तो उसमें अपराधियों की सीधी भागीदारी ने लोकतंत्र

की नींव को हिलाना शुरू कर दिया। तभी राजनीति के अपराधीकरण पर गंभीरता से चिंता दर्ज करते हुए उसके निराकरण पर सोचा जाना आरंभ हुआ। तभी 1992 में तत्कालीन चुनाव आयुक्त टी.एन. शेषन द्वारा चुनाव सुधार के कुछ उपाय सुझाए गए थे। उस वक्त कांग्रेस पुन: केंद्र की सत्ता में लौटी थी और उदारीकरण के जनक पी.वी. नरसिम्हा राव प्रधानमंत्री बने थे। राजनीति में बढ़ते अपराध के हस्तक्षेप को रोकने के लिए चुनाव सुधार पर व्यापक बहस कराई गई तब केंद्रीय सरकार ने विकल्पों पर विचार करते हुए कुछ प्रस्तावों को स्वीकार भी कर लिया था, जिनमें मुख्य थे- आचार संहिता का निर्माण, पोस्टरों-बैनरों पर होनेवाले बेशुमार खर्चे में कटौती, चुनाव प्रचार की अवधि में कमी, वार्षिक आय-व्यय लेखा का प्रकाशन तथा मतदाताओं को फोटो पहचान पत्र जारी किया जाना। हालांकि तब टी.एन. शेषन के प्रस्तावों में सबसे विवादित प्रस्ताव भ्रष्ट आचरण से ही संबंधित था। उन्होंने पुरजोर सिफारिश की थी कि यदि कोई व्यक्ति भ्रष्टाचार के मामले में दोषी पाया गया, तो वह स्वत: ही चुनाव लड़ने के अयोग्य मान लिया जाएगा। जाहिर है कि राजनीतिक दलों को उनका प्रस्ताव पसंद नहीं आया था और सर्वसम्मति से रद्द कर दिया गया कि वह व्यावहारिक नहीं है। उसके बाद समय-समय पर चुनाव सुधार के जो भी सुझाव आए, किसी ने भी चुनावी हिंसा को कम करने में मदद नहीं की। बड़े पैमाने पर अपराधी चुनाव लड़ने लगे और जीतने के बाद विकास के नाम पर जनता के धन का अपहरण करने लगे। जिले के अधिकारियों में भी विकास कार्य करने की अपेक्षा जनप्रतिनिधियों को मिली विकास-राशि से ठेकेदारी करने की प्रवृत्ति पनपने लगी। इस ठेकेदारी प्रथा ने अपराध को विकेंद्रित करने में बड़ी भूमिका निभाई। चुनावी हिंसा की जड़ें यहीं छिपी हैं। सरकारी आँकड़े बताते हैं कि बिहार में 1996 के लोकसभा चुनाव में 35 लोग मारे गए तो 111 घायल हुए, 1998 में 24 लोग मारे गए तो 134 घायल हुए, 1999 के चुनाव में 40 लोग मारे गए तो 93 घायल हुए और 2004 के चुनाव में 15 लोग मारे गए तो 78 घायल हुए।

राजनीति के अपराधीकरण का ही दुष्परिणाम है व्यापक चुनावी हिंसा, जिसमें सैकड़ों निरपराध लोग मारे जाते हैं। चुनाव में अपराधियों का बोलबाला आज चरम पर है, जिसमें सभी दल समान रूप से दोषी हैं। हालांकि बिहार के अनेक क्षेत्रों में जाति के आधार पर अपराधियों का समाजीकरण भी किया जा चुका है, जिस कारण क्षेत्र विशेष में जाति बहुल के अपराधी उम्मीदवार को ही सभी दल टिकट देने में रुचि दिखलाते हैं। इधर के वर्षों में यह खतरनाक प्रवृत्ति तेजी से विकसित हो रही है। बिहार इलेक्शन वाच (वेब) के एक अध्ययन पर ध्यान दें, तो सन् 2005 के बिहार विधानसभा चुनाव में विभिन्न दलों द्वारा 45 कुख्यात अपराधियों समेत 280 बाहुबलियों को चुनाव मैदान में उतारा गया है। कुल 450 उम्मीदवारों के खिलाफ किसी न किसी तरह के मामले चल रहे हैं। तीन चरणों में 71 उम्मीदवार नामाँकन के समय ही गिरफ्तार कर लिए गए, तो 19 उम्मीदवारों ने जेलों से ही पर्चा दाखिल किए। इनमें अनेक तत्कालीन सरकार के मंत्री एवं विधायक भी शामिल रहे हैं। इस बार दागियों-अपराधियों को टिकट देने की ऐसी होड़ मची रही, कि कई दल के आंतरिक रोष भी खुलकर सामने आ गए। मसलन लोजपा द्वारा नालंदा के कुख्यात जालसाज रंजित डॉन को टिकट दिए जाने पर उसके प्रदेश अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह बुरी तरह बिफर पड़े। हालांकि वे अपराधी पृष्ठभूमि के लोगों को टिकट देने को गलत नहीं मानते, क्योंकि उनके अनुसार ऐसे लोग राज्य सरकार की गलत नीतियों के कारण ही अपराध जगत से जुड़ते हैं। इनमें से कई लोग राज्य सरकार के खिलाफ लंबी लड़ाई भी लड़े.........लेकिन उनके अनुसार रंजित डॉन का मामला पूरी तरह जालसाजी का है और उसने हजारों नौजवानों को ठगा है। इसी प्रकार राजद पर आरोप लगाया गया कि उसने मुंबई में गुलशन कुमार हत्याकांड में जेल जा चुके आरोपी मोहम्मद शब्बीर को तो वहाँ से बुलाकर बिहार में टिकट दिया। ऐसे अनगिन आरोप लगभग सभी दलों पर लगाए जा रहे हैं और गाहे-बगाहे उन दलों के नेताओं ने क्षमा याचना भी की। इस बार के चुनावों में अपराधियों एवं जालसाजों का नग्न प्रदर्शन अपने पूरे ग्लैमर के साथ चला, जिसमें प्रांतीय नेताओं के साथ-साथ राष्ट्रीय ख्याति के नेताओं ने भी भरपुर सहयोग किया। फिल्मी अभिनेताओं एवं अभिनेत्रियों का जलवा तो रहा ही। कहा जाता है कि पिछले लोकसभा चुनाव में बिहार के मतदाताओं का राजद गठबंधन को 43 प्रतिशत मत और राजग गठबंधन को 38 प्रतिशत मत मिले थे। अब जबकि लोजपा और कांग्रेस राजद गठबंधन से अलग हो चुके हैं, तो उन दोनों के साथ-साथ राजग गठबंधन भी 5 प्रतिशत के अंतर को पाटने के निमित्त अपनी-अपनी जीत सुनिश्चित करने के लिए ही अपराधियों-जालसाजों का खुला समर्थन ले रहे हैं।

आज बिहार में राजनीति के अपराधीकरण ने लोकतंत्र को हाशिए में करने की पूरी तैयारी कर ली है, ऐसा प्रतीत हो रहा है। चुनाव में किसिम-किसिम के छल-बल से काम लिए गए। कहा जा रहा है कि दलित-पिछड़े तबके सहित इस देश के अल्पसंख्यकों में आई राजनीतिक जागरूकता ने ही सत्ता में उनकी भागीदारी को लेकर हड़कंप मचा रखा है। राजनीति में इसी सामाजिक परिवर्तन की लहर को अपराध का जामा पहनाकर उसे सवर्णों द्वारा बदनाम करने की कोशिश हो रही है और राजनीति के अपराधीकरण को बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया जा रहा है। वास्तव में वह सामाजिक परिवर्तन के निमित्त सत्ता में बने रहने का अस्तित्व-संघर्ष है और वह आने वाले दिनों में और तेज होगा। ऐसे छलावों की आड़ में अपराधियों की पौ बारह है, जिसके आतंक को अपने-अपने समुदाय के बीच वर्चस्व की लड़ाई के रूप में पेश किया जाता है। पूंजी संस्कृति के विस्फोट के इस दौर में, लोकतांत्रिक समाज में परिवर्तन के संघर्ष को काफी क्षति भी पहुँच रही है राजनीतिक दलों द्वारा

शेष पृष्ठ 13 पर...

कहानी

रेत के फूल

गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव

माँ ने करुणा को फोन पर बताया कि नन्दिता के लिए एक अच्छा लड़का मिल गया हैं दिल्ली के कॉलेज में मनोविज्ञान का प्राध्यापक हैं और दोनों ने एक दूसरे को पसन्द भी कर लिया हैं अगले रविवार की शाम को सगाई के लिए लड़के वाले आ रहे है करुणा का घर आना अवश्यक है

उसने जल्दी जल्दी तय्यारी की औरअगलने दिन शाम को घर पहूँच गई। पहुंचते ही मां बोली... बड़ा अच्छा हुआ तुम आ गई। मेरे तो हाथ पांव फूल रहे थे। इतना सारा काम पड़ा है।'

उसने कहा...

माँ, आप चिंता न कीजिए। मैं आ गई सब संभाल लूंगी।

तभी नंदिता दौड़ कर आई और उसके गले लग कर हर्ष विगलित स्वरों में बोली...

'कैसी हो दीदी?'

वह बोली...

तुम कैसी हो। बहुत बहुत बधाई हो नंदिता। यह सब कब और कैसे हुआ?'

नंदिता उसे खींच कर अपने कमरे में ले गई और बोली...

अब आई हो तो सब ज़ान जावोगी दीदी। थोड़ी देर बैठो तो ज़रा।

करुणा वहीं नंदिता के पास बैठ गई। बड़ी देर तक नंदिता अपने भावी पति के संबंध में बताती रही और फिर अंत में बोली. ..

दीदी, हमें बहुत डर लग रहा था पता नहीं क्या होगा। तुम होती तो सहारा रहता।

करुणा ने कहा...

अब तो मैं आ गई हूँ। सब कुछ ठीक होगा।

चाय पीते पीते नंदिता बोली...

जानती हो दीदी उन्हें किताबें पढ़ने का बेहद शौक है बिल्कुल तुम्हारी तरह। मुझे तो तुम जानती ही हो किताबों से दूर ही रहती हूँ। पता नहीं क्या क्या प्रश्न पूछते रहे शेक्सपियर और कालिदास के विषय में।

नंदिता की पीठ थपथपाते हुऐ करुणा बोली..

खैर, चलो अब तो परीक्षा में तुम पास हो गई हो। तुम पसंद आ गई बस। और फिर तुम किससे कम हो?

शरमा कर उसकी ओर देखती हुई नंदिता बोली...

और तुम्हारी बराबरी कौन कर सकता है दीदी?

करुणा ने एक लंबी सांस खींची और बोली...

नहीं नंदिता मेरी बात जाने दो। नहीं तो क्या अब तक...

नंदिता ने उसके होठों पर अपने हाथ रखते हुये कहा...

बस दीदी, ऐसा मत कहो? सब समय की बात है।

नंदिता चुप हो गई और करुणा एक गहरीर सोच में खो गई

वह जानती है कि बचपन में उसकी टांग में आपरेशन होने के बाद उसका एक पांव तनिक छोटा रह गया था। बहुत इलाज करवाया गया,उ परंतु कुछ भी लाभ नहीं हुआ था। और तबसे वह थोड़ा भचक कर चलती है। भगवान ने से रुप तो अप्रतिम दिया है, लेकिन उसका यह दोष चांद में दाग की तरह उसके समूचे व्यक्तित्व को दबाता रहा है। उसी दोष के चलते बत्तीस वर्ष की होन के बाद भी वह कुंवारी ही रह गई है। कई बार विवाह के लिये लड़के उसे देखने आये किन्तु उकसे इसी दोष के कारण उसे इन्कार कर चले गये। इसी कारण छोटी बहन नंदिता भी तीस वर्ष की हो गई किन्तु उसका विवाह भी टलता गया। पिछली बार जब घर में करुणा के विवाह की बात फिर चली थी तब उसने स्वयं कहा था...

माँ, अब मेरे विवाह की चिंता छोड़ो। मेरे कारण नंदिता की उम्र भी बढ़ती जा रही हैं उसकी सोचो।

एक लंबी सांस खींचते हुये मां बोली थी...

हाँ, बेटी सो तो है। और फिर तुम्हारे पापा भी तो अब रिटायर होने वाले हैं। बेटी तुम ही पापा से बात चलाना।

और करुणा ने उसी दिन पापा से कहा था...

पापा, अब आप नंदिता के विवाह की बात चलाइये और कहीं अच्छा लड़का मिल जाय तो तय कर डालिए।

पापा करुणा का मुख देखते रह गये थे बड़ी देर तक कुछ नहीं बोले थे। उसने कहा था...

पापा, आप मेरे कारण संकोच कर रहे हैं। मेरी बात छोड़ दीजिए। कॉलेज में पढ़ने में मेरा सारा समय निकल जाता है, मैं बहुत प्रसन्न हूँ। और फिर छुट्टियों में आप सब के पास आती जाती ही रहती हूँ।

पापा सिर झुकाये सोचने लगे थे और कुछ देर बाद उठते हुये बोले थे...

अच्छा बेटी, सोचूँगा।

बड़ी बेटी के हाथ पीले न कर पाने

का दुख पापा को सालाता रहता है और उसके अविवाहित रहते छोटी बहन के विवाह की बात चलाना उनके गले के नीचे नहीं उतर रहा था, किन्तु परिस्थितियों के दबाब के कारण बड़ी बेटी का यह प्रस्ताव उन्हें कहीं भीतर तक भिगो गया यह भली भांति करुणा समझ गई और कदाचित इसी के बाद नंदिता के विवाह की बात चल पड़ी और अब अगले रविवार को उसकी सगाई होने वाली हैं नंदिता का विवाह तय हो जाने से पापा और मां कम से कम अपनी छोटी बेटी की जिम्मेदारी से मुक्त हो सकेंगे।

वह मन ही मन सोचने लगी क्या उसके जीवन में भी खुशियों के फूल खिलेंगे और क्या वह भी किसी को अपना समझ कर उसके रेशमी स्वप्नों में खो पायेंगी? और सहसा उसकी मन की आँखों के आगे अवनीश का चेहरा उभरने लगा और आँखे बंद करके पिछले दो वर्षों की घटी घटनाओं में खो गई।

उस दिन एक पब्लिक लाइब्रेरी में ही अचानक अवनीश मिल गया। कालेज से समय मिलने पर करुणा प्राय: रोज ही वहां चली आया करती थी और अपने रिसर्च के लिये पुस्तकें तथा जर्नल आदि पढ़ा करती थी। उस दिन भी वह अपनी कुर्सी पर बैठी हुई पढ़ने में तल्लीन थी कि अचानक अवनीश आ गया था और उसके सामने रखी हुई शेल्फ में से एक पुस्तक की ओर इशारा करते हुये बोला था...

माफ कीजियेगा... यदि आप वह पुस्तक न पढ़ रही हो तो मुझे दे दीजिए।

उसने आनी आँखें उठाई थी और सामने एक सुन्दर व्यक्ति खड़ा था। थोड़ी देर के लिये वह सकपका गई थी पर फिर अपने को प्रकृतिस्थ करते हुये बोली थी...

हाँ हाँ ले लीजिये। मुझे उसकी आवश्यकता नहीं है।

अवनीश ने आगे झुक कर शेल्फ से वह पुस्तक खींच ली थी और पुस्तक लेकर चुपचाप चला गया था। करुणा कुछ देर तक यू ही चुपचाप उसका जाना देख्ती हुई बैठी रह गई थी। अवनीश के जाने के बाद करुणा ने फिर पढ़ने में ध्यान लगाने की बड़ी चेष्टा की पर मन कहीं और उड़ने लगा था? बार बार उसकी आँखों के सामने अवनीश का चेहरा आ जाता और अकारण उसका ह्रदय तेजी से धड़कने लगता।

पांच छ दिन बाद वह जब फिर उसी लाइब्रेरी में अपनी पढ़ाई में लीन थी तभी अवनीश फिर आया था और हाथ जोड़कर नमस्कार किया और एक कुर्सी खींच कर बैठते हुये बोला था...

क्या आप यहां रोज आती है?

करुणा पहचान गई थी, किन्तु अपरिचय का भाव दिखते हुये बोली थी...

करीब करीब...

अवनीश ने और बात बढ़ाने की चेष्टा की किन्तु उसके मुख का रुखा भाव देखकर चुप रह गया था।

फिर भी वहीं बैठ रह गया था। कुछ देर बाद करुणा ने पूछा था...

क्या आप यहां रोज आते हैं?

अवनीश ने उसको ओर देखा मुस्कराता हुआ बोला...

हाँ, मैं भी करीब करीब रोज आता हूँ। मेरा तो काम ही पढ़ना पढ़ाना है।

उसने पूछा था...

आप कहाँ काम करते हैं?

अब अवनीश ने अपना परिचय देते हुये कहा था...

मैं अवनीश हूँ। यहीं के एक कालेज में रिसर्च फेलो हूँ। और आप...?

वह बोली थी...

मैं करुणा हूँ, यहीं नवोदय विद्यालय में पढ़ाती हूँ।

वह मुस्कुराने लगा और बोला था...

यदि आप को समय हो तो क्या कॉफी पीने चलेंगी?

करुणा का ह्रदय बड़ी तेजी से धड़कने लगा था और उस जाड़े में मौसम में भी कार्डीगन और शाल पहनने के बावजूद भी उसकी हथेलियां कुछ पसीज गई थीं। मन उत्साह से भर गया था, लगा थ जैसे रेगिस्तान की रेतीली जमीन में किसी ने फूल खिला दिये हो। उसे खामोश पाकर अवनीश बोला था...

चलिये ने थोड़ी देर में लौट आयेंगे।

करुणा राजी हो गई थी और कुर्सी खींच कर खड़ी हो गई थी। अवनीश ने उसकी चाल देखते ही पूछा था...

क्या पांव में कुछ तकलीफ है?

वह जैसे किसी पहाड़ी की ऊँचाई से गिर पड़ी थी। उसका चेहरा निर्जीव सा हो गया और वह बोली थी...

नहीं, मेरा एक पांव थोड़ा खराब हैं, मैं ऐसे ही चलती हूँ।

वह बोला था...

आई एम सारी, क्या इसका इलाज नहीं करवाया?

चलते हुये वह बोली थी...

बहुत इलाज करवाया। बचपन में एक आपरेशन हुआ था उसकी के बाद ऐसा हो गया है।

अवनीश और करुणा कॉफी पीते रहे और इस बीच अवनीश की बातों से करुणा को लगा कि वह एक बहुत अच्छा इंसान है और उससे अत्यंत प्रभावित है।

उस दिन अवनीश करुणा को उसके होस्टल तक छोड़ गया था। उसके जाने के बाद वह धम से आकर अपने बिस्तर पर पड़ गई थी और बड़ी देर तक स्वप्नों के संसार में खोई रही थी। कब दोपहर से शाम हो गई उसे पता ही नही चला। रात के बाठ बजे उठकर मुँह हाथ धोया और कपड़े आदि बदल कर बाहर धूमने निकल गई। सड़क पर यूं ही टहलते हुये उसे लग रहा था। जैसे उसका शरीर फूलों की तरह हल्का हो गया है और बहुत देर तक उसे अपने पांव के दोष का अहसास ही नहीं रहा। मन के भीतर बार बार कोई एक गुनगुनी फुहार बिखेर देता और वह काफी देर बाद तरो ताजा होकर हॉस्टल लौट गई।

फिर अचानक वह बीमार पड़ गई। तेज बुखार और बदन में दर्द से तड़पती रही और कई दिन बिस्तर में पड़ी रही। तीन चार दिन बाद हॉस्टल में ही अवनीश का फोन आया और उसने कहा...

क्या हो गया है आपको, आप लाइब्रेरी नहीं आई? तबीयत तो ठीक है?

करुणा का गला भर आया और वह सिसक पड़ी। अवनीश ने कहा था...

अच्छा मैं आधे घंटे में आ रहा हूँ।

सचमुच अवनीश पहुँच गया था और उसे टैक्सी में बिठा कर एक नर्सिंग होम ले गया था। डाक्टर ने कहा था...

इनका बुखार बिगड़ गया है। कुछ टेस्ट करने होंगे, और आब्सर्वेशन में रखना होगा। आप इन्हें यहीं एक दो दिन के लिये भर्ती कर दीजिए।

नर्सिंग होम में करुणा आठ दिन रही और उन आठ दिनों में अवनीश ने उसकी बड़ी ही सेवा की। सुबह सुबह फूल लेकर आ जाता और उसे देते हुये कहता...

यह लीजिए। आपके स्वास्थ्य के लिये।

समय पर नर्स बुलवाकर उसे इंजेक्शन दिलवाना, भोजन आदि कराना सब वही करता था। एक दिन अवनीश बोला था...

अगर आप कहें तो आपके घरवालों को सूचना भेज देता हूँ। आप पता दे दीजिए।

करुणा ने कहा था...

नहीं, नहीं, कोई आवश्यकता नहीं। आप की देखभाल से मैं अब तो ठीक हो रही हूँ।

कुछ देर बाद वह बोली थी...

लेकिन एक बात मुझे खराब लग रही है कि आप को अपना सारा काम छोड़ कर मेरे पीछे यहा दिन रात एक करना पड़ रहा है। मैं भी बड़ी अभागी हूँ यहां न लाये होते तो शायद इस संसार से मुक्त हो...

अवनीश ने उसके होठों पर अपनी उंगलियां रखते हुये कहा था...

ऐसा मत कहिए।

फिर तुरंत अपनी उंगलियों हठा कर वह बाहर चला गया था। बड़ी देर तक करुणा उसकी उंगलियों के हल्के स्पर्श के सिंधु में डूबती उतराती रही और सोचती रही कि यदि सचमुच वह इस नर्सिंग होम में बिना आये हुये मर गई होती तो यह अपूर्व सुख कहा मिलतां

अवनीश बड़ी देर तक नहीं आया। करुणा सोचती रही, शायद अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने के लिये वह बाहर चला गया होगा। जब वह आया तब पास आते हुये बोला...

आज के बाद ऐसी बात अपनी जुबान पर भी मत लाइयेगा।

करुणा की आंखों के कोने आँसुओं से छल छला आये थे पर उसने छिपाते हुये कहा था...

अच्छा नहीं लाऊँगी। पर मुझे आप को माफ करना होगा कि मेरे कारण आप को कष्ट हुआ।

वह बोला...

अपनों के बीच कैसा कष्ट और कैसी माफी?

वह चुपचाप उसके वाक्य की मिठास पी रही थी।

करुणा और अवनीश मिलते रहे औरउन मुलाकातों में तमाम तरह की बातें होती। फिर भी न तो अवनीश आप की सीमा लांघकर तुम तक पहुंचा और न ही करुणा ने अपने मन में पनपते प्यार के ज्वार को कभी व्यक्त

किया। वह तो नन ही मन माने बैठी थी कि अवनीश के मन में उसके प्रति अवश्य एक कोमल भाव है बस न जाने किन कारणों से उसने अभी तक उेस प्रकट नहीं किया था। उसे याद है जब वह बीमारी से उठी थी तब उसने उसके लिए एक उपहार लाकर दिया था और कहा था...

यह मेरी ओर से एक छोटा सा उपहार है। आशा है आप को पसंद आयेगा।

उपहार लेते हुये उसने कहा था...

आपने इतने प्यार से यह उपहार दिया यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है, नहीं तो मुझ जैसी अभागी को कौन इतना मान देता हैं

अवनीश बोला था...

बार बार अपने को अभागी कहकर आप अपने को अपमानित करती ही है मुझे भी ठेस पहुँचाती हैं।

मेरी आपसे विनती है कि फिर कभी अपने को अभागी मत कहिएगा।

अवनीश के जाने के बाद करुणा फूट-फूट कर रो पड़ी थी। मन पुकार पुकार कर रहा था- करुणा, वह तुम्हारा है उसे रोक कर अपने मन की बात बता दो। किन्तु मन के स्वाभिमान ने उसकी जुबान पर ताला लगा दिया था।

अचानक एक दिन अवनीश ने बताया था कि उसके पिता का दिल्ली तबादला हो गया है और वह भी उन्हीं के साथ जा रहा है। वहां जाकर वह किसी अन्य कॉलेज में नौकरी का प्रयास करेगा। चलते समय वह बोला था...

मैं आता रहूँगा। अभी यहां की नौकरी तो है ही। छुट्टी लेकर जा रहा हूँ। अपना ख्याल रखियेगा।

उसकी आंखे भर आई थी और वह बोली थी...

आप भी अपना ख्याल रखियेगा।

चार महीने के बाद वह एक बार वापस आया था और करुणा से बताया था कि उसे वहीं के कालेज में नौकरी मिल गई है और वह यहां की नौकरी छोड़ रहा है। उसने कहा था...

अब फिर कब आना होगा?

वह बोला था...

कोशिश करूँगा, जल्दी आने की।

लेकिन उसके बाद अवनीश आ नही पाया था और उसके मन में तैरते हुये अनेक प्रश्न प्रश्न ही बनकर रह गये थे। वह अपने प्यार की बात अवनीश के सामने कभी भी नहीं व्यक्त कर सकी। वह डरती थी कि कहीं उसके शारीरिक दोष के कारण वह उसे ठुकरा न दे। इसलिये मन की बात मन ही में रह गई

नंदिनी की आवाज से करुणा जैसे स्वप्न से जाग पड़ी और अतीत से निकल कर वर्तमान में आ गई। उठकर घर के अन्य कामों में लग गई।

रात में बिस्तर पर लेटते ही अतीत के इन्द्रजाल ने उसे एक आर फिर लपेट लिया। सोचते सोचते उसकास मन बार बार एक अनिश्चय के कगार पर आकर खड़ा हो

जाता। क्या अवनीश उसे सचमुच प्यार करता है और क्या वह उसे जीवनसंगिनी के रुप में स्वीकार करेगा? एक बार मन का एक कोना कहता कि अवनीश का उसके प्रति प्यार सच्चा है, तभी उसका दूसरा कोना कहता. .. उस जैसी लड़की को पसंद करना उसकी सहायता करना या उसे सहारा देना एक बात है और जीवन भर पत्नी के रूप में साथ ले चलना अन्य बात है। और फिर उसके माता-पिता, उसके परिवार वाले क्या उस जैसी शारीरिक दोष वाली लड़की को अपने घर की बहू बनाना गवारा करेंगे? विचारों की भूलभुलैया में घूमते घूमते वह थक गई और मन ही मन निश्चय किया कि इस बार वह दिल्ली जाकर उससे मिल कर उस संबंध में बात करेगी, और उसके प्रति अवनीश की प्रेभाभिव्यक्ति की प्रतीक्षा किये बिना यह याचिका की भाँति अपने मन की बात उसे बता देगी। उसे आशा है कि उसकी याचना व्यर्थ नहीं जायगी।

जैसे एक बहुत बड़ी गुत्थी सुलझ गई हो ऐसी निश्चितता का भाव लेकर वह सो गई और अगली सुबह तभी उठी जब माँ ने उसे जगाया। माँ कह रही थी।

बेटी आज रविवार है आज ही वह लोग छ बजे तक पहुंच जायेंगे। सभी तैयारी करनी है।

वह उठते हुये बोली...

माँ मैं बस तैयारी होकर आती हूँ।

दिन भर घर की सफाई और सजावट करने में निकल गये। ड्राइंग रुम में नये सोफा कवर, नयी प्रकाश व्यवस्था, डाइनिंग टेबल पर नये मैट्स, प्लेट, ग्लास, चम्मचें आदि। सारा घर जगमग जगमग कर रहा था।

पांच बजे से रिश्तेदार और मेहमान आने लगे। कुछ लोग घर के अंदर के बरामदे मे बैठ गये कुछ ड्राइंग रुम में। करुणा नंदिता को सजाने में लग गई। जरी की नई साड़ी उसी का मैचिंग ब्लाउज बिल्कुल अप्सरा सी लग रही थी नंदिता। करुणा ने उसकी ठोढ़ी छूते हुये कहा...

नंदिता, नजर न लगे। तुम बहुत सुन्दर लग रही हो।

नंदिता बोली...

आप भी तैयार हो जाइये दीदी। समय हो रहा है

करुणा भी तैयार हो गई। एक बार चम्पई रंग की साड़ी पहन कर वह अवनीश के साथ गई थी तब उसने कहा था...

आप पर यह रंग बहुत फबता है।

उसने कहा साड़ी पहन ली, और बाल संवार कर तैयार हो गई। नंदिता ने कहा.

दीदी, वाह क्या बात है? सिम्पली गाजियस।

करुणा के मुख मंडल पर एक गुलाबी आभा क्षणभर के लिये चमकी और फिर मुस्कराते हुये वह किचन में निकल गई।

साढे आठ बजे के घरवाले माता-पिता, बहन, भाई भाभी आदि आ गये। लड़का अलग कार में अपनी दूसरी बहन के साथ आने वाला था। सब ड्राइंग रूम में बैठ गये। लड़के के आने के बाद नंदिता को ड्राइंग रूम में लाया जाना था। इसके लिये करुणा नंदिता के पास ही बैठी रही और उसका मेकअप ठीक करती जा रही थी।

सहसा मां आकर बोली...

लड़का आ गया....। अब थोड़ी देर में नंदिता को ले आना बेटी।

करुणा नंदिता की साड़ी ठीक करते हुये बोली...

नंदिता, घबराना नहीं। जब मेन एक्जाम निकाल लिया तो यह तो सप्लीमेंटरी है।

एक बार मां की फिर पुकार आई...

नंदिता को ले आओ बेटी।

करुणा नंदिता को पकड़कर ले चली। नंदिता का सीना धड़क रहा था। करुणा ने उसे ड्राइंग रूम में भेजते हुये कहा...

नंदिता, तुम्हें कहाँ बैठना है यह तो पता है?

नंदिता बोली

हां, दीदी पता है?

नंदिता भीतर घुसी। तभी करुणा को लगा जैसे कोई भूकम्प आ गया है- धरती नाच रही है और सारा ब्रह्मांड फटने वाला है। सामने अवनीश खड़ा था। इससे पूर्व कि वह आगे बड़ कर पूछती कि वह वहाँ कैसे मां ने करुणा से परिचय कराते हुये कहा...

यही है बेटी, हमारे दामाद। और यह है मेरी बड़ी बेटी करुणा।

करुणा का मुख प्राय: रक्तहीन हो गया था और अवनीश के चेहरे पर खिसियाहट के भाव थे। करुणा चुपचाप ड्राइंग रुम से दौड़ती हुई भीतर आ गई और बाथ रुम में घुस कर अन्दर से दरवाजा बन्द कर लिया। रेत में खिले हुये फूल सचमुच बिखर गये थे।

संपर्क: B-23, यारोज अपार्टमेंट्स, सी-58/5, सेक्टर-62, नोयडा-201301 (उप्र)

...पृष्ठ 9 का शेषांश

अपराधियों के पक्ष में दिए गए उल-जुलूल तर्कों से और अंतत: इसका खामियाजा जनतांत्रिक समाज के शांतिप्रिय लोगों को भुगतना पड़ रहा है। आज छोटे-बड़े राजनीतिक दलों में नेताओं की बाढ़ भले हो, पर उनमें कोई भी प्रांत या देश के नेता के रूप में उभर नहीं पा रहे। जनता से नेताओं की बढ़ती दूरी का ही दुष्परिणाम है राजनीति में अपराधियों के गोबरछत्ते का दिखना।

प्रो. लास्की ने एक जगह लिखा है कि निरंतर जागरूकता ही आजादी की असली कीमत है। यह जागरूकता कहीं जाति या संप्रदाय प्रेम में तब्दिल होकर अपराधियों को ही महिमामंडित न करने लगे। उसके लक्षण दिखने भी लगे हैं। इसे नहीं रोका गया तो आनेवाले दिनों में राजनीतिक दल अप्रासंगिक हो जाएंगे और तब लोकतंत्र की नींव पर अपराधियों का वह पहला जबरदस्त प्रहार होगा। बिहार की अहिंसा एवं करुणा की भूमि पर हिंसा की राजनीतिक फसल को लहलहाने से अब रोकना होगा और इसके लिए यहाँ के बुद्धिजीवियों एवं रचनाकारों को ही पहल करनी होगी। प्रतिरोध के इस सार्थक हस्तक्षेप से जन-जन को जोड़कर उसे व्यापक अभियान में बदलना होगा, अन्यथा हमारी लोकतांत्रिक आजादी जिस तरह से राजनीति के अपराधीकरण के हाथों गिरवी पड़ती जा रही है, उसे मुक्त कराने में किसी अगले राष्ट्रीय स्वातंत्र्य संघर्ष तक वर्षों-वर्षों की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी!

संपर्क: संपादक, 'नई धारा' 1/सी, अशोक नगर, पटना- 20

कहानी

फिरौती

✍ *कृष्ण कुमार राय*

यूं तो सिटी कॉन्वेंट, स्कूल में एक बजे छुट्टी हो जाती थी और डॉ. भटनागर का दस वर्षीय इकलौता बेटा प्रशान्त रोज डेढ़ बजते-बजते स्कूल की बस से घर आ जाता था, लेकिन आज जब दो बजे तक वह नही लोटा तो उसकी, माँ सविता की पेरशानी पर बल पड़ना स्वाभाविक था। पहले उन्होंने स्कूल में फोन मिलाकर दरियाफ्ंत किया तो मालूम हुआ कि बस तो रोज कि तरह अपने समय से बच्चों को लेकर कब की जा चुकी है। सविता ने घबराकर अपनी दाई को आवाज देकर कहा ओ पार्वती, दो बज गये, मुन्ना अभी तक स्कूल से नहीं आया। जरा बढ़कर तिराहे तक चली जाओं और पता करो कि बस आई या नहीं।

घर से करीब सौ गज़ दूर था। वह तिराहा जहां से सुबह बस बच्चे को उठाती थी औरि फर वापसी में वहीं छोड़ती थी। बच्चा वहां से पैदल घर चला आता था। कभी-कभी तो वह पीठ पर लदे भारी-भरकम बस्ते की परवाह किये बिना तिराहे से सरपट भागता हुआ आता था। माँ उसे डॉटती रहती कि सड़क पर दौड़ते हुए न चला करों वराना किसी दिन ठोकर खाकर गिरोगे तो दांत टूट जायेंगे। लेकिन बच्चे भला कब ऐसी हिदायतों पर अमल करने वाले थे। एक कान से माँ की बात सुनता और दूसरे से निकाल देता।

अप्रैल का आखिरी हफ्ता था। घूप अब कड़ी होने लगी थी। पार्वती तेज़ कदम बढ़ाती हुई तिराहे पर पहुंची। गर्मी के चलते सड़क पर आवा-जाही काफी कम हो गई थी। वैसे भी कॉलोनी की यह सड़क बहुत चालू न थ्ज्ञी। इक्का-दुक्का लोग ही आते-जाते दिखलाई पड़े तिराहे के इर्द-गिर्द न तो स्कूल की बस दिखी और ने कोई बच्चा नजर आया। पचासकदम आगे एकपानवाले की गुमटी थी। पार्वती ने वहा तक बढ़कर पता किया तो मालूम हुआ कि बस तो आधे घंटे पहले ही आ चुकी। पानवाला इसे अधिक और कुछ जानकारी नहीं दे सका। पार्वती भागती हुई घर वापस आई और मालकिन को बतलाया। बहू जी, तिराहे पर कोई बच्चा नजर नही आया। आगे बढ़कर पानवाले से पूछा तो उसने बतलाया कि बस तो रोज़ के समय से आकर चली भी गई। बच्चे के बारे में कुछ पता नहीं चला।

पार्वती की बातें सुनकर सविता की घबराहट बढ़ गई। उन्होंने तत्काल पति को फोन लगाया। वह अब तक दवाखाने में बैठे मरीजों को

देखने में व्यस्त थे। डॉक्टर साहब सवेरे नौ बजे भरपूर नाश्ता करके घर से निकलते थे। और तीसरे पहर ढाई-तीन बते से पहले कभी नहीं लौटते थे। फिर शाम को छः बजे दुबारा दवाखाने जाते और सभी मरीजों को निबटाकर ही नौ-दस बे रात तक लौटते थे। यह उनका नित्य का नियम बन चुका था। केवल रविवार या खास तीज-त्योहार के दिन दूसरी पाली में दवाखाना बन्द रखते थे। सविता ने घबराई हुई आवाज में पति को सूचिता किया, सुनयि मुन्ना आज अभी तक स्कूल से नही लौटा। मैंने वहा फोन किया तो चौकीदार ने बतलाया कि बस तो बच्चों को लेकर अपने समय से निकल चुकी है। पार्वती को तिराहे तक भेजा था, लेकिन बच्चा नहीं दिखा। पानवाले ने बतलाया कि बस तो कबकी आ चुकी। बच्चे के बारे में वह भी कुछ जानकारी नहीं दे सका। आप फौरन घर आ जाइये और बच्चे का पता लगाइये। मेरा जी ने जाने क्यों बहुत घबरा रहा है।

डॉ. भटनागर सुनते ही चौंक पड़े। वह घबराकर उठ खड़े हुए और बकीया मरीजों को शाम छः बजे आने की सूचना देकर फौरन अपनी कार से घर के लिये रवाना हो गये। भीतर प्रवेश करते ही उन्होंने एक बार फिर फोन मिलाकर स्कूल में दरियाफ्त किया तो पता चला कि बस तो बच्चों को अपने-अपने ठिकानों पर छोड़कर वापस भी आ चुकी है। डॉ. भटनागर के दिल की धड़कन अचानक तेज हो गई। उन्हें दाल में कुछ काला मालूम पड़ा। खाने-पीने की भी सुविधा न रही। तीन बजने वाला था। उन्होंने सविता से कहा तुम यहां देखती रहो। मैं थाने जाकर अभी रिपोर्ट दर्ज करता हूँ।

इतना कहकर ज्योही डॉक्टर साहब घर से बाहर निकलने के लिये आगे बढ़े कि घर का टेलीफोन घनघना उठा। सविता ने लपककर रिसीवर उठाया। डॉक्टर साहब भी पलभर के कलये जहाँ के तहा ठिठक गये। दसूरी तरफ से आवाज आई आप मिसेज भटनागर बोल रही है क्या?

सविता ने उत्तर दिया, जी हाँ मैं बोल रही हूँ। आपका परिचय?

मैं आवाज पहचानी नहीं।

उधर से जवाब मिला, आपकों मेरी आवाज पहचानने की जरूरत नहीं। इस वक्त आपलोग अपने बेटे के लिये काफी परेशान होंगी। मैंने सिर्फ आपकी परेशानी दूर करने के लिये यह फोन किया है। प्रशान्त मेरे पास सुरक्षित है। ...अभी बस इतना ही।...अगले फोन का इंतजार कीजिये। हां, इतना जरूर नोट कर लीजिये, अगर थाना-पुलिस के चक्कर में पड़ी तो बच्चे से हाथ धोना पड़ेगा...। और अचानक

टेलीफोन कट गया।

सविता के चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगी। फोन का रिसीवर हाथ स छूटकर मेज पर गिर पड़ा। गनीमत थी कि टूटा नही दरवाजे के पास खड़े डॉक्टर साहब ने यह दृश्य देखा तो उल्टे पैरों लौटकर सविता के पास आ गये और घबराकर पूछा क्या बात है सविता? किसका फोन था। तुम क्यों इस बदर घबराई हुई हो?

सविता ने फोन पर जो कुछ सुना था, कांपती हुई आवाज में डॉक्टर साहब को बतालाया। सुनते ही उनके भी होश उड़ गये। चेहरे पर गहरे तनाव की रेखाएं खिंच गई। माथा ठोंकते हुए बोले, महानगरों में इस तरह की वारदातों की खबरे तो आये दिन अखबारों में पढ़ने को मिलती है लेकिन अपना शहर अभी तक बचा हुआ था। लगता है बच्चों को अपहरण करने वाले गिरोह ने अब यहाँ भी पांव पसारना शुरू कर दिया है। मैं सीधे पुलिस कप्तान से मिलने जा रहा हूँ और उन्हें सारी घटना की सूचना देता हूँ। अगर पुलिस फौरन हरकत में आ गई तो संभव है अपराधी जल्दी ही दबोचे लिये जाये। ऐसा लगता है। कि अभी वे इसी शहर में कही छिपे हुए है।

सविता अगर इन बदमाशों की धमकियों से डरकर पुलिस को सूचना देने में देर कर दी तो मुमकिन है। इस बीच वे बच्चे को लेकर शहर से चंपत हो जाये। फिर तो मुश्किलें और बढ़ जायेगी और पुलिसवाले देर के लिये हमलोगों को ही दोषी ठहरावेंगे। मेरी तो राय है कि विलम्ब करना ठीक नहीं फौरन पुलिस कप्तान से मिलकर सबकुछ बतला देना चाहिये। मैं जाता हूँ।, तुम घर देखती रहों।

सविता बार-बार पति को रोकती रही। लेकिन वह नहीं माने और घर से निकल पडे। उनके जाने के आधे घंटे बाद फिर टेलीफोन की घंटी बजी सविता ने सशंकित मन से रिसीवर उठाकर हलो कहा ही था कि उधर से फिर वही आवाज सुनाई पड़ी। आप मिसेज भटनागर बोल रही है?

जी हां आपने पहले भी फोन किया था लेकिन अपना परिचय नहीं दिया। बीच में ही फोन काट गया था। कहिये बच्चे के बारे में कोई नई खबर है क्या?

दूसरी तरफ से आवाज आई, खबर तो वही पुरानी है, बच्चा यहा आराम से बैठा है उसे भोजन करा दिया गया है। आप अपने पति को बतला दीजिये कि अगर उसकी सकुशल वापसी चाहते हैं तो चुपचाप पांच लाख रूपये की नकद राशि एक बीफ-केस में रखकर आज रात दस बजे तक विजयगढ़ रोड पर रेलवे क्रांसिग से ठीक पहले वाली पुलिया के नीचे रखवा दें। उसके बाद आपका बच्चा कल सूर्योदय के साथ आपके घर सही-सलामत घर पहुच जायेगा। हां एक बार फिर सुनते सचेत कर रहा हूँ। कि नगर के हर नाके पर हमारे मुखबिरों का जाल बिछा हुआ है। अगर किसी तीसरे आदमी के कान में यह बात पड़ी तो आपकों सिर्फ बच्चे का कलम

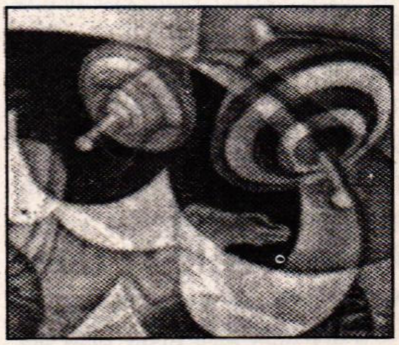

किया हुआ सिर हाथ लगेगा धड़ के लिये भारी कीतम चुकानी पड़ेगी। बस...और फिर अचानक टेलीफोन कट गया।

सुनते ही सविता मूर्च्छित होकर जमीन चूमने लगी। पार्वती उनकी तरफ दोडी और उन्हें उठाकर पलग पर लिटा दिया। उसे कुछ समझ में नही आया कि इस स्थिति में क्या करे। सविता को बेहोशी की हालत में छोड़कर कही हट भी नहीं सकती थी और डॉक्टर साहब के बारे में उसे सही जानकारी न थी कि इस समय हैं कहाँ असमंजस की स्थिति में खड़ी वह सविता को पंखा झलने लगी। उसी समय अचानक टेलीफोन की घंटी फिर घनघनाई पार्वती ने सहमते हुए रिसीवर उठाया। उधर से डॉक्टर साहब की आवाज आई कौन पार्वती! फोन सविता को दो।

बाबू जी वह तो बहोश पड़ी हैं। अभी जरा देर पहले किसी का फोन आया था। सुनते ही मूर्च्छित हो गिर पड़ी। मैंने उठाकर उन्हें पलंग पर लिटा दिया हैं इस हालत में उन्हें छोड़कर कहीं हट भी नहीं सकती। आप फौरन घर आ जाइये।

डॉक्टर साहब बच्चे की तलाश में इधर-उधर चक्कर काट रहे थे। पार्वती की बात सुनकर इतना घबरा गये कि फौरन गाड़ी घर की तरफ मोड़ दी। पन्द्रह मिनट के अंदर वह घर आ पहुंचे। उन्होंने लपककर सविता की नब्ज़ टटोली और सीने पर आला लगाया। दिल की धड़कन बड़ी हुई थी। वह समझ गये कि किसी बुरी खबर के सदमें से वह बेहोश हो गई है। उन्होंने तुरन्त उपचार शुरू कर दिया। गनीमत थी कि थोड़ी ही देर में सविता की चेतना लौट आयी, किन्तु दहशत की छाया अभी तक उनके चेहरे पर ससाफ झलक रही थी। सामने डॉक्टर को बैठा देखकर उन्हें कुछ ढाड़स बंधा। डरते-डरते उन्होंने फोन पर सुनी बातें पति को बतलाई। सुनकर डॉक्टर साहब का चेहरा फक पड़ गया। पहली बार फोन पर मिली सूचना के बारे में वह पुलिस कप्तान से मिलकर सब कुछ बतला चुके थे और उन्होंने फोन पर सुनी बातें पति को बतलाई। सुनकर डॉक्टर साहब का चेहरा फक पड़ गया। सबकुछ बतला चुके थे और उन्होंने बच्चे को जलदी ढूँढ़ निकालने का आश्वासन देते हुए त्वरित कार्यवाही भी आरम्भ कर दी थी। अपहरणकर्ताओं की तलाश के लिये उन्होंने वायरलेस सेट से लैस पुलिस का विशेष उड़ाका दस्ता रवाना कर दिया थ। डाक्टर साहब को उनहोंने यह निर्देश भी दिया था कि आगे के घटनाक्रम की सूचना बराबर देते रहे ताकि अपने उड़ाका दस्ते को वह उचित निर्देश दे सकें। अत: डॉक्टर साहब ने और विलम्ब करना ठीक न समझा। सविता को साथ लेकर वह फिर कॉल के बारे में चन्द सवाल पूछे और फिरकुछ विचार करने के बाद डाक्अर साहब से बोले, देखिये आगे की कार्यवाही में बड़ी सावधानी और सीक्रेसी बरतनी होगी। ऐसा कीजिये कि आप एक

ब्रीफ-केस में दो-चार पुरानी किताबें एक कपड़े में लपेटकर रखिये और उसे लॉक करके अपने किसी विश्वासपात्र आदमी के हाथ रात दस बजे से पहले निर्दिष्ट स्थान पर रखवा दीजिये। मैं अपराधियों को मानसिकता अच्छी तरह जानता हूँ। मेरा विश्वास है कि उस समय मौके पर कोई आदमी नजर नही आवेगा। घंटे-दो-घंटे बाद ही अपहर्ता या उनका कोई साथी ब्रीफ-केस की टोह में पुलिया के पास जाएगा। हमारे जवान कई तरफ से घात लगाकर इधर-उधर छिपे रहेंगे और पुलिया पर कड़ी नजर रखेंगे। ये सभी जवान छापामारी का विशेष प्रतिक्षण प्राप्त करये हुए है। रात में ज्योही कोई व्यक्ति पुलिया के तरफ बढ़ता दिखलाई पड़ेगा। जवान उस पर कहर बनकर टूट पडेंगे और धर दबोचेंगे। फिर तो उसके साथ उनके छिपने के ठौर-ठिकानें की पूरी जानकारी उगलवाने में देर न अपराधियो को गिरफ्तार करने और बच्चे को उनके चंगुल से मुक्त कराने में कामयाब हो जाएगा। हां, इतना जरूर ध्यान रखना होगा। कि जो व्यक्ति इस काम के लिये तैनात किया जाए वह पूरी तरह विश्वसनीय हो और किसी दूसरे आदमी को योजना की भनक भी न लगने पावे। आप जाकर इतना काम कराइये, इस बीच मैं उड़ाका दल को वायरलेस से आवश्यक निर्देश देता हूँ।

घर लौटने के बाद डॉक्टर साहब काफी देर तक पत्नी के साथ गुप-चुप राय-मशवरा करते रहे। काम को अंजाम देने के लिये दोनों की ने अपने पुराने हेड कंपाउन्डर राधेश्याम को सब से उपयुक्त व्यक्ति समझा। अत: फोन करके उन्हें जल्दी घर आ जाने को कहा गया। इस बीच डॉक्टर साहब ने कप्तान साहब के निर्देशानुसार एक ब्रीफ-केस में दो-चार पुरानी किताबें एक कपड़ें मे लपेटकर रखीं। और ब्रीफ-केस को लॉक कर दिया। चाभी एक धागे में बांधकर हैंडिल लटका दी गई। कंपाउन्डर राधेश्याम भी थोड़ी देर में घर आ गये। उन्हें सारी योजना अच्छी तरह समझाई गई और उसे पूरी तरह गोपनीय रखने की सख्त हिदायत की गई। राधेश्याम को साथ लेकर डॉक्टर साहब को नौ बजे निकलना था। जाते-जाते उन्होंने सविता को अच्छी तरह समझाया कि वह दरवाजा अंदर से बन्द करके पार्वती के साथ भीतर ही रहें। फिर उन्होंने गाड़ी निकाली और राधेश्याम को साथ लेकर विजयगढ़ रोड पर नगर के बाहरी छोर तक गये। वहां से लगभग आधा किलोमीटर आगे स्थित थी रेलवे क्रांसिग से पहले वाली पुलिया। कम्पाउण्डर को ब्रीफ केस के साथ वहां तक पैदल जाना था। डॉक्टर साहब रेलवे क्रासिंग से थोड़ा आगे बढ़ने पर बीहड़ और जंगल शुरू हो जाता था। असुरक्षित क्षेत्र होने के कारण रात को उस तरफ गमनागमन बिल्कुल बन्द हो जाता था फिर भी राधेश्याम ने कड़ी दिलेरी और सूझबूझ का परिचय देते हुए ब्रीफ-केस ले जाकर योजनानुसार पुलिया के नीचे रख दिया। कप्तान साहब का अनुमान बिल्कुल सही निकला। मौके पर उस समय कोई व्यक्ति नजर नहीं आया। करीब पौन घंटे के अंदर राधेश्याम विजयी मुद्रां में लौटकर डॉक्टर साहब के पास वापस आ गये। डॉक्टर साहब ने उनकी पीठ थपथपायी और फिर दोनों व्यक्ति गाड़ी से सीधे कप्तान साहब के बंगले पर पहूँचे। कप्तान साहब अभी तक अपने आफिस में मुस्तैद बैठे हुए थे। योजनानुसार ब्रीफ केस निर्दिष्ट स्थान पर रखे जाने की सूचना उन्हें दे दी गई।

कप्तान साहब बोले, डॉक्टर साहब अब चाहें तो घर लौट जाइये या फिर थाने पर जाकर बैठिये और वहीं इंतजार कीजिये। आगे की कार्यवाही की सूचना आपको वहीं मिलती रहेंगी।

डॉक्टर साहब की जान इस समय बेटे पर टंगी हुई थी। आगे की हर पल की प्रगति जानने के लिये वह बेचैन थे। घर वापस जाने के बदले उन्होंने थाने पर ही बैठकर इंतजार करना बेहतर समझा। बाहर निकलकर उन्होनें सविता को फोन पर बतलाया, देखो काम का पहला चरण बिना किसी बाधा के पूरा हो गया है। अब मैं राधेश्याम को साथ्ल लेकर थाने जा रहा हूँ, वहीं बैठकर इंतजार करूंगा। कामयाबी मिलते ही फौरन सूचति करूंगा। तबतक तुम लोग घर के अंदर ही रहना। कोई अनजान व्यक्ति बुलावे भी तो दरवाजा हरगिज न खोलना और मुझे फौरन सूचित करना। सविता को इतनी हिदायत देने के बाद वह राधेश्याम के साथ्ल थाने के लिये रवाना हो गये।

थाने पर बैठे-बैठे इंतजार करते रात के ढाई बज गये, किन्तु इस बीच वहां केवल इतनी सूचना प्राप्त हुई कि अबतक कोई व्यक्ति पुतिलया की तरफ जाता नजर नहीं आया। ज्यों-त्यों रात गुजर रही थी। डॉक्टर साहब की चिन्ता और बेचैनी बढ़ती जा रही थी। थाने के दीवान और उसके साथी सिपाही सभी परेशान थें डॉक्टर साहब बीच-बीच में चाय-समोसे और बिस्कूट मंगवाकर उनकी आव-भगत करते रहे ताकि उनकी सक्रियता बनी रहे। उनके हलक के नीचे तो चिन्ता के मारे-चाय की घूंट भी नहीं उतर रही थी। इस बीच उन्होंने दो बार घर भी टेलीफोन मिलाकर सरिता से वात की। वह बेहद घबराई हुई थी। बच्चे के बारे में वहां भ्ज्ञी कोई टेलीफोन संदेश फिर नहीं आया था। गर्मियों की छोटी-रात समाप्त होने में अब ज्यादा देर नही रह गई थी। पांच बजते-बजते तो उजाला हो जाता था जाहिर था कि सूर्योदय के साथ ही कामयाबी मिलने की रही सही उम्मीदों पर भी पानी फिर जायगा और सकंट और गहरा हो जायेगा।

आखिर वही हुआ। सारी रात बीत गई और मुर्गो की बांग सुनाई पड़ने लगी, किन्तु पुलिस के उड़ाका दस्ते को कोई व्यक्ति पुलिया के इर्द-गिर्द फटकता नजर नहीं आया। उनकी रात भर की कवायद बेकार साबित होती दिखने लगी। सवेरा होने पर जब सड़क पर लोगों की आवा-जाही शुरू हो गई तो दूर घात लगाकर छिपे पुलिस के जवान स्वंय मौके पर गये। देखा तो ब्रीफ-केस ज्यों का त्यों यथास्थान पड़ा हुआ था। उन्होंने वायरलेस से पुलिस कप्तान को इसकी सूचना दी तो उनका आदेश हुआ कि ब्रीफ-केस लेकर पुलिस पार्टी थाने पर वापस आ जाय, आगे की कार्यवाही के बारे में वही बताया जाएगा। इस बीच कप्तान साहब ने अधीनस्थ अधिकारियों को यह निर्देश दिया कि शहर के बाहर जाने के सभी रास्तों की नाकेबन्दी करा दी जाए और पडोसी जिलों की पुलिस को वायरलेस

से घटना की सूचना देकर सचेत कर दिया जाए ताकि वे भी अपने-अपने अधिकार क्षेत्र में आने वाले प्रवेश मार्गो पर सतर्क दृष्टि रख सकें।

ज्योंही डॉक्टर भटनागर को इस सारी कार्यवाही की सूचना थानाकर्मियों से मिली उनके चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगी। उन्होंने घबराकर सरिता को फोन मिलाकर कहा, सरिता सारी रात थाने पर बैठे गुजर गई लेकिन अब तक कोई कामयाबी नहीं मिली। अब तो सवेरा हो गया फिलहाल मैं राधेश्याम के साथ पंद्रह मिनट में घर पहुंच रहा हूँ। आकर विस्तार से बातें करूंगा।

पति की हताश भरी बातें सुनकर सरिता की उद्विगन्ता और बढ़ गई घोर तनाव से उसका माथा ठनकने लगा। विकल होकर पार्वती का हाथ थामें सदरी दरवाजे के पास पहुंची। सोचा कि किवाड़ खोलकर वही बरामदे में पति की प्रतीक्षा करें, किन्तु जैसे ही कपाट खोला सामने बेटे का स्कूल बैंग पड़ा देखकर चौंक पड़ी। पल भर के लिये किसी अनिष्ट की आंशका से उनका ह्वदय कांप उठा। डरते-डरते बस्ते की तरफ बढ़ीं तो देखा कि पास में ही एक पत्र भी पड़ा हुआ है। अचानक मन में एक बास जगी। सोचा शायद बेटे का ही कोई संदेश हो। कुतूहलवश पत्र उठा लिया किन्तु उसमें ने कोई संबोधन था और न लिखनेवाले का नाम पता। केवल आठ-दस सतरों की सीधी-सादी इबारत लिखी हुई थी। घबराकर वह जल्दी-जल्दी उसे पढ़ने लगी।

आप लोगों को बेटा नहीं दौलत प्यारी है उसे संजाकर तिजोरी में बन्द रखिये। आप लोगों ने हमारी बार-बार की चेतावनी को नजरअंदाज करके पुलिस पर ज्यादा भरोसा किया, लेकिन वे न आपका कुछ भल कर सके और न हमारा बाल बांका। आप लोगों की पल-पल की गतिविधियों की सूचना हमें मुखबिरों से मिल रही थी। अपनी नादानी का नतीजा अब आप अपनी आंखों से अपने ही लाड़ले का बस्ता खोलकर देखिये। बच्चे की वापसी के लिये हमको भले ही कोई फिरौती न मिली हो, लेकिन अपना वादा निभाते हुए हम बेहद दु:खी मन से आपलोंगों के अंतिम दर्शन के लिये लौआ रहे हैं। रक्त-तिलक से मंडित उस मासूम का शीश...

पत्र समाप्त करने से पहले ही सरिता को मानो हजारों वोल्ट के विद्युत करेंट का प्राणघातक झटका लगा। पत्र हाथ से छूट कर नीचे गिरा और वह पछाड़ खाकर घड़ाम से औंधे मुंह बेटे के बस्ते पर धराशायी हो गई। पास खड़ी पार्वती कुछ समझ न सकी कि अचानक यह क्या हो गया। उसने तुरन्त झुककर बहु जी के औंधे शरीर को सीधा किया और उनका सिर अपनी जांधों पर टिकाकर आंचल से हवा करने लगी, किन्तु शरीर तो बिलकुल निस्पंद था। उसी समय डॉक्टर साहब की गाड़ी आकर दरवाजे पर रूकी। थाने पर बैठे-बैठे आंखों में ही सारी रात गुजार चुके पस्त-हिम्मत डॉक्टर ने गाडी से उतरकर बरामदे मे कदम रखते ही जब यह नई विपदा सामने देखी तो उनका प्राण सूख गया। घबराकर पार्वती से पूछा। बहू जी को क्या हो गया पार्वती?

पार्वती ने जमीन पर गिरा कागज उठाकर उन्हें दिखाते हुए कहा, इसी को पढ़ते-पढ़ते अभी जरा देर पहले बहू जी धड़ाम सये गिर पड़ी।

डॉक्टर साहब ने फौरन सविता की नब्ज पर उंगली लगाई किन्तु कोई स्पंदन नहीं। आखें बन्द और सांसो की डोर टूटी हुई कलोने पर हाथ रखकर देखा तो ह्वदय की धड़कन भी यक चुकी थी। अचानक जोर से छाती पीटते हुए वह चिल्ला पड़े। हाय, यह क्या अनर्थ हो गया।

डॉक्टर की अश्रु-पूरित बेचैन निगाहें एक तरफ तेजी के साथ उस जानलेवा पत्र की पक्तियों पर दौडने लगी। और दूसरी तरफ उनकी आंखों से निरन्तर चू रही आंसुओं की बूंदे खत की इबारत को धोकर मिटा देना चाहती थीं।

(कहानीकार मुंशी प्रेमचंद के भतीजे हैं)

संपर्क: एस 2/51ए, अर्दली बाजार, अधिकारी हॉस्टल के समीप, वाराणसी-221002

रचनाकारों से

(१) रचना भेजने के लिए कोई शर्त नहीं है, सभी रचनाकारों का हम हार्दिक स्वागत करते हैं। उदीयमान रचनाकारों को विशेष रूप से प्रोत्साहित किए जाने का प्रयास रहेगा।
(२) राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित तथा वैचारिक रचनाओं को प्राथमिकता दी जाएगी।
(३) रचना एक तरफ/कम्प्यूटर पर कम्पोज्ड अथवा सुवाच्य स्पष्ट लिखी होनी चाहिए।
(४) रचना के अंत में उसके मौलिक अप्रकाशित व अप्रसारित होने के प्रमाण पत्र के साथ रचनाकार का नाम व पूरा पता अवश्य लिखा होना चाहिए।
(५) रचना के साथ पासपोर्ट/स्टाम्प आकार की श्वेत एवं श्याम तस्वीर की दो प्रतियाँ अवश्य संलग्न करें।
(६) प्रकाशित रचनाएँ वापस नहीं की जाती, कृपया उसकी प्रति अवश्य रख लें।
(७) प्रकाशित रचनाओं पर फिलहाल पारिश्रमिक देने की कोई व्यवस्था नहीं है, हाँ, रचना प्रकाशित होने पर अंक की प्रति अवश्य भेजी जाएगी।
(८) किसी भी विधा की गद्य रचनाएं १५०० शब्दों अथवा दो पृष्ठों की मर्यादा में ही स्वीकार्य होंगी।
(९) समीक्षार्थ पुस्तक की दो प्रतियां भेजना आवश्यक है।
(१०) रचनाएं कम्प्यूटर पर कम्पोज्ड कराकर उसे इन्टरनेट पर भेजें जिसका E-mail - vichardrishti@hotmail.com

सिद्धेश्वर
सम्पादक, विचार दृष्टि दृष्टि ६, विचार बिहार,
यू-२०७, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-९२,
दूरभाष: (०११) २२५३०६५२

कहानी

लहरों के चोर

सुनीता जाजोदिया

पहले से टूटी उँगली तो ठीक नहीं हुई दूसरी और तोड़ लाए। जब सलीक नहीं है तो क्यो चलेजाते हो जन-सेवा करने? बड़बड़ाते हुए सुनंदा बर्फ के टुकड़े को विपुल के बाएँ हाथ की तर्जनी पर रगड़ने लगी। अभी पिछले महीने ही क्रिकेट खेलते वक्त वह अपनी उंगली घायल कर बैठा था।

आज पक्षियों के जागने से पहले, जब सारा शहर भयावह स्वप्न के साथ नींद के आगोश में था, विपुल और उसके साथी मिलकर गाड़ी में 500 चादरें, नए-पुराने कपड़ों की गठरियों, बिस्किअ, नमकीन मिल्क पाउडर, अन्य खाद्य सामग्री व आवश्यक दवाइयों के कार्टन गाड़ी में चढ़ा रहे थे। जब सूर्च की पहली किरणें समुद्र से अठखेलियों करने लगी तब वे निकल पड़े थे। गांव के सरकारी स्कूलों में बने राहत-शिविर की ओर ताकि वहां ठहरे सुनामी के प्रकोप से प्रभावित लोगों तक अपनी संवेदना पहुंचा सके। जरूरतमदों तक आवश्यक वस्तु पहुँचाने के लिए वे बेताव हो रहे थे।

गाड़ी के रूकते ही बदहाल आसन्न आपदा से क्लांत लोग अपनी जगह पर सहमे हुए बैठ गए। अन्य लोगों की भीड़ ने गाड़ी को घेर लिया था। अच्छी कद काठी, शरीर से ह्वष्ट-पुष्ट, काला रंग, कलक लगी चमकदार सफेद सूती शर्ट और धोती अथवा पैंट पहने शैबीली मुखाकृति वाले तीन-चार युवक, विपुल और उसके साथियों के नजदीक आए और बात-चीत करने लगे। उनलोगों ने गाड़ी के अंदर क्या और कितनी राहत सामग्री है। पूछताछ की और नेतानुमा व्यक्ति ने कहा, साब यहां बहुत जान-माल का नुकसान हुआ है। ऐसी तबाही पहले नहीं देखी। समुद्र-तट पर बसी बस्तियां तो सागर में ही बह गई, कितुं समुद्र के उफान से सड़क पार इस तरफ बसे हमारे गांवो में भी घर के अंदर पानी आ गया। मछुआरे बस्ती के 500 और इस तरफ वाले 200 लोग प्रभावित है। सांब सब सड़क पर आ जाए। सब कुछ बह गया। आपको हम सबकी मदद करनी होगी।

देखो भाई यह सामग्री उन तक पहुंचानी है। जिन्हें इसकी सख्त जरूरत हैं इस समुद्री प्रकोपव ने जिनका सहारा छीन लिया, आओ हम उनहें सहारा दे और तुम भी इसके वितरण में सहायक बनकर इस नेक काम मे हमारा साथ दो विपुल ने उस भाईनुमा व्यक्ति को समझाते हुए कहाँ

अरे कहा न, तुम्हें पहले हम सबको यह सामान देना होगा, नहीं तो तुम यहां से एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकते, समझे। ज्यादा बक-बक की तो जान निकाल देगा तुम्हारी। सीधे-सीधे गाड़ी खाली करो और चलते बनो। हम बांट देगा उनको, आया समझ में। हुंह चले आते हैं निस्वार्थ सेवा करने। पार्टी के एक कार्यकर्त्ता ने धुड़कते हुए कहा, जिसकी शर्ट की जेब में टंगे मंहगे पेन और उंगली में पड़ी सोने की मोटी अंगूठी पर पार्टी के अध्यक्ष की तस्वीर अंकित थी जिसका वक वफादार सेवक था।

तेज आवाजों को सुनकर अप्रिय स्थिति पैदा होने की संभावना देख बेबस प्रभावित लोग ठिठककर पीछे हट गए। वे सूनी नजरों से आकाश को ताकने लगे।

भाईनुमा व्यक्ति के इशारे पर कुछ कार्यकर्त्ता गाड़ी की ओर झपट कपड़े और भोजन-सामग्री उतारने लगे। विपुल ने उन्हें रोकना चाहा तो उसके हाथ को दरवाजे की ओर जोर से झटक दिया गया। इस अफरा-तफरी में दरवाजा अचानक जोर से बंद हो गया। ओर उसकी उंगली में असहनीय दर्द की लहरें उठने लगी। किसी प्रकार विपुल और उसके साथी वहां से बच निकल भागे। शहर की ओर लौटते हुए छोटे-छोटे समूहों में और इधर-उधर बिखरे त्रस्त लोगों को उन्होंने बची-खुची सामग्री पहुंचाई और शाम के धुंधल के में घर लौट आए।

तभी कालवेज बजी दरवाजे पर नौकरानी कमला खडी थी। पूरे दिन काम से गायब रहने और अब इस समय देरी से आने के लिए सुनंदा ने उसे डाटा तो वह रोनी सी सूरत बनाकर अपनी सफाई में कहने लगी क्या करूं आम्मा रात भर नींद नही आई लोग घडी घडी में चिल्लाते रहे- भागों भागों समुद्र का पानी आ रहा हैं दिन भर बच्चों को सीने से लगाए रही और घर की चीजों की निगरानी करती रही। सुनंदा ने उसके झूठ को पकड़ते हुए कहाँ किन्तु तुम्हारी भाभी तो कह रही थी कि कलेक्टर आफिस की लाइन में... हां हां अम्मा सकपकाते हुए कमला ने कहा, वो क्या हुआ न सरकारी सुनामी पीड़ितो का नाम लिख रहे थे। सहायता मिलेगा उनको सरकार से और 5000 रू नकद भी। उन्हें एक एक कूपन वो क्या कहते है। कार्ड, पहचान का कार्ड दे रहे थे उधर ही सुबह से लाइन में खडी थी। वा क्या है मुहल्ले का सभी लोग जाता था, हम भी चला गया, क्या है न मेरे घर के अंदर भी पानी आ गया ओरसब सामान बह गया... नहीं, खराब हो गया... इसीलिए अम्मा...

सुनामी पीड़ितों को राहत सामग्री पहुंचाकर उनको हिम्मत बंधाकर वे उनके जीवन में उमंग की लहरे लाना चाहते थे किंतु कमला और भाईनुमा नेता द्वारा उंग की वे लहरे उन तक पहुंचने से पहले ही धड़ल्ले से चुराई जा रही है।, विपुल बड़बडाया। सुनंदा भी विद्रूपता से मुस्कुराते हुए कमला को घूरने लगी।

संपर्क: द्वारा मंगल ज्योति,
86, एम.सी. रोड, चेन्नै - 600021
फोन- 25913847

●

शुभकामनाओं के साथ–

मसौढ़ी सर्विस स्टेशन

मसौढ़ी, पटना

सादा एवं स्पीड पेट्रोल, डिजल, तथा मोबिल के एकमात्र विश्वसनीय विक्रेता

मिलावट रहित
पक्के माप की गारंटी

प्रो० शैलेन्द्र कुमार

प्रेमचंद के कथा-साहित्य में आम आदमी

✍ प्रो०(डॉ.) लखन लाल सिंह 'आरोही'

आज जब आम आदमी रराजनीति और सत्ता के केन्द्र न रहकर हासिल पर चला गया है। तब ऐसी स्थिति में प्रेमचंद का समरण होना अत्यन्त प्रासंगिक है हिंदी कथा साहित्य में प्रेम-चंद का उदय आम आदमी के सरोकार के साथ होता हैं ध्यातव्य है कि हिंदी कथा साहित्य में आधुनिकता का प्रवेश प्रेमचंद्र की रचनाओं से होता है और इस आधुनिकता की पहचान उनके साहित्य में आम आदमी की उपस्थिति से होती है। हिंदी कथा साहित्य में यह आधुनिक दृष्टि पहली बार दिखाई पडती है जो रचनातमकता को नया तेवर देती हैं

यह आम आदमी प्रेम चंद के पूर्व हिंदी कथा साहित्य में अनुपस्थित है जिसके कारण वह साहित्य जीवन की आलोचना नहीं हैं आम आदमी किसी भी देश और समाज का विशाल अंश ही नहीं बल्कि सामजिक संरचना का मुख्य आधार भी हैं ऐस महत्वपूर्ण अंश की उपेक्षा कर आधुनिक और जीवत साहित्य की रचना कभी संभव नहीं हो सकती हिंदी कथा साहित्य जो आम जीवन से कटा हुआ था, प्रेमचंद ने उसे अंगुली पकड़कर आम आदमी से जोड़ दिया। उनके इस ऐतिहासिक एवं युगानत कारी कदम से हिंदी कथा साहित्य का फलक अत्यन्त विराट हो गया जो पहले अत्यन्त संकीर्ण था। हिंदी कथा साहित्य में आम आदमी की उपस्थिति ने अछुते परिदृश्यों, चरित्रों की विविधता एवं नयी संवदेनाओं के चित्रण एवं अभिव्यक्ति के लिए बंद कार खोल दिया। प्रेमचंद के कथा साहित्य ने हिंदी कथा साहित्य को नवजीवन की उस्मा, स्पन्दन और ताजगी से भर दिया। वस्तुत: आम आदमी पर केन्द्रित प्रेमचंद का कथा साहित्य रूट एवं पड तत्कालीन हिंदी कथा साहित्य में ताजा हवा का झोंका बनकर आया और उसने हिंदी कथा साहित्य की दशा और दिशा ही बदल दी। प्रेमचंद के समकालीन समाज में व्यापक सामाजिक सरोकारों के प्रति उदासीनता का वातावरण था। आम आदमी समाज और साहित्य की चिंताओं के दायरे से बाहर था। यह सामाजिक और सांस्कृतिक संवेदनहीनता का एक भयावह आदमी को अपना मुख्य सरोकार बनाया और अपने कथा साहित्य में प्रतिपाद्य बनाया। हिंदी कथा साहित्य में हम पहली बार आम आदमी के यथार्थ गरीबी बेरोजगारी शोषण, दमन, अशिक्षा, छुआछुत, अंधविश्वास दर्द चित्रित पाते हैं प्रेमचंद पाठकों को पहली बार साहत्य के वर्जित क्षेत्र में ले

जाते है। और अपने साहित्य के नए आस्वाद से उन्हें संवेदित कर उनके अन्त: करण के आयतन को विस्तृत करते हैं आखिर हिंदी कथा जगत में चौंकाने वाली इस घटना का कारण क्या था? लेखक का संवेदनातंत्र उसके परिवेश का परिणाम होता है। परिवेश से अर्जित-निर्मित संवदेना लेखक के व्यक्ति का अभिनन अंग बनकर उसकी रचनात्मकता को प्रभावित-प्रेरित करती है। प्रेम चंद बनारस के पास जिस लमही गांव के निवासी थे- वह गांव एंव आस-पास का क्षेत्र समाज के गरीबों और पिछड़ों-दलितों का था। प्रेमचंद ने निकट से उनकी गरीबी, भूख, तकलीफ, शोषण-दमन, घृणा-अपमान को देखा था और उनका संवेदन शील ह्रदय उससे प्रभावित हुआ था। प्रेमचंद का आरंभिक एवं अधिकांश जीवन इनही अभिशप्त लोगों के बीच व्यतीत हुआ था। आदमी की चेतना और संवदेना का निर्माण और विकास उसके व्यक्तित्व और परिवेश के द्वन्द का परिणाम होता है और प्रेमचंद इसके अपवाद नहीं है। प्रेमचंद का परिवेश देहात और उसके आम लोग हैं जो गरीब और शोषित है। आचार्य पंडित राम चंद शुक्ल ने जिस चित्तवृत्ति द्वारा साहित्य निर्माण की बात अपने हिंदी साहित्य के इतिहास मे कही है, प्रेमचंद की उस चित्तवृत्ति का निर्माण अपने गांव समाज के इसी आम आदमी के बीच ही हुआ था। प्रेमचंद के कथा साहित्य में जो सम्पेषणीयता, प्रीविष्णुता औरसजीवता अनुभूत होती है। उसका कारण यह है कि उनके कथा साहित्य के प्राय: सोर पात्र उनके गांव लमही और बनारस के बास पास के हैं जिन्हें लेखक ने अपने शिल्प एवं कलपना का स्पर्श देकर पाठकों के सम्मु प्रस्तुत किया है। आम आदमी की पीड़ा में अपने ह्रदय को लीनकर संवदेना सम्राट प्रेमचंद ने जिन कथा साहित्य की रचना की हैं वह रूस के गोर्की की तरह हिंदी साहित्य की कालजयी कथा कृतियां हैं

प्रेमचंद ने आम आदमी की पीड़ा एवं उनकी समस्याओं को मार्मिक अभियुक्ति देने के लिए उपन्यास एवं कहानी विद्या का माध्यम अपनाया है। उनके सभी उपन्यासों में आम आदमी उपस्थित उपन्यास विद्या एवं शिल्प के आग्रह के कारण है। प्रेम चंद आम आदमी के कथा शिल्पी थे- शोषक वर्गो के नहीं इसलिए आम आदमी के जीवन और उसके चारीत्रिक वैशिष्ट्य को चित्रित करना ही उनका अभीष्ट था परिणमत: इनकी कथा भूमि देहात हैं शहर नहीं इनके उपन्यासों में नगर कथा मुख्य कथा भूमि का अंग बनकर आई है। और उसके पात्र प्रेमचंद के नारी विषयक, प्रेम विषयक और देश सेवा विषयक आदर्श के प्रतिपादन के लिए उपन्यासों में प्रस्तुत किए गए हैं।

प्रेमचन्द के उपन्यास लेखन की यात्रा सेवा सदन से आरंभ होती है। सेवा सदन के बाद उन्होंने प्रेमाश्रय रंगभूमि, काया कल्प, निर्माता, गबन, कर्मभूमि और गोदान लिखा है। गोदान लेखक का अंतिम उपन्यास हैं जो महाकाव्यत्मक है। प्रेमचंद ने इन उपन्यासों में आम आदमी के तात्कालीन जीवन और समस्याओं-पराधीनता जमीदारी, पूंजीपतियों और सरकारी कर्मचारियों द्वार किसानों मजदूरों का शोषण, निर्धनता, अशिक्षा, अंधविश्वास, दहेज की कुप्रथा घर और समाज में नारी की स्थिति वेश्याओं की जिन्दगी,वृद्ध विवाह, विधवा-समस्या, साम्प्रादायिक वैमनस्य, छुआछुत, को ही अपने लेखन का विषय बनाया है। सेवा सदन उपन्यास में प्रेमचंद ने मुख्यत: विवाह से जुड़ी समस्याओं-तिलक दहेज की प्रथा, कुलीनता का प्रश्न, विवाह के बाद घर के पत्नी का स्थान आदि और समाज में वेश्याओं की स्थिति को मार्मिकता से चित्रित किया है। गांव समाज का आम आदमी इन समस्याओं से आक्रान्त था जो लेखक की दृष्टि से ओझल नहीं था।

किसान आम आदमी की अवधारणा के केंन्द्र में है। प्रेमचंद के सरोकार में किसान प्रमुख स्थान रखता है क्योंकि यह समुदाय भारतीय आबादी का पचासी प्रतिशत है और उस समय जमींदारों साहुकारों, और पुरोहितों के शोषण का शिकार था। प्रेम चंद पीड़ितो शोषितों के कलाकार थे। इसलिए उन्होंने विभिन्न प्रकार के शोषण के शिकार किसानों के जीवन और उनकी समस्याओं का चित्रण पहले पहल प्रेमाश्रय उपन्यास में किया है। प्रेमचंद ने अपने निर्माता नामक उपन्यास में दहेज प्रथा और वृद्ध-विवाह से होने वाले आम आदमी के पारिवारिक विघटन तथा विनाश को अत्यन्त मार्मिकता से चित्रित किया है।

भारतीय समाज में वर्णवाद एक कलंक है जिससे आम आदमी अपमानित और अभिशप्त है। प्रेमचंद इस वर्णवाद के घोर शत्रु और इससे पीड़ित समुदाय के प्रति अत्यन्त संवेदन शील थे। प्रेमचंद ने अपने बहुचिर्चत उपन्यास 'रंगभूमि' में पहली बार एक दलित सूरदास को उपन्यास का नायक बनाया जो स्वाधीनता आंदोलन का नेतृत्व करता है और अंत में शहीद होता है सूरदास के रूप में उन्होंने एक सर्वहारा उदान्त नायक के चरित्र का निर्माण किया। प्रेमचंद समानता मूलक समाज के स्वप्नदर्शी और मानवगरिमा के पूजारी थे। रंगभूमि इसका जवलंत निदर्शन हैं साम्प्रायिकता इस देश के सामाजिक सौमनस्य के लिए सदैव खतरा रही है। जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव आम आदमी पर ही पड़ता हैं यह भी प्रेमचंद की चिंता का विषय थी। इस समस्या को केन्द्र में रखकर प्रेमचंद ने कायाकल्प उपन्यास की रचना की है। जो आज के संदर्भ के कर्मीुमि उपनस में भी गांव स्पान्दित है। इस उपन्यास

में ग्रामीण जन साधारण के जीवन का मार्मिक एवं सजीव चित्रण किया गया है। अमकान्त और सकीना के माध्यम से इस उपन्यास में अन्तर जातीय विवाह का प्रशन उठाया गया है। इस उपन्यास मे दलितों के मंदिर प्रवेश और किसानों द्वारा लगान मॉफी के लिए महंत से संघर्ष का भी चित्रण किया गया हैं वस्तुत: प्रेमचंद आम आदमी के प्रति प्रतिबद्ध थे। और उनकी इस प्रतिबद्धता का चरमोत्कर्ष उनके गोदान उपन्यास में हुआ था। प्रेमचंद ने होरी के ब्याज से गोदान के रूप में आम आदमी का महाकाव्यात्मक उपन्यास लिखा है। गोदान आम आदमी की पीड़ा का महा गाथा है। इस उपन्यास में लेखक ने आम आदमी के संपूर्ण जीवन का मार्मिक त्रि व्यंजक भाषा में हारी, धमिया सिलिय, मातादीन, गोबर आदि के माध्यम से उपन्यस्त किया हैं गोदान का नायक गरीब किसान होरी गाय की एक छोटी इच्छा लिए लू का शिकार हो पाठक को व्यथा के सागर में लीन कर संसार से विदा हो जाता है।

प्रेम चंद की आम आदमी के प्रति प्रतिबद्धता का गहरा प्रभाव हम उनकी कहानियों में भी पाते हैं। उन्होंने लगभग दो सौ कहानियां लिखी हैं और वे आम आदमी के जीवन से संबद्ध है। अत: उनकी अधिकतर कहानियों का विषय आम आदमी की जिन्दगी से मिश्रृत हैं उनकी कहानियों का विषय आम आदमी के यथार्थ का कलात्मक दस्तावेज हैं आत्माराम कहानी में एक गरीब सुनार के अपने तोते के प्रति असीम मोह का चित्र हैं तो बूढ़ी काकी में परिवार द्वारा उपेक्षित एक असमर्थ महिला की व्यथा कथा। पंच परमेश्वर कहानी में अगर एक ओर पंच में परमेश्वर का निवास हैं की व्यंजना है तो दूसरी ओर की खोज में हर दरवाजे पर दस्तक देती एक मुस्लिम बुढ़िया की परेशानी की मार्मिक अभिव्यक्ति। ठाकुर का कुआँ, में एक निरक्षर दलित औरत एक सवर्ण के कुएं से डर के मारे पानी नहीं ला पाती गंदा पानी पिलाकर अपने बीमार पति की व्यास बुझाती है। मंत्र कहानी में एक गरीब वृद्ध अपने रोगी पुत्र का इलाज नहीं करने पर भी उस डाक्टर के बेटे का विष झाड़कर प्राण बचाता है। पूस की रात अगर शोषण और मौसम की मार से पीड़ित एक गरीब किसान की कहानी है। तो कफन संवेदनाशून्य प्राण हीन भारतीय समाज पर पड़ा हुआ कफन। यह कैसा व्यंग हैं कि बुधिया जब तक प्रसव पीड़ा से तड़पती है। कोई झांकने नहीं आता, मर जाने पर देखने वालों की भीड़ जमा हो जाती है। कैसी विडम्बना हैं- जिन्दगी से नफरत, मुर्दे के लिए संवेदना।

प्रेमचंद की रचनाएँ आम आदमी के प्रति लेखक की गहरी संवेदना से आप्लावित हैं।

संपर्क: 'ॠतंभरा', ग्राम- खैरा,
पोस्ट- पंतृसौरी खैरा,
जिला-बांका- 813107

मन की गुफा

हर्षलता शाह

1

रात के अँधेरे में
मन की गुफा में
छिपा वह
एकाएक बाहर निकल आता हैं
न जाने उससे
क्या रिश्ता हैं मेरा?
फिर अंजाना अपना-सा
लगता है। मुझको
लेकिन
उस अंजाने का
अपना बनने से
कितनी ही तकलीफ
होती है मुझको।
न जाने किससे
कहूँ?
अपनी दर्द भरी
यह दास्तान
दुख दर्द के समुद्र में डूब जाती
हूँ मैं
तब वही अंजाना
अपना-सा
फिर आकर गले
लगा लेता है
मुझको।

समय

रेत भरी मुंट्ठी
एक क्षण मे खाली
होते देखा जल
सोचा
रेत से मिलता-जुलता
यह समय
एक क्षण में बीत जाता है
मुट्ठी में आई हुई बाजी
एक क्षण में
हारी या जीती जाती है
यह हारना और जीतना ही
जीवन का वह पहलू है
जिसके छाँव तले
पूरी जिन्दगी
जी जाती है।

संपर्क: *पी.एचडी. छात्रा, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, चेन्नै*

सुखी रहने के लिए, बैंकमय जीवन जिएं।

प्रहलाद श्रीमाली

हर भगवान एक सचल बैंक है
व्यवहारिकता के स्तर पर सबका अपना सहज रैंक हैं
मीठी, प्यारी बोली बोलें
आत्मीयता की गांरटी उपजा कर
इक दूजे के मन में अपना खाता खोलें।
शुभकामना, सद्भावना के चैक और ड्राफ्ट जमा कराएं
जरूरत से पहले राशि पाएँ
प्रेरणा का लोन लें
किश्तों में नहीं, एक मुश्त और कई गुणा
जन-सेवा के रूप में वापस लौटते रहें
एक बैंक दूसरे से, सहयोग का नाता अच्छी तरह निभाता
मानव भी मानव से लगभग यही निभाए
तो जीवन में और आनंद आए।
सुख आए तो समझें ओवर ड्राफ्ट मिला हैं
जिसे समय पर चुकाना है
इसलिए घमंड में नहीं आना हैं दुख हैं चैक पास न होना
व्यवहारिक है दुबारा तिबारा कोशिश करना
व्यर्थ है। रोना-धोना, फिर क्यों मायूस होना।
पिता-पुत्र दादा-दादी, माँ-बेटी, भाई-बहन
चाचा-मामा आदि बैंक की शाखाएं हैं
इनका आपसी नेह-आद आत्मबल बढाता हैं
और यह आत्मबल ही तो मानव का खरा धन कहलाता है।
मुस्कुराना, यानी कैश का टोकन पाना
हसना, खिलखिलाना यानी रुपया हाथ आना।
वाह, कितना सरल है, स्वस्थ्य-धन कमाना।
बगैर जोखम वाला यह नुस्खा जरूर आजमाना
खट्टे-मीठे अनुभव के भारी भरकम गहने
अर्न्तमन के लाकर में रखें।
खरी दोस्ती की मोटी रकम फिक्स डिपॉजिट करें।
इस तरह जीवन में आनंद भरें। मौज करें।
तो सुखी रहने के लिए, बैंकमय जीवन जिएँ।

संपर्क: *31, रघुनाय कुलू स्ट्रीट, पार्क टाऊन, चेन्नै-600003*

मेरा जीवन

मूल- एम. बी. बेथॉन एडवर्डस

भगवान मेरे जीवन को एक दीप बना दो
जो इस संसार को चमक दे
एक छोटी ज्वाला जो तेज से जलती है
कहाँ से जाता हूँ।
भगवान मेरे जीवन को एक फूल बना दो
जो सबको संतोष देता हैं
देशज मंडप में अच्छी स्वास्थ्य देता हैं
जगह कितनी भी छोटी हो।
भगवान मेरे जीवन को छोटा गाना बना दो
जो दु:ख को आराम देता है,
दूसरों को बलवान बनाता है
और गाने वाले को सुख देता है।
भगवान मेरे जीवन को एक लाठी बना दो
जहाँ बलहीन रह सकता है,
कितना स्वास्थ्य और बल से मैं
पड़ोसियों को अच्छी सेवा कर सकता हूँ।

अनुवादक: *जे. रमेश कुमार,*
न्यू नं-52, ओल्ड नं.-85,
तिरूवेल्लुवर, चेन्नै-18

स्वंतत्र भारत का स्वरूप

आर. पार्वती

आजादी तो पाली हमने
लेकिन पथ अभी तक हैं पथरीले
देखा था सपना हमने हर पल नया बनायेंगे
हिन्दुस्तान को हम सबसे बड़ा बनायेंगे।
पर सपना अधूरा है जाने कब पूरा कर पायेंगे।
राष्ट्र प्रेम का सम्बल लेकर देश को एक बनाना है
चाहे कितने भी अड़चन आये इस धरती को बचाना है
हिंदू मुस्लिम जब बने एक मंदिर मस्जिद का
न रहे भेद तभी यह देश एक कहलाये
राष्ट्र स्वतंत्र।

संपर्क: चेन्नै।

मेरी प्रार्थना

✍ पौलोमी

उसकी मौत मेर कारण हुई थी,
मैनें ही अपनी बेटी की जान ली।
दो वर्ष की मेरी प्यारी बेटी को
मैं बचा न पाई।
समुद्र के क्रोध में वह
लहरों की चपेट में आ गई।
केसी माँ हूँ। मैं?
अपनी ही संतान की रक्षा नहीं कर पाई
और वाणी मेरी बेटी,
उसका क्या कसूर था?
उसने क्या किया था कि
तूने उसे अपने पास बुला लिया?
क्यों भगवान ? क्यों
तूने मुझे क्यों नहीं ले लिया?
इस धरती पर नजर डालों भगवान,
देखो इस विनाश को
देखो इन भटकते प्राणों को
सब कुछ समुद्र के क्रोध में बहकर खत्म हुआ
इस विनाश के बीच फिर से
एक हसीन जीवन की शुरूआत, अकेली
कैसे करूं भगवान?
मैं हिम्मत हार चुकी हूँ।
मैं वाणी के बगैर नही रह पाऊंगी
उसके बिना नहीं जी पाऊंगी
उसे भुलाकर एक नई जिंदगी की शुरूआत
नहीं कर पाऊगी
मुझे अपने पास बुला ले भगवान
मुझे उसी के साथ, इस दुनिया के विनाश से दूर
तेरी शरण में रहना है भगवान
यह मेरी आशा हैं
यही मेरी प्रार्थना हैं

संपर्क: सेंट स्ट्रेला मैरिस कॉलेज, चेन्नै

गीत

✍ चंद्रसेन विराट

तुम मंगलमयी प्रभावी हो
मैं अरूणोध्य का गायन हूँ

○

तुम जैस होली की कजली
मैं रसिया मन का बिरहा हूँ
तुम भावों की तरूवाई हो
मैं मुग्ध ह्वदय का स्पंदन हूँ

○

तुम करूण जाह्ववी धारा हो
मैंरस का मानसरोवर हूँ
तुम प्राण! आयु हो सांसों की
मैं ज्यों मिटटी का जीवन हूँ

○

तुम मिलन-क्षणों की लज्जा हो
मैं बिछावन का आंसू-कण हूँ।
तुम कंवारे हाथों की मेहंदी
मैं दुख का चर्चित चंदन हूँ

○

तुम हो अनछुई कल्पना हो
मैं प्राणों का गायक कवि हूँ
तुम मन की विनय प्रार्थना हो
मैं ज्यों पारूष का पूजन हूँ

संपर्क: समय, 121, बैकुंठ धाम कॉलोनी, ओल्ड पलासिया, खजराना कोठी, आनंद बाजार के पीछे, इंदौर-452018 (मप्र)

बेबसी की लहरें

✍ अनन्या राजू

जल है तो जीवन है
ऐसा हमारे परदादों ने कहा
लेकिन जब यही जल
हमारे शव तक हमें ले जाता हैं
तो हम करें तो क्या करें?
जाएं तो हम जाएं कहाँ?
सागर की एक लहर थी...
बेबसी की एक लहर
लाचारी की एक लहर
मृत्यू की एक लहर?
उठो बच्चों के मन में एक सवाल
इसी सागर की तरगों बीच
बीत गया था बचपन
यही सागर हमारा बचपन
छीनकर हमें अनाथ बना गया
क्या ये खौफनाक यादें?
जिस समुद्र के पास
छाया था खुशी का माहौल
अब उसके पास गूंजती
है भय की चीखें
और तबाही की हवाएं
हे प्रकृति....ऐसा
ऐसा अन्याय क्यों?

संपर्क:
सेंट स्ट्रेला मैरिस कॉलेज, चेन्नै

With Best Compliments from

PATNA FLOORING CO.

Kotwali Maszid, Budha Marg
Patna-800001

Resi.: Pasupati Niwas, Bander Bagicha
Frazer Road, Patna-800 001

0612-2225774 (S)
0612-2225781 (R)
Mobile: 9835244482

Prop: Gajendra Singh

Solutions Point

SOLUTIONS IN:

Computer Assembling
Maintenance
Laptop Repair
AMC
Networking
Web & Graphics Designing
Software Development

Contact : *Mr. Sudhir Ranjan*

Head Office : U-207, Shakarpur, Vikas Marg, Delhi-92
Tel/Fax : 011-22059410, 22530652
Website: www.solutionspoint.org

कृपया ध्यान दें

पत्रिकाएँ और पुस्तकें खरीदकर पढ़ने में जितना मजा आता है उतना मुफ्त में पाकर नहीं। इसलिए जब आप 'विचार दृष्टि' पत्रिका नमूना प्रति की माँग करें तो यह लिखना न भूलें कि आप इसकी सदस्यता ग्रहण करना चाहते हैं। पता नहीं क्यों पत्रिकाओं का सदस्य बन ना अपना कर्तव्य नहीं, लोग उसे मुफ्त में झपटना अपना अधिकार समझते हैं।'

दो वर्षों तक 'राष्ट्रीय विचार पत्रिका' और बाद में भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक द्वारा 'विचार दृष्टि' शीर्षक अनुमोदित एवं निबंधित होने पर पिछले पाँच साल से निरंतर इसकी प्रति आप प्रबुद्ध पाठाकों एवं साहित्य सेवियों के हाथों जा रही है और जिसके तेवर व कलेवर को भी आपने तहेदिल से स्वीकारा है। समझदारी का तकाजा है कि इसकी सदस्यता ग्रहण कर इसके नियमित प्रकाशन में आप अपेक्षित सहयोग करें। यह आप पाठकों की गरिमा के अनुरूप होगा और मैं भी आपकी आकांक्षाओं एवं विश्वासों के अनुरूप एक स्वस्थ पत्रिका आप तक पहुँचाने में समर्थ हो सकूँगा। पिछले दो-तीन महीनों में इसकी सदस्यता ग्रहण में अभिरूचि लेकर आपने मुझे प्रोत्साहित किया है यह आपकी सदाशयता एवं उदारता का द्योतक है। मैं तहेदिल आभारी हूँ आप सभी नए सदस्यों का। अगर आपकी सदस्यता समाप्त हो चुकी है तो एक सौ रुपए भेजकर उसका नवीनीकरण करा लें।

राज्य कार्यालयः
'बसेरा', पुरन्दरपुर
पटना-१ (बिहार)
फोनः २२२८५१९

संपादक, 'विचार दृष्टि'
'दृष्टि', यू. २०७, शकरपुर,
विकास मार्ग, दिल्ली-९२
फोनः ०११-२२५३०६५२
०११-२२०५९४१०

शुभकामनाओं सहित :

मे० श्री राम आयरन

लफार्ज सीमेंट और छड़
के थोक एवं खुदरा विक्रेता

मीठापुर, खगौल रोड,
पटना-८०००१ (बिहार)
मोबाईल : ३३३७३६५
प्रोपराइटर : नरेश कुमार सिंह

"इन्हें कुछ न कहें"

समीक्षक: डॉ० तपेश्वरनाथ

इस व्यंग्यकाव्य में 106 छोटी कविताए है। इन्हें आठ उपशीर्षकों में विभकृ कर विषयानुरूप पिरोया गया हैं इसके द्वारा आज के नेताओं के भ्रष्ट करतबों के प्रति हास्य से होकर लक्षणा, व्यंग्य, वक्रोकृि, सहश्रोकृि, चेतबोध और क्रांति का क्रामिक निनाद फूलता हैं पहले तो काव्य का शीर्षक ही (इन्हें कुछ न कहें) विपरीत लक्षणा अथवा काकु वक्रोकृि मूलक व्यंग्य हैं जो इस भ्रष्ट पुराण के कथ्य, को सार्थकता देता है। कुछ-कुछ वैसा ही जैसे कोई किसी पामर के पंजर में खंजर धुसाते अपने मित्र से कहे कि इसे कुछ न करो। चुंकि व्यंग्यकार कवि ने अपनी आंतिम कविता जो नहीं शर्म से गड़ जाये। के अंतिम चरण- बस एक लेखनी मामूली सी के अन्तिम शब्द 'अंकुश प्रयोग से अपनी महिषमर्दिनी मनसा प्रकट कर दी है इसीलिए, इसी मूल कनसा की तुला पर उसके काव्य शीर्षक को तौलने पर आपको यह विपरीत लक्षणामूला काकु वक्रोकृि का भरपूर अर्थ मिल सकेगा। यानी, कुछ न कहे, कहकर कवि ने नेताओं को क्या कुछ नहीं कह दिया है।

जैसे दीन पुजारी अपने देवता को प्रसन्न करने के लिए उन्हें 108 बार विभिन्न विशेषण परक पर्यायों से सुमिरनी लेकर सुमरता या कीर्तन करता है, वैसे ही इस काकु के काम भुशुण्डी कवि ने अपने जमाने के दुर्दव (भारतेन्दु की भारत-दुर्दशा का एक पान) को पूरी घृणा और जुगुप्सा से भरकर विभिन्न दुर्विशेषणों-दूषणों से, सुमिरनी लेकर विकीर्तन या व्यंगीर्तन (स्वयं कवि के शब्द, पृ० 104) किया हैं उसका मानना भी है कि इस हुंकार-काव्य को सराहने वाले कुछ गायक, स्वांगकार, कीर्तनकार या नौटंकीबाज यदि इस नौटंकीबाज नेता-पुराण को पूरी मझडली बनाकर कर जनता के बीच गायें- बाजयें नाच गाकर दिखाये, तो इसका अधिकाधिक जन भण्डाफोड़ हो और एवंविध जन जागरण भी सघ सके। आज तो एलेक्ट्रोनिक मीडिया युग में से सी डी कैसेट भी बनाये जा रहे हैं जो चुनाव मौसम में ज्यादा लोकप्रिय होते है और श्रव्य-दृश्य दोनों रूपों में बिखर होकर ये जन-जन तक शीध्र लोक प्रचचित हो जाते है। अपने गीत, लोकगीत, फैंफड़े, पैराड़ी आदि से ऊपर उठकर ये यदि काव्य व्यंग्य-वक्रोकृि, कटूकि, सकृजोकृि आदि का समुचित पर जन-गन-मन में प्रभावी और मारक बन सके। इन भ्रष्ट नेताओं, कहागुजारियों-गंजारिनों की कारगुजारियों का भरपूर पर्दाफाश हो, वे बेनकाब हो और ब्रज में आयी-माय का स्वांग करनेवाली- पूतना का यमरूप उजागर हो जाय।

> **पुस्तक: 'इन्हें कुछ न कहें'**
> **लेखक: डॉ० श्याम सुंदर घोष**
> **समीक्षक: डॉ० तपेश्वरनाथ**
> **प्रकाशक: लहर प्रकाशन, 778, मुट्ठीगंज इलाहाबाद**
> **पृष्ठ संख्या: 104**
> **मूल्य- रु. 100 मात्र।**

इस काव्य-तीर का मूल लक्ष्य यद्यपिसत्ता का खलनायक है। तथापि उसके सहाकरी पताका और पीठमर्द उपनायक, चमचे, छुटपैये, पिछलग्गू, लगुए-भगुए आदमी हैं जो शुभ्य-अशुभ्य, रक्तबजी, चण्ड-मुण्ड, धूम्रलोचन आदि रूपेण दिग्गज दिरान्तों की भूमिका व ताड़का त्तिशिरा आदि असुर सुन्दरियों द्वारा उस महिषासुर-दरबार की शोभा का विस्तार करते कराते उसी खल-मण्डली के करतब, करतूतों, सिफत व फितरतों से खबरदार कर अन्त में इन्हें स्वहा किया गया हैं

शुभारम्भ शीर्षक प्रथम अनुच्छेद की आरंभिक कविता ही विपरीत लक्षणामूलक हैं जिसमें मूढ़ जनों द्वारा सुप्रीमों की वन्दना करते हुए उनके चरण-धूलि की कामना की-कराई गई है। वैसे ही दुल्टेश-बन्दना, चमचों के कोरस सदृश है। जिसमें उन्हें गरिमामय और जनता को लघ्मिामय-व्याश्रनिंदा शैली में जताया गया है। सत्ता वन्दना, कुर्सी वन्दना जिसमें अर्थ पिशाचों द्वारा की गई जन दुर्शति वर्णित है। फिर सत्ता का मकड़जाल जिसके फंदे में मान-मूल्य-च्युत आदमी जानवर बना दिया जाता है। राजनीतिक कीर्तन वेदास के पद (प्रभु, तुम चन्दन हम पानी) की पैराडी शैली में रचित गीत-प्रभुन्जी, तुम पी एम हम सी एम की तुकबन्दी में देश को जल्दी जल्दी मिल जांटकर खा जाने का लीला-गान हैं स्वागत गीत बेकारों, भकुओं का नेता हेतु को रस-गान हैं रैली का उदबोधन गीत मूढो भेडों का चरवाहा-गीत हैं जिसमें मुस्टन्डों द्वारा भुक्खड़ों को जुटाने का सर्कस होता हैं जन-उद्धारक गीत में जन-मर्दन और इन्सान को हैवान और देश को बियावान बनाकर कुर्सी, पार्टी, सत्ता पर काबिज होने की कवायत तथा खुदगर्जी में किये गये देश-द्रोह का जन-घोष हैं देश नेता का में नेताओं की शर्म निरपेक्ष तस्करी, अपराधी, गद्दारी-प्रवृति आदि की तस्वीर दरपेश हैं इनकी विरोधाभासी प्रकृति में फुट डालो, शासन करो, कथनी कुछ करनी कुछ, ऊपर से उजाले भतीर से काले आदि विदूप मुहावरे उदार शैली में दृष्टव्य हैं जीत का गीत भारतीय जन-तंत्र का फातेहा है। जिसमें-देखो चोर उच्चक्के जीते, जीते कपटी भष्टाचारी, की वेवश तस्वीर हैं इसमें नेता का रंगदार, शातिर , लुटेरा रूप में नये मुहावरों में उजागर है। अल्ला दे में उस साम्प्रदायिक यम समीकरण की ध्वनि है जिसकी बदौलत छूछी बकरी के गले-कानों में छल्ले झुमकते है। स्वभावत: अपहरण और खुली माँग का धंधा यहां परवान चढा है। वेवश जनता ने अपने वौरबक्य से इसे बौरा दिया है। फलत: इसके माथे पर सींग उगा

दिये। और यह सत्ता ठेसे पर (चण्डिका नहीं, वह तो ममतामयी माँ भी है) पूतना बम पसरी हैं यही उसकी सिफत व फितरत है। किसी भी कीमत में मुहावरों की बौछार कर नेता हत्यारा-गठजोड प्रदर्शित हुआ है। अपहर्ता इनके कच्चे-बच्चे है। ये चुनाव मौसम आते ही मदारी की तरह डमरू लेकर अन्दर नचाने चले आते है। चुनाव तो एक ठप्पामार बहाना भर है इस जनतंत्र की मरियल गाय को श्रिबह करने का। नीचों के बेशर्म हितू और ऊंचों से बैर-यही इनके रिश्तेकी मजबूती है। ये करूणानिधान अर्थात विपरीत लक्षणा में घोर चाण्डाल है। जो नियम, कानून, न्याय सांविधान सबको तोड-मरोड़ कर इस देश को सारे जहां से गन्दा किये है। युवा वर्ग के तीन चित्रोंमें ही एक है इसका शीर्षक गीत- इन्हें कुछ न कहाँ पहले चित्र में प्रचार तंत्र पर कब्जा, दूसरे में मंथरावाद, चहानी दुहशासन के अस्थायी समझने का मुगालता और बुथलुटेरों के ज्वार तथा बोट की लूट के बाद जड़ तमाशवीनों के बीच के सनननाटे के भाटे की दयनीय तस्वीर टंगी हैं कही-कहीं सहजोक्ति में लिखित नेता उदार नही भी है। जिसमें इस अन्धेर को भाग्यवाद कहकर झुठलाया गया है व्यंग्यकार सोचें कि हर वर्ष यद्यपि रावण परिवार का पुंतला दहन होता है। पर यह मिटता कहाँ है अगले वर्ष फिर तैयार है और कहता है। नाटक छोड़ो सही दहन करों तब दशहरा सही होगा। जालिम नेता में भी यही सहजोक्ति है। यह व्यंग्य नहीं अभिधेय चोट है- सीधे-सादे मामूली सच्चों से सत्ता है दूर खड़ी। सूटे, लवार, मकार चाभते फिरते है माखन-रबडी। रबड़ी में श्लेषमूला वक्रोक्ति लक्षणीय है। मतलबी नेता अपने-अपनो के बीच ही धोती से लेकर रेवड़ी तक हटाता है। कलाकार साहित्यकार भी उनकी धुनही-तुरही है। जो बन्दी जन की तरह उनकी झूठी वन्दना करते रहते है।बावड तोड लक्षणा और चुभते मुहावरों में इन जनद्रोहियों की पोल सीधे सरल बोल से खोली गयी है। चुनाव आने पर तो से कुम्भकरर्ण वर्षो बाद जागकर

शेष पृष्ठ 46 पर...

आम आदमी की बेचैनी और वेदना से भरपूर गज़ल-संग्रह

समीक्षक: कृष्णानंद

उर्दू के महान शायर इकबाल ने कहा था- 'हजारों साल नर्गिस अपनी बेनूरी पे रोती है

बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदाआज हजारों साल का दीर्घ अंतराल अतिश्योक्ति लगता है जब हम देखते हैं कि गजल रचनाकारों की बाढ़सी आने लगी है। परंतु इसमें संदेह नहीं कि गजल के चमन में बहुत मुश्किल से ऐसे फूल खिल रहे हैं, जिसमें नूर भी हो और खुशबू भी। मो॰ सुलेमान गजल के चमन के ऐसे ही एक दीदावर हैं, जिनके नूर और खुशबू से फिजाँ महक उठती है।

> **पुस्तक:'बादलों के साये तले'**
> **गज़लकार: मो. सुलेमान**
> **समीक्षक: कृष्णानंद**
> **प्रकाशक: गंगा-यमुना प्रकाशन, पटना-800001**
> **पृष्ठ संख्या: 120**
> **मूल्य- रु. 150 मात्र।**

रात शबनम सी जब सिसकती है,
सुबह सूरज लिये निकलती है
गजलों में सुलेमाँ आप अपनी
अलफाजके मोती जड़ते हैं

सुलेमान की पुस्तक 'बादलों के साये तले' पढ़ने से ज्ञात होता है कि नायिका के सौंदर्य ओर उसके प्रति प्रेम के वर्णन से प्रारंभ होनेवाली गजल अब प्रेमी-प्रेमिका के इश्क का इजहार मात्र न रहकर साधारण आदमी की बेचैनी और वेदना, दुख और त्रासदी, मनुष्य जीवन की विसंगतियों और विषमताओं के प्रत अधिक संवेदनशील होती जा रही हैं आज की गजल केवल इश्क का तरन्नुम गाने की अपेक्षा मनुष्य के शुष्क और नीरस जीवन का आईना बनने की चेष्टा अधिक करती हैं 'बादलों के साये तले' भी सुलेमान साहब के जीवन अनुभवों और व्यापक दृष्टिकोण का सफल दर्पण हैं। उन्होंने इस संग्रह में जीवन के करूण यथार्थ को उकेरा है। उनकी गजलों में एक आतंक की पीड़ा है, बाढ़ और भूख की वीभिषिका है, जात-पात और नफ़रत की आग है, तो दूसरी ओर सियानी बेटी और बेकार बैठा बेटा के भविष्य की चिंता है जो आज के परिवार की अहम् पीड़ा है। सुलेमान कहते हैं-

नफरत की, जात-पात
की ऐसी लगी है आग।
इस आग में हर गाँव
ही जलता हुआ मिला।

वे मर्माहत होकर पूछते हैं-

क्यों काम के ये हाथ
गला काट रहे हैं?
क्यों होंठ नग्में मौत
के अब गाने लगे हैं?

संवेदनशील हृदय और व्यक्तित्व के आदमी सुलेमान आदमीयम और इंसानीयत के कवि हैं। ये केवल कहते ही नहीं कि-

आदमी में अब कहाँ है आदमी।
सोच कर घबरा रहा है आदमी।

वरन् इसपर अमल करते हुए भी मैंने उन्हें देखा है।

एक साहित्यकार समाज में क्रांति का शंखनाद करता है, समाज को उसकी कुरूपता की झलक प्रतिबिंबित कर उसे दूर करने के लिए प्रेरित करता है। और सुलेमान भी ऐसा करने में नही चुके हैं और यह पूछकर कि- ''उफ! ये सर्द मौसम की बर्फ जैसी पुरवाई'' "क्या हम इन हवाओं का रूख बदल नहीं सकते?''

और अपनी दृढ़ता व्यक्त करते हैं- ''चुप ने होगी अब सुलेमाँ की जबां।
इनके लब पर हक के नारे देखिये।''

पुस्तक की छपाई, गेटअप, सुंदर है। ●

NALANDA SCAN CENTRE

(Unit of Nalanda Hospital & Scan Research Centre Pvt. Ltd.)

Facilities Available :

- **M.R.I.**
- **C. T. Scan.**

Coloured Doppler Whole Body 3D-4D.

Real Time Ultra Sound. X-Ray

B.M.D. (Bone Densitometer)

Doctor's Colony, Kankarbagh
Patna-20

'मेरी यूरोप यात्रा' में सैर का आनंद और परिवेश का अध्ययन

✍ *समीक्षक : डॉ० राधाकृष्ण सिंह*

साहित्य की अनेक विद्याओं की पुस्तकें के प्रणेता डॉ. जियालाल आर्य भारतीय प्रशासनिक सेवा के अवकाश प्राप्त अधिकारी हैं। 'यात्रा-वृतांत' विद्या पर उनकी सद्य: प्रकाशित पुस्तक हैं -मेरी यूरोप यात्रा। तकरीबन एक वर्ष यूरोप प्रवास के दौरान उन्होंने इंग्लैंड, फ्रांस, स्वीटजर लैंड और इटली के भ्रमण एंव अध्ययन से उत्पन्न अनुभवों को इस पुस्तक में लिपिबद्ध किया है। लेखक को वहां की सामाजिक-सांस्कृतिक एवं राजनीतिक स्थितियों को समझने और उन्हें प्रवाहपूर्ण मनोरंजक शैली में प्रस्तुत करने में सफलता मिली है।

'मेरी यूरोप यात्रा' पढ़ने के बाद यह संस्मरण एक बारगी पाठकों का भी 'यात्रा-वृतांत' बन जाता हैं लगता है कि पाठक भी यूरोप का सैर कर रहा हैं कहने का गरज यह कि यात्रा- संस्मरण-लेखन में लेखक ने वहां की मोहक दृश्यावलियों, व्यक्तियों-स्थानों-संस्थानों के अनुकूल सत्संगों, आहारों एवं बिहारों का जीवंत चित्रण किया है।

श्री आर्य सन् 1982 में भारत सरकार की कोलम्बों योजना के अंतर्गत कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय अध्ययन के लिए गये थे। तब वे बिहार सकरार के श्रम आयुक्त पद पर पदस्थाति थे। उनकी जन्म कुंडली में विदेश यात्रा का योग लिखा हुआ था। पत्नी और बच्चों की भी इच्छा थी कि आर्या साहब विदेश भ्रमण पर जायें। वे उस समय विदेश जाने की मन: स्थिति में नहीं थे। लेकिन जाना पड़ा। लेखक अपने गांव अमेठी (उ.प्र.) के विदेश जानेवाले प्रथम व्यक्ति हैं। पटना से सर्वप्रथम, लेखक अपने गांव जाकर फिर दिल्ली और लंदन के लिए रवाना हुऐ। पासपोर्ट, वीसा बनाने के अनुभव के साथ हवाई यात्रा के रोमाँच संस्मरण को प्रस्तुत करने में भी लेखक ने सफलता प्राप्त की है। पाकिस्तान का करांची शहर, पहाड़ियों के बीच समुद्र के किनारे अपने प्राचीन गोरव को संजाये मुस्करा रहा है। लेखक प्रश्न कर रहा है- पाकिस्तान भी तो अपना ही देश है। क्या मानव निर्मित रेखाएं आदमी को आदमी से अलग कर सकती है?

लेखक हवाई यात्रा के क्रम में दिल्ली से दुबई इवाई अड्डा पर पहुंचते हैं किसी भी विकसित देख के हवाई अड्डा से मुकाबला को तैयार है यह अड्डा। मरूभूमि में विशाल भवनों वाला शहर है दुबई। इसके बाद लेखक कुवैत हवाई अड्डा पहुंचे। कुवैत धनी देश है। इसके चारों तरफ मरूभूमि है। किंतू गर्भ में है तेल का भंडार। कुवैत से लंदन की हवाई-चात्रा 6 घंटे 40 मिनट की है। जहाज में जर्मनी की रेल पर केंद्रित एक अंग्रेजी फिल्म दिखलायी गयी। जिसमें भारतीय रेल जैसी ही अराजकता और पुलिस अत्याचार को दिखलाया गया।

लंदन पहुंचकर लेखक ने रेस्त्रा में पाया कि ग्राहक स्वंय खाना परोसकर खाते हैं। यहां पर भारत की रेलगाडी की तरह यात्रियों की भीड़ नहीं होती है। यहां की महिलाएं सौंदर्य प्रसाधन एवं ध्रुमपान में दिलचस्पी रखती है। गाड़ियों में चुबंन लेना-देना आम बात है। कैंम्ब्रिज पहुंचकर लेखक को अकादमिक आंनद आया। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में 33 महाविद्यालय हैं। इनमें बैंक, पुस्तकालय, मनोरजंन कक्ष-सभी की अतयाधुनिक सुविधाएं हैं। क्रिसमस के दिन लेखक ने इंडिया हाउस में भारतीय व्यंजनों और नृत्यों का आनंद उठाया।

आलोच्य पुस्तक के अनुसार इंग्लैंड का संसदीय चुनाव रोचक होता है। 1983 के चुनाव को देखकर लेखक का अभिभूत होना स्वाभाविक है। एक निश्चित तिथि तक यू. के में रहनेवाले सभी वयस्कों को मतदाता बनाया जाता है। भारत की तरह वहां पर मैदानों में जन सभाएं नहीं होती है। मीडिया के माध्यम से चुनाव प्रचार होता है। ऐसा इसलिए कि जनता शत प्रतिशत शिक्षित है। वहां पर आदर्श लोकतंत्र है। वहां पर मतदान, स्वंतत्र, निष्पक्ष एवं भयरहित होता है।

वहां जाकर लेखक ने खाना बनाया सीखा। अंग्रेजी मौसम, कीचेन घर, स्वास्थ्य सेवा, बस टरमिनल, भारत-पाक नाइट, गुरूद्वारा मिलन केंद्र, पर्यटन की सुविधा, जेनेवा-पेरिस का अनुभव, बाजार का मोलभाव, अंग्रेजी डिनर आदि उपशीर्षकों में लेखक ने अपने यात्रा-संस्मरण को समेटने का प्रयास किया है। उनके अनुसार, युरोपीय देशों में बच्चों की शादी के लिए माँ-बाप की कोई विषेश जिम्मेदारी नहीं होती है। इंग्लैंड में पर्यटन की विशेष सुविधाएं हैं। अंग्रेज 'लैफ्ट हैंड और फ्रांसीसी राइट हैंड ड्राइव करते हैं। दोनों एक-दूसरे के विपरीत चलते है। फ्रांस में नयी सड़कों पर चुंगी वसूलने के लिए स्वचालित गेट बने हुए हैं। बाक्स में चुंगी डालते ही गेट स्वत: खुल जाता है।

मेरी युरोप यात्रा के अध्ययन पता चलात है कि पेरिस की रात्रि रंगीनियों के लिए विख्यात है। सेक्सी पत्रिकाएं वहां पर धड़ल्ले से बिकती हैं यह उनकी संस्कृति का अनिवार्य अंग बन गया है। सवेरे सोच करना और मुंह धोना भारतीय जीवन के अंग है। लेकिन अंग्रेज सोने से पूर्व ब्रश करते हैं। जेनेवा स्वास्थ्य एवं मनोरंजन के लिए ख्यात है। स्वास्थ्य लाभ के लिए पूरे विश्व से लोग यहां आते है। वहां की स्वीस घड़िंया भी विख्यात रही हैं। पेरिस में बिना सीट आरक्षण का यात्रा संभव नहीं है। शाकाहारी श्री आर्य को यूरोपीय देशों में कई मित्रों और परिचितों ने डिनर पर आंमत्रित किया। किंतु, उन्होंने भारतीय आहार की सीमा नहीं तोड़ी। वहां की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक स्थितियों का तुलनात्मक अध्ययन भी किया।

इस पुस्तक में लेखक ने उपर्युक्त सभी बिंदुओं पर विस्तार से अपने संस्मरणों को लिखकर यूरोप के बारे में जानकारी हासिल करने का रास्ता प्रशस्त कर दिया है। हिंदी साहित्य में यात्रा-वृतांत विद्या की अनेक स्तरीय रचनाएँ विद्यमान हैं। उस श्रेणी में इस पुस्तक को शामिल किया जा सकता है। पुस्तक की भाषा अत्यंत ही बोधगम्य एवं सुरूचिपूर्ण हैं। सभी कोटि के पाठकों के लिए पुस्तक संग्रहणीय हैं सोधप्रज्ञों एवं पर्यटकों के लिए इसकी विरोष उपयोगिता है।

'संवर्त' : यथार्थ की अतल गहराई का काव्य

✍ समीक्षक: बैजनाथ राय

डा. महेन्द्र भटनागर अचुनाथन काव्य-प्रवृतियों कवि हैं, जिन्होंने प्रयोगवादी पद्धति का अनुसरण न कर सहज-प्रसन्न शैली में वैज्ञानिक प्रगति तथा मानवता के प्रति संवेदनाशीलता की अभिव्यक्ति की है। वे जीवन की विषमताओं से जुझत हुए समाज तथा नर-संहारक भयंकर शक्तियों के मध्य रहते हुए भी सूजी जीवन के प्रति आश्वस्त एवं आशावान हैं। वे विश्व में हो रहे परिवर्तन के प्रति संतोष व्यक्त करते हुए उसे युग की माँग के रूप में स्वीकारते हैं- आओ/जीवन गीता को/अभिनय संदभ्र प्रदान करें।/बदला/ जब परिवेश मनुज का/आओ/नई ऋचाओं का निर्माण करें/नव मूल्यों को स्थापित कर/जीवन-धर्मी कविता के/अंर-बाइ्य स्वरयों को/अभिनव रचना दें/जीवन्त नये आदर्शों की आभा दें।

इस प्रकार के आशावान कवि बहुत नहीं, जिन्होंने कुण्ठा-ग्रस्त कवियों के रूदन और आक्रोश को पसन्द कर जिन्दगी के जीवन्त गीता गाये है। इन कवियों को पौरूष पर विश्वास हैं इसीलिए नव-निर्माण की मशाल लिए वे युग को आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं, समाज को ललकारते हैं तथा कापुरूमता को धिक्कारते हैं इन कवियों को परिश्रम पर पूर्ण विश्वास हैं ये समाज की विषमताअें से कर्म के द्वारा जुझते हुए उज्जवल भविष्य के निर्माण पर विश्वास करते हैं खोखली मातम-पूर्सी को ये निरर्थक एवं पोरूषविहीन स्वर स्वीकारते है। इन कवियों को समीक्षकों ने प्राय: नजर-अंदाज किया हैं परन्तु इन पक्तियों के लेखक को यह सरासर अन्याय, अनुचित एवं बैमानी प्रतीत होता हैं पाश्चात्य ब्रैण्ड की नवीनता के व्यामोह में शहनाई के मधुर स्वर की अवहेलना केवल हमारा दृष्टि-कोण अथवा सामायिक आवेग हैं इन कवियों का भी काव्य-धरातल ठोस हैं और अचुनातन हिंदी-काव्य के विकास में इनका महत् योगदान हैं, इसे स्वीकार नहीं किया जा सकता। हां, यह सत्य है कि इन कवियों को किसी, वाद विशेष या खेवे के साथ संयुक्त नहीं किया जा सकता। ये अपने आप में एक सुदीर्ध युग समेटे हुए हैं डा. महेन्द्र भटनागर का समीक्ष्य काव्य-संकलन संवर्त उक्त आकलन का सर्वरपेण प्रतिनिधित्व करता है। महेन्द्र भटनागर के कर्तृव्य द्वारा हिंदी-साहित्य की मात्र अभिवृद्धि ही नही हुई, काव्य की एक पृथक सशक्त कड़ी भी जुड़ी है।

वर्तमान युग की विषम परिस्थितियों में मनुष्य अपना मानसिक संतुलन खो बैठा हैं यह जियर दृष्टि डालता हैं, अंधकार-ही-अंधकार दृष्टिगोचर होता हैं वह हर दिशा में डगमगाते कदम डाल रहा हैं,। परन्तु पथ वही पुराना है-उसमें कोई नवीनता नही-नया मोड़ नहीं कवि उस पुराने पथ पर चलते-चलते उब गया हैं वह अब कोई नया मोड़/भाता हैं मुझे/बहुत लम्बी डगर से/ऊब जाता हूँ/अकारण ही/थकावट की शिथिलता में/न समझे/ डूब जाता हूँ/ सनातन/ एक से पथ पर/नयापन जब नजर आता नहीं/ मुझसे चला जाता नहीं। इस युग में संधर्षो की इतनी वृद्धि हो गयी है। कि मनुष्य हताशा दृष्टिगोचर होता हैं प्रत्येक ह्रदय में वेदना की फसलें खड़खड़ा रही हैं। मनुष्य एक चित्ररेखा-कृति से अधिक नहीं रह गया हैं। प्रत्येक उर में/वेदना की खड़खडाती है फसल/आह्लाद-बीजों का नहीं युग में मानव को मुस्काने की/मधुगान की/अभिशप्त इस युग में कमी है/अत्याधिक अनवीध कमी है। इस अभिशप्त युग में मनुष्य का मूलय नगव्य/सा हैं अत: वह अपनी ऋस्त व उब्दिग्न इच्छाओं के लिए आक्रोश के साथ जिन्दगी का भार ढोने के लिए विवश हो गया ह। वायुमण्डल में न जाने किस तरही की। अश्रुवाही वाष्प हैं परिव्याव्त। जिससे हम विवश हैं मूक रोने के लिए। आक्रोश तृष्णा-भार ढोने के लिए। आख्या के कवि को अनास्था पर आश्चर्य होता है, वह अपने विश्वास को खोना नही चाहता, परन्तु वर्तमान झटके देकर उसे उससे छीन लेना चाहता हैं सभी ऋतुएं उसके सामने से एक-एक कर गुजर जाती है। परन्तु उनके आने और जाने में कोई अन्तर नहीं दृष्टिगोचर होता। वर्षा ऋतु बीत गयी, परन्तु उसे कहीं कजली गीतों का स्वर सुनायी नहीं दिया। शरद-ऋतु की समापित तक भी शुक्लाभिसारिका को भावबोध नहीं हुआ। इसी प्रकार वसन्त बीत गया पर वासन्ती खिली नहीं। मधुकण्ठी की पीड़ा भी कहीं सुनायी नहीं दी। इस प्रकार बोझिल तिथियों एवं धूमिल स्मृतियों का एक वर्ष बीत गया, परन्तु कवि को गान नहीं हुआ। विरोधी परिस्थितियों उसका गाल घोट देती है। वह साहस करके भविष्य के प्रति मन में नव उमंग भरना चाहता हूँ, परन्तु वर्तमान की विभीधिकाओं से टकराकर उसका साहस व्यर्थ सिद्ध होता है। और उसकी उमंग मिथ्या प्रमाणित होती है। चाते हुए भी इच्छाएं कार्य-रूप में परिणत नहीं हो पाती। नव वर्ष के स्वागत के लिए कवि पहले से ही प्रस्तुत है। परन्तु जब वह आता है तो वह किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाता है। और चाहते हुए भी कुछ नहीं कर पाता। हे नव वर्ष/तुम्हें जीवन-क्रमाण्किा में/महत्वपूर्ण स्थान दिलवाने के लिए/ जागता-सोता रहा/ चाहते हुए भी/न जी सका, न मर सका।

वास्तव में दिन काटने और जीने में बहुत अन्तर है। दिन तो किसी-न-किसी प्रकार सभी के कटते ही हैं, पर जीवन-बोध के साथ जीना आज कठिन है। कवि की दृष्टि में जो खंडित व्यक्तित्व के धागों-रेशों को सहेजता और संवारता हैं वही वास्तविक जिन्दगी जीता है। ऐसा करने में मनुष्य को किस प्रकार ऊब

पुस्तक:'संवर्त'
कवि: डॉ० महेंद्र भटनागर
समीक्षक: बैजनाथ राय
प्रकाशन: ग्वालियर, मध्य प्रदेश

ओर धने अंधकार का अनुभव होता है, कवि को उसकी पूर्ण अनुभूति हैं महज/दिन बिताना सरल है/जीना कठिन/जिन्दगी को काटना/कितना सहज है/खण्डित व्यक्तित्व के/धागों/रेशों को/ सहेजना/संवारना/सीना कठिन। कवि को आह्लाद के क्षण प्राप्त नहीं होते। हर समय उसके कानों में संघर्ष का स्वर गूंज रहा हैं जीवन में चारों ओर संदेह के सर्प डस रहे हैं विश्वास या आस्था कहीं दृष्टिगोचर नही होती। बहुमूल्य मानव-जीवन निराशा के घोर अंधकार से भर उठा है। अत: आज का मनुष्य एक मुट्ठी रोशनी की भिक्षा माँग रहा है। संपीडित अंधेरा /भर दिया किसने/अरे/बहुमूल्य जीवन-पात्र में मेरे?/एक मुट्ठी रोशनी/दे दी/ मुझे।

आज का अभाव-ग्रस्त जीवन राग-विहीन हो गया है। प्रकृति के परिवर्तनों का भी उस पर कोई प्रभाव दृष्टिगोचर नहीं होता। वह पाषाणवत् हो गया। कवि ने सुन रखा था कि वंसत में फूल खिलते हैं हर डाल कोपलों और नव-पल्लवों से लद जाती है, नव रस से भर जाती हैं वसंत में मदिन-मधुर भावनाओं के फूल खिलते है। सारी सृष्टि रंग-बिखरें परिधानों से सज जाती है। अंतर में विविध स्वर अनायास बज उठते है। हर श्लय-निश्चेष्ट ह्रदय अपरिचित उमंगों से सिहरता और कसमसाता है। हर अचर अभोगे दर्द की अनुभूति पा फड़फडाता हैं और गुनगुनाता हैं हाथ कल्पना के उच्चतम शिखरों को छू लेते है। परन्तु कवि को स्वयं इस प्रकार का कोई अनुभव नहीं होता। पर/हमने यह सब/कुछ भी तो न जाना/कुछ भी तो न देखा/जीवन की कशमकश में/बीत गया बसंत/हमने भी/जीलिया बसंत। उसे तो सिर्फ इतना ही महसूस हो रहा है। कि-हंस कर और रोकर/रे, बिता दी/जिन्दगी हमने/जी न पाये। परन्तु फिर भी कवि उससे हार नहीं मानता। वह कहता हैं कि - जीवन में/पराजित हूँ/हताश नहीं/..अभिशप्त हूँ।प्र पग प्रवंचित हूँ/निराश नहीं। वह ग्लानि, पीड़ा और घुटन को क्षणिक और वरदान रूप में स्वीकार करता है-क्षणिक है/ग्लानि/पीड़ा/घुटन/वरदान समझो/शेष कोई/मोहपाश नहीं।

यद्यपि आज हर जीवन में गहन अंधेरा है, हर जिन्दगी अभिशप्त-सी है, फिर भी कवि इस आशा पर जीने की प्रेरणा देता है कि शायद रवि-किरण के समान राग-रंजित हेम मंगल-दीप प्राप्त हो जाये। इसलिए वह कहता है कि-फूल बदले शूल में/सपने गये सन धूल में/ओर आत्महन्ता/द्वार वातायन करो मत बंद/शायद/ समदुखी कोई/भटकती जिन्दगी आ/कक्ष को रंग दे/सुना सुचाधर गीत। वह नवयुग के नये आलोक में जीवन को अर्थ मिलने की कल्पना करते हुए जीवन की वास्तविकता को बोध हुए धैर्य धराता है। अर्थ जीवन को मिलेगा अब/नये आलोक में/उब्दिग्न मत होना तनिक भी/शोक में इसलिए कवि का अतीत के प्रति कोई मोह नहीं है। वह उसके शव को पीठ पर लादे हुए चलना पसंद नहीं करता। वह वर्तमान को सम्पूर्ण भावना से जीने-भोगने की प्रेरणा देता है। वर्तमान को/अतीत से मुकत करो/उसे सम्पूर्ण भावना से/जियो/भोगो/ वास्तविकता के/इस बोध से/कि हर अनागत/वर्तमान में ढलेगा। अनागत-असीम है। कवि देखता है। कि आज के मनुष्य दृष्टि-दोषों से संत्रस्त है। तणि सैकडो अर्थहीन व संगतिहीन पूर्वाग्रहों से ग्रस्त संदेह के धने अंधकार में परस्पर अजनबी-से देखते है। इन्हं सर्वत्र कड़वाहट सुलभ मालूम पड़ती है। और मधुरता दुर्लभ। यथार्थ की गहराई में प्रवेश करने पर कवि को समाज में सर्वत्र, घबराहट, झुंझलाहट, कृत्रिमता एवं मिथ्याडम्बर दृष्टिगोचर होते हैं। सर्वत्र/घबराहट प्रकट/जीवट विरलता/सर्वत्र झुझलाहट-प्रदर्शन कवि की कृत्रिम फीकी मुस्कराहट से बेहद चिढ़ है। वह बनावट पसंद नहीं करता, परनतु आज हर प्रग पर उसे उसी का सामना करना पड़ता है। इस विज्ञान युग में बृद्धि के उच्चतम शिखर पर पहुंच कर हमने देखा है कि हमारे लिए जीवन के सानतन सिद्धांत, शाश्वत मूल्य अर्थहीन हैं ह्रदय से संबंधित पूर्व-मानव का समस्त राग-बोध, उसके सम्पूर्ण कोमल-मधुर उद्‌गार अब हमारे लिए उपहासास्पद हैं पारस्परिक प्रणय-भावनाएं, विरह-वियोग जनित चेष्टाएं सब बचकानी हैं अस्वस्थ और निरर्थक हैं तथा मानव-इतिहास में हमारे लिए यह समय का सबसे बड़ा अपव्यय है। हमारे लिय आकर्षण-इंद्रिय-सुख की कामना का पर्याप्त हैं हाव-भंगिता-अभिनय का अभ्यास-गत स्वरूप, प्रेमालाप-कृत्रिम चमत्कारपूर्ण वाणी-विलास, मिलन... मात्र शूल इंद्रिय-सुख की प्राप्ति, स्मृति-ढोंग या अभाव की पीड़ा तथा प्रेम भ्रम, धोखा, आस्तित्वहीन, ढाई-अक्षर का शब्द-कोश में/ह्रदय/मात्रा एक माँस-पिण्ड है/जो रक्त-शोधन का कार्य करता है/तन की समस्त शिराओं को/ताजा रक्त प्रदान करता है।/उसकी धड़कन का रहस्य/हमारे लिए नितांत स्पष्ट है/कमजोर पड़ जाने पर/अथवा/गल-सड़ जाने पर/ हम उसको बदल भी सकते हैं। आधुनिक युग-बोध सूचक यह मार्मिक व्यंग्य कवि के यथार्थ गहराई में प्रवेश करने एवं उसकी पैनी दृष्टि का अदभूत उदाहरण हैं

वर्तमान युग अराजकता एवं अरक्षा का हैं विद्वेषों, कटु यातानाओं एवं अमंगल भावनाओं से परिपूर्ण इस युग ने मनुष्य को अस्त-व्यस्त कर रखा है। अत: कवि मनुष्य को संबोधित करते हुए कहता है। आओ/इसको बदले/गतिमान करें/ मल्लारराग से भर दे/ जलवाह/पवन संघातों से/नि: शेष करें/दिग्दाह। कवि को पूर्ण विश्वास हैं कि -हिमालय-सम/ सुदृढ़ व्यक्तित्व के सम्मुख/गरजता क्रूर अंचड़/राह बदलेगा/मरण का तीव्र धावन/तिमिर अंचड़/राह बदलेगा/ उसे मनुष्य के श्रम पर विश्वास हैं और उसकी यह पक्की धारणा है। कि श्रम के द्वारा हम अपने सभी सुख स्वप्नों को साकार कर सकते है। अत: बह कहता हैं- श्रम करेंगे तो/हमारे स्वप्न सब साकार होंगे/सुदृढ आचार होंगे। उन्मुक्त हो/सम्पन्नता सुख-शांति के/नव लोक में/जीवन जिएंगे हम/ सभ्यता-संस्कृति वरण कर/ज्ञानमय आलोक में/ प्रतिक्षण रहेंगे हम।

आज की घुटनमय जिन्दगी पर उसे आश्चर्य होता है। कि हम कैसे जीते हैं? पृथ्वी का क्षेत्रफल/चाहे कितना भी हो/हमें रहने को मिली है।/यह कब जैसी/कोठरी/जिसमें/जिन्दा होने का भ्रम होता है/जिसमें/खुद को मुर्दा समझ कर ही/बमुश्किल/जीया जा सकता है। जीवन की इन सारी विषमताओं से जुझते हुए

कवि हर व्यक्ति का जीवन समुन्नत करने तथा वर्ग-संघर्ष मिटा कर विश्व को शोषण से मुक्त करने के लिए प्रतिबद्ध है। हर व्यक्ति का जीवन/समुन्नत कर/धरा को/मुक्त शोषण से करेंगे/वर्गकों/या वर्ण है/अंतर मिटा कर/विश्व जन-समुदाय को/हम/मुक्त दोहन से करेंगें। वह विश्व में न्याय की स्थापना के लिए त्रस्त संसार को ही बदल डालने के लिए काटे-बद्ध है- न्याय-आधारित/व्यवस्था के लिए/ प्रतिबद्ध हैं हम/त्रस्त दुनिया को/बदलने के लिए/ सन्नछद हैं हम।

कवि की आस्था दृढ़ है। वह कर्म के द्वारा भाग्य-निर्माण में विश्वास करता है इसलिए प्रस्तुत संकलन में नव-निर्माण का स्वर सर्वत्र मुखर है। नवोन्मेध मे वह कहता है।-खंडित परजित/जिन्दगी को/सिर उठाओं/आ गया हूँ मैं। तुम्हारी जय सदृश/साथ्रक सहज विश्वास का/हिमवान। वह अनुभव करता है। कि भाग्य-बल का सूर्य तेजोवान द्वार पर दस्तक दे रहा हैं नव-युग का नव विहान होने वाला है। अत: उसे विश्वास हैं कि-जिन्दगी/इस तरह/टूटेगी नहीं/जिन्दगी/इस तरह/बिखरेगी नहीं। इस प्रकार कवि महेन्द्र भटनागर का स्वर अन्य कवियों के समान निरीह एवं त्रस्त नहीं है। उसमें आस्था एंव उत्साह का प्रबल पूट है। कवि मनुष्य की अद्योगित पर केवल हाय-हाय नहीं करता, बल्कि नव निर्माण एवं नव-सृजन द्वारा उसके पूरे परिवंश को ही बदलने के लिए कटिबद्ध है वह जीवन से निराश व हताश नहीं है। बल्कि उसे उन्नत बना कर इच्छित सुख प्राप्त करने के लिए पहुंचने एवं उनकी सूक्ष्म-दृष्टि का दस्तावेज हैं जीवन और जगत को पहचानने की जो पैनी दृष्टि सूक्ष्म-दृष्टि का दस्तावेज हैं जीवन और जगत को पहचानने की जो पैनी दृष्टि महेन्द्र भटनागर को प्राप्त है, यह सर्वथा सराहनीय हैं। ध्वंसावेशषों पर निर्माण के बीज बोना तथा उससे कल्पना के फलफूलों से लदा वृक्ष पैदा करना कवि के अदम्य साहस, निष्ठा एवं आशवादिता का पृष्ट प्रमाण हैं भाषा, भाव, प्रवाह, छंद आदि सभी दृष्टियों से प्रस्तुत काव्य-कृति विशिष्ट बन पड़ा है।

●

चिंतन की रेखाएं

डा. ऋषभदेव शर्मा

प्रो॰ सियाराम तिवारी की नई पुस्तक चिंतन की रेखाएँ में उनके अलग अलग अवसरों पर लिखित आलोचनात्मक निंबध तथा अन्य आलेख सम्मिलित हैं इन रेखाओं से उनके लेखन के पाँच आयाम उभरते हैं।

पहला आयाम है समालोचना जिसके 14 समीक्षात्मक आलेख है। लेखक ने साहित्य तथा समाज की अन्योन्याश्रिता का प्रतिपादन करते हुए माना है कि साहित्यकार अपनी रचना में समाज को प्रतिबिंबित ही नहीं करता अपितु समाज का विधान भी करता है। वे साहित्य पर राजीनति के हावी होने को अश्रेयस्कर मानते हैं। और चाहते हैं कि साहित्य मनुष्य को बस मनुष्य के रूप में देखे। तुलसी, कबीर, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, प्रसाद, बनारसी दास चतुर्वेदी, दिनकर और रमानाथ त्रिपाठी के साहित्य के पक्ष विशेष पर केंद्रित आलेखों के अलावा हिंदी पुस्तक समीक्षा की स्थिति हिंदी साहित्य इतिहास के पुनर्लेखन का समाचार तथा कल्पना के नवलेखन विशेषांक पर भी लेखक ने दृष्टिपात किया है। साहित्येतिहास विषयक लेख में हिंदीत्तर प्रांतों के हिंदी साहित्य के इतिहास पर भी चर्चा हो सकती है। कल्पना पर केंद्रित लेख उस पत्रिका के 221 वें अंक में छपा था।

इस कृति का दूसरा आयाम है लोकभाषा और साहित्य। इसमें 7 आलेख हैं। हिंदी और उसकी बोलियाँ, हिन्दी लोक भाषाएं एवं क्षेत्रीय भाषाएँ, बज्जिका और मगही, बज्जिका के होली गीत, लोकचेतना में नारी, मगही लोकगीतों में पारिवारिक भावना तथा मगही की कुछ पारिवारिक लोकोक्तियाँ। इनसे लेखक के भाषा वैज्ञानिक और लोकसाहित्य रूप के दर्शन होते हैं।

तीसरा अध्याय है टिप्पणियाँ यहाँ तुलसीदास, रामचारितमानस, शिवपूजन सहाय, रामवृक्ष बेनीपुरी, राजेंद्र प्रसाद, माधवराव सप्रे, इंद्र बिद्या वाचस्पति, संपूर्णानंद, तथा डॉ. रघुवीर जैसी साहित्य तथा अन्य क्षेत्रों की विभूतियों एवं कृतियों पर विचार प्रस्तुत किए गए हैं। सूत्ररूप में दी गई एक टिप्पणी का अंश दृष्टव्य है।

कथाकार और शैलीकार के रूप में शिवपूजन सहाय सदा स्मरणीय रहेंगे। इनकी प्रसिद्ध और अनुपम कहानी '*कहानी का प्लॉट*' हिंदी की आरंभिक कहानियों में से एक है जिसके बिना कोई भी कहानी-संकलन अधूरा लगता है। देहाती दुनिया, हिंदी का ही नहीं, किसी भी भारतीय भाषा में लिखा गया पहला आंचलिक उपन्यास है। इनकी रचना हिंदी गद्य पर इनके अधिकार का साक्ष्य देती हैं।

चौथा आयाम है संस्मरण-श्रद्धांजलि जिसमें राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह, डॉ. सिद्धेश्वर वर्मा, डॉ. श्री कृष्ण सिंह, हरिवंश राय बच्चन, पं. उदय शंकर शास्त्री और पं. रामनारायण शास्त्री का सारस्वत स्मरण किया गया है। पाँचवां आयाम है साहित्येत्तर। यहाँ धर्म, राजनीति विश्व बंधुत्व से लेकर युवा वर्ग तक पर 6 आलेख संकलित हैं। ये आलेख लेखक के सामाजिक राजनैतिक सरोकार तथा एक चिंतक के रूप में उनकी विश्व-दृष्टि से परिचित कराने में समर्थ हैं।

निष्कर्षत: चिंतन की रेखाएँ के माध्यम से डॉ. सियाराम तिवारी एक समाजचेत्ता साहित्य चिंतक के रूप में पाठक के मानस पटल पर अंकित हो जाते हैं।

राष्ट्रपति ने जेएनयू की तुलना नालंदा वि.वि. से की

राष्ट्रपति डा. एपीजे अब्दुल कलाम ने कहा कि हरेक संस्थान का एक स्पष्ट दृष्टिकोण होना चाहिए। इसके बिना कोई भी संस्थान अपना अस्तित्व बरकरार नहीं रख सकता है। जेएनयू से अतयंत प्रभावित डा. कलाम ने इसकी तुलना नालंदा विश्वविद्यालय से की। वह आज यहां जेएनयू में आयोजित एक विशेष व्याख्यान समारोह में बोल रहे थे। जेएनयू प्रशासन के विशेष आग्रह पर वह इस कार्यक्रम में आये थे।

विजन-2020 के स्वप्नद्रष्टा एवं देश के राष्ट्रपति डा. एपीजे अब्दुल कलाम जेएनयू में हर ओर फैली हरियाली से अत्यंत अभिभूत हुए। अपने व्याख्यान में इसका जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि जेएनयू के छात्र भी यहां की हरियाली की तर्ज पर अत्यंत कुशाग्र हैं और उनके सोचने का ढंग भी निराला है। उन्नति के लिए यही जरूरी है। उन्होंने कहा कि मैं राष्ट्रपति बनने के बाद बिहार के नालंदा विश्वविद्यालय गया, जिसने मुझे अत्यंत प्रभावित किया। जिस तरह से प्राचीनकाल में शिक्षा का गढ़ नालंदा था, उसी तरह मौजूदा दौर में जेएनयू हैं

डा. कलाम ने मूल्य आधारित शिक्षा, तकनीकी ज्ञान, आध्यात्म एवं विज्ञान के परस्पर सम्बन्धों पर प्रमुख रूप से अपने विचार व्यक्ति किये। उन्होंने कहा कि हमें तरक्की के लिए मूल्य आधारित शिक्षा और बेहतर संसाधन समाज को उपलब्ध कराने होगे। ये संसाधन तकनीकी उन्नति के माध्यम से ही संभव हैं। क्योंकि भविष्य में संसाधन कम हो जाएंगे तब तकनीकी विकास ही उन्नति में सहायक होगा। इसलिए हमें ई-गवर्नेंस, टेली-एजुकेशन और टेली-मेडिसिन को बढ़ावा देना चाहिए।

राष्ट्रपति ने अपने चिर-परिचित अंदाज में युवाओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि आपकी सोच आपकी पूंजी है। औश्र यही देश की उन्नति में सहायक है। इसलिए भारत को बौद्धिक समाज में तब्दील होने का कोई अवसर नहीं छोड़ना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में शिक्षकों की भूमिका को रेखांकित करते हुए शिक्षकों को राष्ट्रनिर्माता बताया। डा. कलाम ने महिला एवं बाल शिक्षा को समाज के व्यापक विकाास के लए आवश्यक बताया। उन्होंने कहा कि 5 से 17 साल की उम्र शिक्षा के लिहाज से अत्यंत महत्वपूर्ण है। और यही समय है जिसमें छात्र अपना बौद्धिक विकास कर सकते हैं। महिला शिक्षा के माध्यम से ही परिवार नियोजन जैसे कार्यक्रमों को भी बढ़ावा दिया जा सकता है।

जेएनयू में आज उन्हें सुनने पहुंचे छात्रों, शिक्षकों व बुद्धिजीवियों की रिकार्ड भीड़ के समक्ष डा. कलाम ने अपने व्याख्यान में सामाजिक, शैक्षणिक और आर्थिक आदि सभी पहलुओं पर खुलकर विचार व्यक्त किये। आर्थिक पहलू को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि विकसित देश को विकसित बने रहने के लिए निरंतर संघर्षशील रहना पड़ता हैं विकासशील देशों को विकसति बनने के लिए एक प्रतियोगी भाव रखना होगा। उन्हें भी विकसित देशों के बराबर उत्पादन करना होगा। इस प्रतियोगिता में जो आक्रामक ढंग से आगे बढ़ेगा वही विजयी होगा।

डा. कलाम ने देश की विभिन्न योजनाओं एवं अंतराष्ट्रीय मुद्दों पर भी प्रकाश डालते हुए मौजूदा दौर में विश्व शांति के लिए एक अंतराष्ट्रीय संगठन की आवश्यकता बतायी। इसके अलावा नदियों को परस्पर जोड़ने की योजना को देश की उन्नति के लिए जरूरी बताय। उन्होंने 1998 के परमाणु परीक्षण के बाद देश पर लगे आर्थिक प्रतिबंधो की चर्चा करते हुए कहा कि इसके बावजूद देश कहीं कमजोर नहीं हुआ। डा. कलाम जेएनयू के छात्रों से अत्यंत प्रभावित हुए और उन्होंने कहा कि आज अगर ये छात्र इमेल पर सवाल पूछेंगें तो मैं उसका 24 घंटे के अंदर ही जवाब दे दूंगा। डा. कलाम के व्याख्यान को सुनने के लिए आज कई सालों के बाद जेएनयू में छात्रों, शिक्षकों वे बुद्धिजीवियों की रिकार्ड भीड़ जुटी। इस मौके पर कुलपति गोपाल कृष्ण चड्ढा ने धन्यवाद ज्ञापित किया और राष्ट्रपति को विश्व का स्वपनद्रष्टा बताया।

MAHESH HOMOEPATHIC LABORATORY
&
GERMAN HOMOEO STORES
Saket plaza, Jamal Road,
Patna-800001
Ph:(0612) 2238292 (O) 2674041 (R)
Offers a wide range of mother Tinchers,
Dillutin Biochemic Tablet patents, Globels

Dr. Mahesh Prasad
D.M.S. (Patna)

Dr. Arun kumar
D.H.M.S (Patna)

Spcialist in chronic Diseases

पारदर्शिता

चितरंजन लाल भारती

वस्तुत: यह शब्द जितना आकर्षक दिखता है- वह है नहीं। व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में ऐसे क्षण भी आते हैं, जब कुछ बातें गोपनीय रखनी होती हैं। स्वाभाविक ही तब यहीं से विवाद भी शुरू होता है। मनुष्य मूलत: एक जिज्ञासू प्राणी है। इसी जिज्ञासा को हम पारदर्शिता के द्वारा दूर करने का प्रयास करते हैं। किसी भी वस्तुस्थिति अथवा कार्य में पारदर्शिता का अर्थ है, उसे सभी लोग आसानी से देखें, समझें और जान लें। जब ऐसी पारदर्शिता रहेगी, तो उसमें स्वच्छता रहेगी। यदि स्वच्छता न भी रहे, तो उसे लाने का अवश्य प्रयास किया जायेगा और यही कारण है कि पारदर्शिता समय की माँग बन गई है। वर्तमान समय लोकतंत्र का है। यहाँ सभी को यह हक बन जाता है कि वह सार्वजनिक रूप से चल रहे क्रियाकलापों को देखें, समझे तथा जाने। ससंद में चल रही गतिविधियों को दूरदर्शन पर दिखलाना, इसका सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। यह पारदर्शिता ही तो है, जिसके कारण सार्वजनिक स्तर पर कार्यरत लोग अपनी छवि और कार्यों को ठीक रखते हैं। उसे सुधारते और बेहतर करते हैं। इस पारदर्शिता के बल पर ही पारस्परिक समन्वय, सहयोग और सहभागिता बढ़ती है और यह हमें प्रगति और विकास के रास्ते पर अग्रसर करता है। पारदर्शिता का यही अर्थ है कि व्यक्ति हो अथवा व्यवस्था, वह जो करे, वह सबको समझ में आए। सबको पता चले कि क्या कुछ चल रहा है या क्या कुछ चलनेवाला है, इससे भले ही थोड़ा बहुत बहस अथवा विवाद की स्थिति बने, अंत में सारा कुछ सही हो जाता है, क्योंकि वाद-विवाद से ही नए विचार उत्पन्न होते हैं। यदि कहीं कोई कमी अथवा गलती रहती है, तो उसे दूर किया जा सकता है। संपूर्ण रूप से तब कार्य सही स्थिति में संपन्न होते हैं जिससे प्रगति होती है। विकास का रथ द्रुत गति से आगे बढ़ता है। और इसका लाभ सिर्फ व्यक्ति और व्यवस्था तक ही सीमित नहीं रहता, बल्कि इसका प्रभाव पूरे समाज, राष्ट्र और संपूर्ण मानव समुदाय पर भी पड़ता है।

पारदर्शिता, आज समय की माँग है। पारदर्शिता के आधार पर व्यर्थ संशय और विवादों से मुक्ति पाई जा सकती है। पारदर्शिता के बल पर ही विश्वसनीयता बनती और बढ़ती है। हम जितने भी महापुरुषों के जीवन को देख लें, उसमें एक पारदर्शिता अवश्य दिखाई पड़ती है। उनके सोच और कथनी-करनी में कहीं कोई भेद नहीं होता था। यही कारण है कि उन्हें अनायास ही विपुल मात्रा में समर्थक और प्रशंसक मिल जाते थे।

अब यह पारदर्शिता की माँग संस्थानों में भी की जाने लगी है। जिस संस्थान के कायदे-कानून जितना ज्यादा सरल और स्पष्ट होते हैं, वहाँ की साख और वहाँ के बने समान की माँग, उसी अनुपात में बढ़ जाती है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों की चहुँमुखी प्रगति का एक महत्त्वपूर्ण कारण उनकी पारदर्शिता है। यह पारदर्शिता जिन देशों में जितनी ही ज्यादा दिखाई देती है, वह उतना ही प्रगतिशील माना जाना जाता है। यूरोपीय राष्ट्र और अमेरिका-जापान आदि की शासन व्यवस्था में पारदर्शिता है। यह पादर्शिता जिन देशों मे जितनी ही ज्यादा दिखाई देती है, वह उतना ही प्रगतिशील माना जाना जाता है। यूरोपीय राष्ट्र और अमेरिका-जापान आदि की शासन व्यवस्था में पारदर्शिता है तभी तो वे सफलता के शिखर स्पर्श कर रहे हैं। निष्कर्षत: व्यक्ति हो अथवा समाज, संस्थान हो अथवा राष्ट्र सभी के लिए पारदर्शिता आवश्यक है। ***संपर्क:*** *क्वा.नं.-246, एचीसी न्यू टाउनशिप, पो. पंचग्राम असम 788802 फोन-(03845)273173*

फौजी की कहानी: उसी की जुबानी

राजनेता, नौकरशाह और फौजी जनरल चाँड़ सरने के बाद फौजियों को कूड़ादानी में फेंक देते हैं। बिहार में एक बार 1971 के युद्ध में सम्मानित एक कैप्टन ने एस. पी. के लिए फर्स्टक्लास वेटिंग रूम खाली करने में ना-नुकूर की तो उसे नंगा करके प्लेटफार्म पर घसीटा गया, जूतों और लातों से पीटा गया, पहचान पत्र छीन लिया गया, सारे समान को फेंक दिया गया और उसके शरीर पर पेशाब किया गया।

बिहार ही क्यों, यह घटना तो दक्षिण भारत की है। जुए में सफेदपोश नौकरशाह एक फौजी फील्ड अफसर से मार खा गए। नौकर शाह ने दिल्ली लौटकर फौजी अफसर को षड्यंत्रपूर्वक चोरी के मामले में फंसा दिया। इसी प्रकार सुरक्षा अधिकार भी सैनिकों के शोषण में पीछे नहीं हैं। राजनेताओं का तो कहना ही क्या? यद्यपि वी पी सिंह ने कहा कि सैनिक देश की सीमाओं पर लड़ने जाते हैं लेकिन जब बुजूर्ग हो जाते हैं तो सरकार उनकी सुध नहीं लेती, तथापि इस बयान से हालात में कुछ खास सुधार नहीं हुआ।

निहित स्वार्थों के लिए नौकरशाह द्वारा फौजियों को बदनाम करने की साजिशें आम हैं। यह स्थापित करने का प्रयास किया जाता है। कि भारतीय फौज कभी भी तख्तापलट की साजिश कर सकती है जबकि सच्चाई यह है कि हमारी सेना अपनी बेइज्जती कराकर भी जनता द्वारा निर्वाचित नेता का सम्मान करती है चाहे वह नेता अपराधी ही क्यों न हो!

यह सवाल भी महत्पूर्ण है। कि भारत वर्ष में गरीब का बेटा ही क्यों फौजी बनता है। इंदिरा गाँधी, लाल बहादुर शास्त्री, विश्वनाथ प्रताप सिंह, सोनिया गांधी, मेनका गाँधी, अटलबिहारी वाजपेयी, लालकृष्ण आडवाणी, मुलायम सिंह, चरण सिंह, ज्योति बसु में से कोई भी राजनेता ऐसा नजर नहीं आता जिसका बेटा फौज के दरवाजे का इंतजार करता हो राजनेता तो फौजियों को धोखा भर देते है। जैसा उन्होंने 1971 के युद्ध के समय से लापता 54 भारतीय वीरों को भुलाकर किया। यही नहीं, चुंकि भूतपूर्व सैनिक वोट बैंक में नहीं समझे जाते और बिकाऊ माल भी नहीं हैं तथा नेताओं के आचरण के विपरीत कथनी और करनी करते हैं इसलिए नेता उन्हें किसी का काबिल न समझकर कूड़े के ढ़ेर में फेंक देते हैं

ये तमाम तथा और भी ढ़ेर सारी फौज, प्रशासन और राजनीति के तिकोने संबंध की सच्चाइयाँ कर्नल शिव शंकर राय की पुस्तक फौजी की कहानी, उसी की जबानी, में अनावृत की गई है। लेखक ने इंडियन मिलिटरी अकादमी, देहरादून से कमीशंड होकर 1965 में सेकेंड लेफ्टिनेंट के रूप में भारतीय सेना में प्रवेश किया। वे 1991 में कर्नल पद से सेवानिवृत हुए। अपने इस ग्रंथ में उन्होंने फौज के अंदर की अनेक बातों का भी खतरनाक खुलासा किया है। जैसे कि सैनिकों और अर्द्धसैनिकों को रिश्वत के आधार पर रखा जाता है या रक्षा मंत्रालय देश की रक्षा से मजाककर रहा है, या कोर्ट-मार्शल न्याय की तराजू पर खरा नहीं उतरता और वहाँ भी कुछ-कुछ होता है। इस कृति के संबंध में प्रो॰ सियाराम तिवारी का यह मत सर्वथा सटीक है कि यह पुस्तक किसी खोजी की रिपोर्ट नहीं बल्कि इसमें आँखों देखा हाल है। इसमें भोगे हुए जीवन की यथार्थता और प्रामाणिकता है। वर्णनशैली इतनी जोरदार है कि यह पाठक को उद्वेलित किए बिना नहीं रहेगी। हो सकता है कि राजनीति और प्रशासन को भी उद्वेलित कर दे।

People's Co-Operative House Construction Society Ltd. Kankar Bagh, Patna-800020

समिति में निम्न आय वर्ग के कुल १७३० सदस्य हैं जिनमें १६०० सदस्यों को लोहियानगर, कंकड़बाग में स्थित विभिन्न सेक्टरों में भूखंड आवंटित हैं तथा शेष को जगनपुरा में भूखंड आवंटित हैं। समिति के द्वारा प्रत्येक सदस्य से अभियान चलाकर नौमिनी फार्म भरवाया जा रहा था, परन्तु बहुत से सदस्यों के द्वारा अभी भी नौमिनी फार्म नहीं भरा जा सका है। अतः वैसे सदस्यों से अनुरोध है कि अपना नौमिनी फार्म समिति कार्यालय से प्राप्त कर शीघ्र भरकर जमा कर दें।

समिति अपने सदस्यों के पुत्र-पुत्री, पौत्र-पौत्री, भाई-बहन एवं स्वयं के विवाहोत्सव तथा संबंधित प्रयोजनों के लिए आधे दर पर सामुदायिक भवन प्राथमिकता के आधार पर उपलब्ध करती है।

समिति के सदस्यों की सुविधा के लिए स्ट्रीट लाइट, सड़क मरम्मत, मैनहोल सफाई, पार्क निर्माण एवं अन्य विकास कार्यों को भी निर्धारित नियमानुसार सम्पन्न किया जाता है।

एल.पी.के.राजगृहार	सिद्धेश्वर प्रसाद	प्रो. एम.पी. सिन्हा
अध्यक्ष	उपाध्यक्ष	सचिव

भोजपुरी गीतों के बादशाह 'विनय बिहारी'

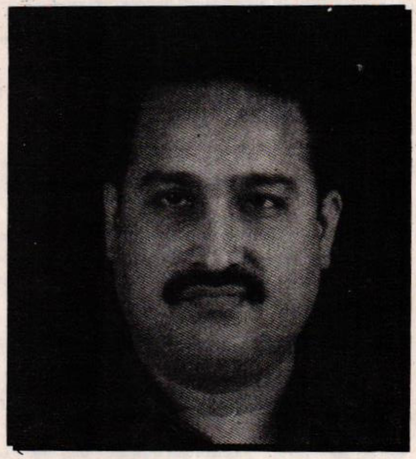

भोजपुरी के सुप्रसिद्ध गीतकार श्री विनय बिहारी का नाम आज ओडियो, विडियो और फिल्मी क्षेत्र में जाना-पहचाना नाम हो गया है। भोजपुरी एवं हिंदी फिल्मों, धारावाहिकों एवं ओडियो, विडियो कैसेट के लिए हजारों गीत लिख चुके श्री विनय बिहारी ने कई ओडियो में अपना स्वर देकर, कई फिल्मों के लिए कहानी व डायलॉग लिखकर और कई फिल्मों में अभिनय कर बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया है।

बिहार के पश्चिम चंपारण जिला के जोगा पट्टी थाना के मछड़गाँवा बाजार मे सितम्बर 1968 ई॰ को श्री परमानंद सिंह के पुत्र के रूप में जन्में और पटना विश्वविद्यालय से स्नातक श्री विनय बिहारी ने वर्ष 1968 से अब तक छः सौ ओडियो कैसेट्स, पच्चीस भोजपुरी फिल्में और पन्द्रह हिंदी फिल्मों के लिए लगभग चार हजार गीत लिखकर एक नया कीर्तिमान बनाया है।

यहाँ प्रस्तुत है श्री विनय बिहारी से विचार दृष्टि के सांस्कृतिक प्रतिनिधि डॉ॰ अरुण कुमार गौतम की पटना में हुई बातचीत के कुछ अंश-

आप के लिखे गीतों का पहला ओडियो कब और किसके स्वर में निकला?

विनयः वर्ष 1968 ई॰ चंपारण के बाबू नाम से। गायक मैं स्वयं था।

आपके गीतों के छः सौ कैसेट्स में टी सीरिज के कितने ओडियो निकले हैं?

विनयः लगभग चार सौ।

आपने किस-किस भोजपुरी फिल्मों में गीत लिखा है?

विनयः अभी हाल में आयी फिल्में हैं गंगा के पार संईया हमार, बलमा बड़ा नादान, लागी छुटे ना, सुहागन बनादऽ सजना हमार, गंगा जइसन पिरितिया हमार आदि।

आपने किस-किस हिंदी फिल्मों के लिये गीत लिखें हैं?

विनयः चार धाम, सुनो ससुर जी, खतरों के खिलाड़ी, चालबाज, चैम्पियन अर्जुनदेवा, माहिमा आदि।

बिहार के शासन व्यवस्था की बखिया उघेड़ते आपके जनवादी गीतों ने काफी तहलका मचाया है। प्रतिबंध तक लगने की बात हुई है। वे कौन-कौन से कैसेट्स हैं, और उनके गायक कौन-कौन हैं?

विनयः बिहार नाही सुधरी, बी.ए. के बकरी चरावता और बवुआ एम.ए. कइले बा। गीतों के गायक हैं आनंदमोहन पाण्डेय, सुनील छैला बिहारी, कल्पना और तानू शाक्या। बिहारी ना ही सुधरी, झारखंड अलग होने के तुरतं बाद निकला था। मुख्य गीत था अलगा भइल झारखंड, अब खइहऽ शकरकंद। इसी कैसेट पर लालू जी प्रतिबंध लगाने की बात बोले थे और मुझे जेल भिजवाने की धमकी दी। किंतु हुआ कुछ नहीं।

आपके भक्ति गीत के कितने कैसेट्स निकले है?

विनयः लगभग साढ़े तीन सौ।

आपके निर्गुण गीतों के कौन-कौन से ऑडियो निकले हैं और किसके किसके स्वर में?

विनयः साड़ी आइल ससुराल से (भरत शर्मा व्यास) और कइसे गवनवा जाई (आनंद मोहन पाण्डेय) के स्वर में।

आपने अभिनय कौन सी फिल्म में किया है?

विनयः सजना के अँगना में।

आपके स्वलिखित बेहद पसंदीदा गीत कौन हैं?

विनयः निर्णय करना बड़ा मुश्किल है। फिर भी जिनगीहउ रेक्शा के पहिया' (फिल्म खुब होई मिलनवा हमार; बहुत अच्छा गीत है।

आपके गीतों के प्रसिद्ध गायक-गायिका कौन-कौन हैं?

विनयः मनोज तिवारी, आनंद मोहन पाण्डेय, भरत शर्मा व्यास, सुनील छैला बिहारी, कल्पना और तृप्ति शाक्या।

हुआ नसीबन तेरे लिए, और फिर चोली के पीछे क्या है, दूसरे गीत शरों ने लिखे हैं कोई माने या न माने किन्तु यह सच है कि आज अश्लील गीत श्रोताओं द्वारा पसंद किये जा रहे हैं और कम्पनी को व्यवसाय की दृष्टि से गीत चाहिए। कैसेट निर्माता या फिल्म निर्माताओं की इच्छा को ध्यान में रखते हुए हमें गीत लिखना पड़ता है। में अपने को एक गीतकार मानता हूँ, साहित्यकार नहीं और गीत लिखना मेरा व्यवसाय है।

भोजपुरी फिल्म ससुरा बड़ा पइसावाला, की सफलता के विषय में आप क्या कहेंगे?

विनयः यह एक कॉमेडी फिल्म है और मेरे जानदार गीतों की वजह से यह एक ऐतिहासिक फिल्म साबित हुई है। सिल्वर जुबली मनाई गई। अच्छा व्यवसाय हुआ है।

आप कहानी-संवाद लेखन, अभिनय निर्देशन और गायन भी करते हैं फिर-आप का नाम केवल गीतकार के रूप में ही क्यों है?

विनयः काम तो इस क्षेत्र में मैं कई तरह के करता हूँ किन्तु चर्चित केवल गीतकार के रूप में ही रहना चाहता हूँ और किसी रूप में अपना नाम आगे नहीं रखता हूँ।

अब तक आपको कौन-कौन से सम्मान-पुरस्कार मिले हैं?

विनयः मुझे कोई खास पुरस्कार या सम्मान नहीं मिल सका है। पटना की एक संस्था से 'कलाश्री' सम्मान के अलावा राज्य सरकार या भोजपुरी संस्थाओं से कोई सम्मान पुरस्कार नहीं मिल सका है। ऐसे पुरस्कारों के प्रयास में मैं कभी नही रहता। ●

भाषा अभिव्यक्ति का साधन है- पांडित्य का साध्य नहीं

संजय जोशी

हम सभी इस तथ्य से सहमत होंगे कि भाषा उतनी ही पुरानी है जितनी मानव सभ्यता। मानव सभ्यता द्वारा युगों से संपादित यात्रा में भाषा ने भी संकेत, ध्वनि एवं शब्द रूपी क्रमिक परिवर्तन के तौर पर विकास यात्रापूर्ण की है एवं सदा ही अभिव्यक्ति के अमोध साधन के रूप में प्रयुक्त होती रही है। इतना ही नहीं भाषा किसी भी संस्कृति-विशेष का अभिन्न संघटक है जिसके बिना संस्कृति की कल्पना संभव नहीं है। विगत हजारों वर्षों में भाषा निरन्तर विभिन्न प्रयोगों से गुजरती रही है एवं असंख्य विद्वानों, मनीषियों ने भाषा का प्रयोग अभिव्यक्ति के अतिरिक्त अन्य उद्देश्यों के संपादन हेतु भी किया है। किन्तु क्या भाषा उनके अन्य उद्देश्यों के संपादन में सहायक सिद्ध हुई है? अधिकारिक तौर पर कुछ भी कहना कठिन है। किंतु इतना निश्चित ही कहा जा सकता है कि भाषा के ऊपर होते रहे निरंतर प्रयोग एवं पड़ते रहे थपेड़े उसकी अभिव्यक्ति का साधन होने के गुण को लेश मात्र भी प्रभावित नहीं कर सके एवं जब-जब ऐसा प्रयास किया भी गया तो इतिहास साक्षी है कि सामाजिक चेतना ने उसका विरोध कर भाषा के साथ इस खिलवाड़ को कभी भी स्वीकार नहीं किया। भाषा की सत्ता सार्वभौमिक है, जिसे मुठ्ठी भर हाथों में कभी भी केन्द्रित नहीं किया जा सकता। भाषा सर्वहारा बहुजनों के कंठ से निकलकर विद्वानों एवं विचारकों की लेखनी से प्रवहित होती है, न कि विद्वानों एवं विचारकों की लेखनी से निकलकर जन-सामान्य के विचार-विनिमय का माध्यम बनती है।

अतीत से सबक: संस्कृत, जो कि हमारे देश की विभिन्न भाषाओं की ही नहीं, अपितु विदेशी भाषाओं जैसे जर्मन आदि की भी जननी है, एक जनभाषा के रूप में स्थापित क्यों नहीं हुई एवं भाषाई सार्वभौमिकता क्यों नही प्राप्त कर सकी? क्योंकि वह जन-सामान्य के कंठ से आविर्भूत अभिव्यक्ति की सरिता न होकर विद्वानों एवं विचारकों के पांडित्य परितोष का साधन थी। वह जन सामान्य का प्रतीक न होकर वर्ग-विशेष का प्रतिनिधित्व कर रही थी। हमें यह जानकर आश्यर्च नहीं होना चाहिए कि जिस समय संस्कृत का बोलबाला था उस समय भी जन सामान्य के विचार विनिमय अथवा अभिव्यक्ति का माध्यम प्राकृत भाषा थी। संस्कृत तो मात्र एक वर्ग-विशेष का प्रतीक बनकर संग्रहणीय वस्तु के रूप में पुस्तकों की शोभा बढ़ा रही थी। इस तरह यह जन-सामान्य के प्रतिनिधित्व के अभाव में समाज में स्थापित न होकर पांडित्य प्रदर्शन का अखाड़ा बनकर रह गई। बाकि अन्य दूसरी बोलियाँ एवं भाषाएँ जन-सामान्य के बीच से उद्धृत होकर समाज में स्थापित हो गई। आज हिन्दी भाषियों, हिन्दी प्रचारकों, विद्वानों एवं विचारकों को चाहिए कि वे संस्कृत भाषा के साथ घटित इस सत्य से सबक लेकर जन सामान्य द्वारा प्रयुक्त भाषा का प्रयोग ही अपने लेखन एवं कृतियों के संपादन में करें तथा भाषा को अभिव्यक्ति का साधन ही बना रहने दें न कि पांडित्य प्रदर्शन का साध्य।

सहिष्णुता का अभिप्राय: दुनिया की कट्टर से कट्टर भाषाओं ने सार्वभौमिक शब्दों को जैसा का तैसा स्वीकार कर लिया चाहे वे शब्द किसी भी भाषा के क्यों न रहे हो, फिर हम टेलीफोन को दूरभाष कहलवाने पर क्यों तुले हैं? सुबह उठकर जीवन की नित्य क्रियाओं में टूथ ब्रश एवं मुँह धोने जैसी नितांत सहज अभिव्यक्तियों का प्रयोग अपने निजी जीवन व्यवहार में धड़ल्ले से करने वाले लोग साहित्य संपादन के समय दँतकुंची एवं मुख प्रक्षालन जैसी अभिव्यक्तियों में भटककर क्या अपने पांडित्य प्रदर्शन की पिपासा को भाषा के माध्यम से बुझाने का तुच्छ प्रयास नहीं कर रहे हैं? निस्संदेह यदि समय रहते हमारी इस प्रकृति पर अंकुश नही लगा तो हम हमारी प्यारी भाषा हिन्दी को एक सार्वजनीन भाषा के रूप में भला कैसे स्थापित कर पाएंगे। हम जन सामान्य में रूढ़ हो चुके शब्दों को ग्रहण करने के प्रति इतने असहिष्णु क्यों हैं? क्या अंग्रेजी भाषा ने हमारी हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं से शब्द ग्रहण नहीं किए एवं क्या आज भी अंग्रेजी द्वारा हिंदी के नए-नए शब्द ग्रहण नहीं किए जा रहे हैं? किसी काल विशेष की भाषा तत्कालीन जन सामान्य की परिस्थिति एवं परिवेश के अनुसार निर्धारित मान्यताओं एवं ग्राहता पर ही आधारित रहती है न कि विद्वानों या लेखकों द्वारा जनता पर थोपी जा सकती है। क्योंकि भाषा सदैव जन सामान्य से वर्ग विशेष की ओर प्रवृत होती है, न कि वर्ग विशेष से जन सामान्य में प्रसारित होती है।

निष्पत्ति एवं समाधान: सहिष्णुता से मेरा तात्पर्य भाषाई भ्रष्टता से कतई नहीं है। मुझे डर है कि कहीं मेरे वरिष्ठ हिन्दीकर्मी और विद्वान लेखक सहिष्णुता को भ्रष्टता का पर्याय न समझ लें। आज यदि हम वास्तव में हिन्दी को राजभाषा, राष्ट्रभाषा एवं भारत की सार्वभौमिक भाषा के रूप में स्थापित करना चाहते हैं तो हमें उसके नितांत सार्वजनिक एवं सुगम स्वरूप को ग्राह्य करना होगा। उसे सरल एवं बोधगम्य बनाना होगा। भाषायी कट्टरवादिता का मोह छोड़कर सहिष्णुता को अपनाना होगा एवं ट्यूबलाइट को नलिका-प्रकाश अथवा बैंक को अधिकोष एवं चेक (ड्राफ्ट) को धनादेश की संज्ञा देने संबंधी दुराग्रह से बचना होगा और वहीं दूसरी ओर अन्य भाषाओं के वे शब्द, जो जन सामान्य में रूढ़ हो चुके हैं उन्हें सहिष्णुता के साथ नितांत सहज एवं खुले दिल से अपनाना होगा। तभी हमारी हिन्दी को अभिव्यक्ति का साधन होने का मौलिक अधिकार प्राप्त होगा अन्यथा हमारी प्यारी भाषा हिन्दी महज पांडित्य प्रदर्शन का साध्य बनकर किताबों में ही दफन हो जाएगी।

संपर्क: फ्लैट नं.-के 10, आशियाना अपार्टमेंट, नं. 9, वीनस कॉलोनी, दूसरी क्रॉस स्ट्रीट, अलवरपेट, चेन्नई-18 (तमिलनाडु)

DENSA

PHARMACEUTICALS PVT. LTD.

Fact. Add. :Plot No. 10, Dewan&Sons Udyog Nagar,
Taluka Palghar, Dist. Thane, MAHARASHTRA

Phone No.: (952525) 55285èk54471, Fax: 55286

&

DANBAXY

PHARMACEUTICALS PVT. LTD.
(SOFT GELATIN)

Fact. Add: Plot No. K-38, MIDC Tarapur,

Boisar, Dist. Thane, MAHARASHTRA

Office Address:

1, Anurag Mansion, Ashokvan,
Shiv Vallabh Raod, Dahisar (E),
Mumbai-400068
Phone No.: 8974777, Fax: 8972458
MR. DEVENDRA KUMAR SINGH, C.M.D

हरियाणा को छोड़ बिहार एवं झारखंड में खंडित जनादेश

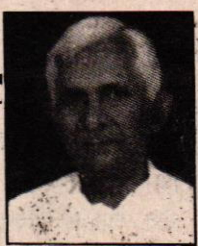

सिद्धेश्वर

राजनीतिक दलों में सत्ता की प्रबल लालसा और उसे येन-केन-प्रकारेण अपने हाथ में रखने का एकसूत्रीय कार्यक्रम वर्षों से इस देश में संस्थानों के लिए चुनौती है। इसके बावजूद जब-जब चुनौती पेश हुई तो लोकतांत्रिक मूल्यों ने अपनी ऊर्जा दर्शाई। जनता और संचार माध्यमों ने भी अपनी भूमिका निभाई है। फरवरी 2005 में बिहार तथा झारखंड विधानसभा के चुनावों में वहाँ की जनता ने जो जनादेश दिया, वह किसी दल विशेष के पक्ष में नहीं रहा। बिहार के खंडित जनादेश ने तो खास-तौर पर यह स्पष्ट कर दिया कि राज्य की जनता ने किसी भी दल अथवा गठबंधन को सत्ता के लिए उपयुक्त नहीं समझा। राष्ट्रपति शासन लागू होने से कम-से-कम उसे तो उम्मीद जगी कि भ्रष्टाचार, अव्यवस्था और अराजकता से उन्हें मुक्ति मिलेगी। सच तो यह है कि ऐसी ही बदहाली पूरे राष्ट्र के लिए एक चुनौती है इसलिए उसका सामना दलगत हितों से ऊपर उठकर किया जाना चाहिए।

दरअसल राजनीतिक दल अपने हितों से ऊपर उठें तो कैसे, जिसमें शुचिता और मूल्य जैसे शब्द बेमानी हो गए हैं। खंडित जनादेश के बावजूद येन-केन-प्रकारेण सत्ता की ताकत पर वर्चस्व कायम करना राजनीतिक दलों का खेल हो गया है।

वर्तमान भारतीय जनतंत्र में खोया हुआ जन और भ्रष्ट होता तंत्र इस देश में कौन से गुल खिलायेगा, कहना मुश्किल, क्योंकि इस जनतंत्र में जब कोई जागता है तो बागी की संज्ञा देकर उसे सुला दिया जाता है, उस बागी को कोई क्या जाने जिसके अंदर किसी काबुली वाले का दिल दर्द से भरा हुआ है और उस बागी का दर्द कोई क्या जाने जिसे फाँसी पर लटकाने से पहले जलील किया गया है और अंडमान की जेलों में तड़पाया गया उस बागी को क्या कहें, जो फांसी पर लटक जाये, इसलिए कि उसके बाद यह स्वर्ग-सा उसका देश जिंदा रहे और गुँजायमान हो जाये। खुश रहो अहले वतन हम तो सफर करते हैं।

बिहार और झारखंड के विधान सभा चुनावों में पिछले दिनों प्राय: सभी राजनीतिक दलों ने मुस्लिम एवं दलित समाज का अपनी ओर आकर्षित करने में कोई कोर-कसर नहीं उठा रखा। राजद, तथा लोजपा ने तो शायद ही कोई हथकंडा शेष रखा हो। राजद-सुप्रीमों लालू प्रसाद तथा लोजपा अध्यक्ष राम विलास

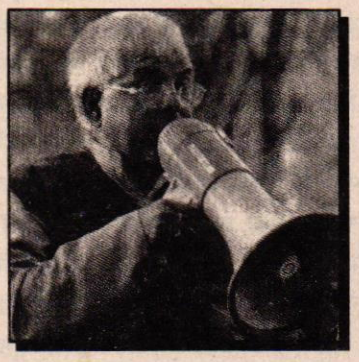

पासवान दोनों ही नेताओं ने फलस्तीनी नेता यासिर अराफात जैसे दिखने का प्रयास कर स्वयं को मुस्लिमों का सबसे बड़ा हिमायती सिद्ध करने की कोशिश की। पासवान अराफात जैसा दिखने के अतिरिक्त एक कदम और आगे निकलकर विश्व के सबसे बड़े आंतकवादी ओसामा बिन लादेन के हमशक्ल को, बिहार के मुस्लिम इलाकों में घुमा कर वोट माँग रहे थे।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि मुस्लिम समाज के लोग काफी धार्मिक होते हैं। इसलिए उनके मतों को बिखराव से बचाने के लिए धार्मिक फतवों और आदेशों का

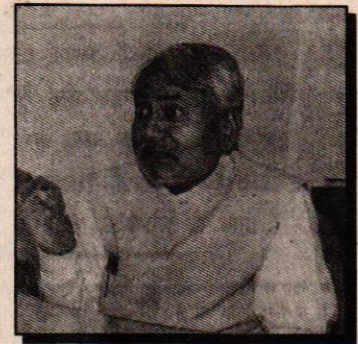

सहारा लेने से भी राजनीतिक दल बाज नहीं आये। कहना नहीं होगा कि मुस्लिम समाज भले ही अपने स्वभाव को शक्ति के रूप में देखता हो, लेकिन सच तो यह है कि विभिन्न दलों द्वारा उनके इस धार्मिक स्वभाव को एक कमजोरी के रूप में अलग-अलग तरीके से भुनाया जाता रहा है। कारण कि भारत पाकिस्तान विभाजन के बाद भारत में रह गए मुस्लिम समाज के अधिकांश लोग अशिक्षित होने के साथ साथ आर्थिक अभावों से ग्रस्त हैं और राजनीतिक दलों द्वारा उन्हें इन त्रस्त स्थितियों में जान-बुझकर बरकरार रखने का प्रयास जारी है ताकि उन्हें बरगलाया जा सके और वोट बैंक के रूप में इस्तेमाल किया जा सके।

हिंदुओं और मुस्लिमों के भाईचारे को आघात पहुँचाने की जो चेष्टा विभाजन के

बाद में की जाती रही उसे अब तक समाप्त नहीं किया जा सका है। आजादी के 58 साल बीत जाने के बावजूद यदि मुस्लिम समाज राष्ट्र की मुख्य धारा से जुड़ नहीं पाया है तो इसके और चाहे जो कारण हों मगर एक कारण यह भी है कि मुस्लिमों को हर वक्त अहसास कराया गया कि वे इस देश के दोयम दर्जे के नागरिक हैं और उनकी राष्ट्रनिष्ठा पर हमेशा संदेह किया गया। इस संदेह के कारण ही मुस्लिम समाज में असुरक्षा की भावना उत्पन्न होती है।

इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि मुस्लिम समाज आज देश का दूसरा सबसे बड़ा समुदाय है और इसकी कुल संख्या पाकिस्तान की आबादी से भी अधिक है। आखिर तब उन्हें औचित्यहीन विचारों के आधार पर अनदेखा कैसे किया जा सकता है?

लगभग यही स्थिति हिंदू समाज की खासकर, शोषित पीड़ित दलित जातियों के साथ भी है जिन्हें वोट बैंक की खातिर विभाजित करने का प्रयास किया जा रहा है। इसी का परिणाम है कि बिहार और उत्तर प्रदेश में दलितों की स्थिति दयनीय बनी हुई है, क्योंकि उन्हें भी शिक्षित बनाने के वास्तविक प्रयास अब तक नहीं किए गए। किसी भी समाज को वह चाहे मुस्लिम समाज हो या दलित समाज उस समुदाय की राजनीतिक रोटियाँ सेकने के लिए अनुचित पक्ष लेना समाज में सिर्फ बिखराव ही उत्पन्न करेगा।

पिछले चुनावों में दरअसल राजनीतिक दलों के पास कोई मुद्दा नहीं था। मुद्दा सिर्फ इतना था कि जैसे हो सत्ता चाहिए। मुसलमान को सिर्फ मतदाताओं के तौर पर इस्तेमाल करनेवाले नेता खुद इस वोट बैंक के लिए तरक्की के हिमायती नहीं हैं। शायद उन्हें यह भय है कि मुसलमान अगर तरक्की कर गए तो अपना भला-बुरा खुद तय कर लेंगे।

जिस लोकतंत्र में एक अदद निर्दलीय विधायक को अपने पाले में खींचने के लिए राजनीतिक पार्टियों के द्वारा छल-प्रपंच-कपट के सारे उपक्रम रचे जा रहे हों उसे विडंबनाओं-दूरभिसंधियों में कैद समझना गैर-मुनासिब नहीं होगा, क्योंकि इस लोकतंत्र में निर्दलियों को इधर उधर जाने की जैसी आजादी है वह दलीयों को नसीब नहीं है। पिछले दिनों बिहार झारखंड तथा हरियाणा विधान सभा के चुनावों के बाद निर्दलीय विधायकों को पटाने में 'हेवी डील' हुआ। भारतीय राजनीति की त्रासदी है कि राष्ट्रीय पार्टियों का अस्तित्व सिकुड़ता जा रहा हैं और क्षेत्रीय पार्टियों का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है। कुछ क्षेत्रीय पार्टियाँ इस कदर बेलगाम हो चुकी है कि लोकतंत्र इच्छातंत्र में बदलता नजर आ रहा है। आपने देखा नहीं बिहार विधान सभी के चुनाव के बाद केवल एक पार्टी लोजपा के राम विलास पासवान ने लोकतंत्र के साथ कैसा मजाक किया? दुनिया की सबसे प्राचीन लोकशाही बिहार के वैशाली से शुरू हुई। आज उसी वैशाली के एक सांसद रामविलास पासवान लोकतंत्र को मजाकतंत्र में बदलने के लिए कमर कस लिये और फलत: बिहार में राष्ट्रपति शासन लगाना पड़ा। बिहार की जनता इस चुनाव से एक रास्ते की तलाश करना चाहती थी, क्योंकि लगातार लूट, डकैती, हत्या, बलात्कार अपहरण तथा रंगदारी की घटनाओं से मुक्त होकर एक सभ्य सरकार का गठन उसे पसंद था, लेकिन सबकुछ राजनीति के गणित और कूटनीति की भेंट चढ़ गया। सबसे अधिक सुरक्षा, शांति की गीत गाने वाले एक अँग्रेजी कहावत का भावार्थ है कि दुनिया बदल जाने का चाहे जितना ढिंढोरा पीटा जाए, दरअसल आदमी के लिए ज्यों की त्यों बनी रहती है। आज की राजनीतिक गतिविधियाँ इसे चरितार्थ करती नजर आ रही हैं। क्योंकि एक के बाद एक लोकसभा तथा विधान सभा के चुनाव होते रहे। हालात में कोई खास प्रभाव नहीं पड़ा। राजनीतिक पार्टियों की स्थिति भी दिन-ब-दिन दयनीय होती जा रही है। न तो उन्हें अपने घोषणा-पत्रों से मतलब और न ही अपने सिद्धांतों से। झारखंड और बिहार की परिस्थितियाँ एकदम समान न होते हुए भी कांग्रेस नेतृत्व की कमजोरी दोनों जगह रही। झारखंड में राजद के सहयोग के बदले कांग्रेस ने बिहार में राजद का समर्थन किया जबकि चुनाव में राजद का विरोध कर रामविलास पासवान की लोजपा के साथ समझौता किया था। हरियाणा में भारी बहुमत से कांग्रेस की जीत का श्रेय इनेलो के ओम प्रकाश चौटाला को इस लिए जाता है। कि उन्होंने पूरे हरियाणा को अपनी जागीर बनाकर रख छोड़ा था और अपने सपूतों के साथ उसे वे दुहने में लगे थे।

झारखंड के राजनीतिक नाटक में रहस्य के साथ, षडयंत्र, हमला, बचाव सबकुछ हुआ। यदि नहीं कुछ हुआ तो वह था राजनीतिक विवेक और संवैधानिक मूल्यों एवं मर्यादाओं का भाव। लोकतंत्र के लिय यह एक खतरनाक प्रवृति है।

यदि राज्यपालो का विवेक इसी तरह कार्य करेगा तो लोकतंत्र का भगवान ही मालिक है। इसलिए राजनीतिक बुराइयों पर लगाम लगाने के लिए कुछ ठोस कदम उठाये जाने की आवश्यकता है। राजनीतिक दलों में परिवार अथवा गिरावट का प्रभाव ससंदीय लोकतंत्र पर सीधे पड़ता है। आज के राजनीतिक दलों के भीतर घोर व्यक्तिवाद, वंशवाद, गुटबाजी, लोकसभा तथा विधान मंडलों में बहस का गिरता स्तर तथा चुनावों में असामाजिक तत्त्वों की पीठ पर सवारी से लोकतंत्र कमजोर हुआ है।

जातीय ध्रुवीकरण वोट बटोरने का आज सबसे आसान तरीका हो गया है और अधिकांश राजनीतिक पार्टियाँ जातियों के प्रतिनिधि बनकर रह गए हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि भारतीय राजनीतिक आज कचरे के ढ़ेर पर खड़ी है जिसे साफ करने के लिए पुरुषार्थ चाहिए और दलीय व्यवस्था के परिष्कार के लिए समर्थ लोकमत, लोकशक्ति एवं लोकाचार को संवर्द्धित करने की आवश्यकता है।

●

तीसरे मोर्चे की प्रासंगिकता

कॉंग्रेस का यह दृष्टिकोण सरलता से समझ में आ जाता है कि कोई तीसरा विकल्प नहीं होना चाहिए। यह बात भी समझ में आती है कि पार्टी इस बात को लेकर समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष मुलायम सिंह यादव से नाराज हो कि उन्होंने एक गैर-कॉंग्रेस, गैर-भाजपा गठबंधन का सुझाव दिया है। स्मरण रहे मुलायम सिंह यादव वह व्यक्ति थे, जिन्होंने कॉंग्रेस अध्यक्ष सोनिया गाँधी को तब समर्थन नहीं दिया था जब लगभग सात वर्ष पूर्व वह प्रधानमंत्री पद पर आसीन हो सकती थीं। तब लोकसभा के 543 सदस्यों में से 272 के जादुई आँकड़े पर वह समाजवादी पार्टी के समर्थन के अभाव में नहीं पहुँच सकी थी। इस सबके बावजूद यह बात समझ में नहीं आ पाती कि तृतीय विकल्प देश के लिए हानिकारक कैसे है? फिलहाल देश दो राजनीतिक दलों की दया पर निर्भर है। ये हैं कॉंग्रेस और भाजपा इनमें से एक दिशाहीन है, जबकि दूसरे की सोच सांप्रदायिक है। ये दोनों ही ऐसी स्थितियां हैं, जिनकी उपेक्षा भयावह है। सौभाग्य से इन दोनों दलों में से किसी को भी संसद में बहुमत प्राप्त नहीं है। सरकार गठन के लिए उन्हें दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है।

यदि कांग्रेस बहुमत में होती तो निरंकुश ढंग से शासन चलाती और भाजपा भी ऐसी सूरत में उसी तरह की एक और यात्रा का आयोजन करती, जिस तरह की यात्रा लालकृष्ण आडवाणी ने आयोजित की थी और जिसने अपने पीछे विध्वंस की रेखा ही छोड़ी थी। फिर भी यह स्थिति कांग्रेस को पसंद आती बशर्ते कि कोई सेक्युलर विपक्ष नहीं उभर पाता। तब पार्टी स्वयं को सांप्रदायिकता विरोधी ताकतों की एकमात्र प्रतिनिधि जताती। एक बहुलवादी भारत के पक्षधर मतदाता उसके पक्ष में आने पर विवश होते और उसकी निष्फलता की भी उपेक्षा कर देते। यह अद्‌भुत सी ही बात है कि कॉंग्रेस इस बात से प्रसन्न हो कि उसके विकल्प के रूप में मात्र भाजपा ही मौजूद है। लोकसभा चुनाव में कमरतोड़ पराजय के बाद भाजपा की स्थिति दयनीय है। वह तभी अपनी स्थिति सुधार सकती है कि जब मतदाताओं के समक्ष कॉंग्रेस के अलावा अन्य कोई विकल्प न हो। भाजपा इस बारे में आश्वस्त है कि वह अपनी सत्ता में वापसी के लिए लोगों में व्याप्त निराशा का दोहन कर सकने में सफल रहेगी। दरअसल, भाजपा की दूसरी पंक्ति का नेतृत्व तो इस बारे में सुनिश्चित हो चुका है कि देश ने द्विदलीय प्रणाली को अंगीकार कर लिया है। उसे तो सत्ता में वापसी के लिए आगामी चुनाव भर तक ही इंतजार करना है। ये दोनों दल जिस कल्पना लोक में विचरण कर रहे हैं उसे माकपा ने किसी सीमा तक वास्तविक आधार दे दिया है।

माकपा ने यह घोषित कर दिया है कि तीसरे विकल्प की कोई आवश्यकता नहीं। संभवत: पार्टी को अपनी रणनीति के अनुरूप पीछे की सीट से ही संचालन सुहाता है, पर लोग किसी ऐसी पार्टी अथवा गठबंधन की आशा लगाए है जो कानून एवं व्यवस्था की अनुपस्थिति, भ्रष्ट मंत्रियों और सरकारी अधिकारियों तथा बढ़ती बेरोजगारी सरीखी तात्कालिक समस्याओं से त्राण दिला सके। उन्होंने देख लिया है कि कॉंग्रेस और भाजपा, दानों ही अपनी मौखिक दहाड़ में तो एक दूसरे को पछाड़ने में जुटी है, परंतु कार्य निष्पादन में दोनों ही निष्फल हैं। निराशा का असली कारण यह है कि कॉंग्रेस और भाजपा, दोनों ही ऐसी आर्थिक और विदेश नीतियों की पक्षधर हैं जो बुनियादी तौर पर बहुराष्ट्रीय प्रतिष्ठानों और महाशक्तियों के पक्ष में जाती है। केंद्र सरकार की वृद्धि दर बढ़ाने की लालसा ने जनकल्याण को पृष्टिभूमि में डाल दिया है। स्वतंत्रता के बाद से लंबे अरसे तक कॉंग्रेस सत्ता में रही और इस दौर में सामाजिक क्षेत्र को आघात लगा है। भाजपा के शासनकाल में भी हालात में कोई सुधार नहीं हुआ।

बुनियादी तौर पर क्षेत्रीय दलों के गठजोड़ के रूप में उभरनेवाले तीसरे विकल्प को कांग्रेस और भाजपा, दोनों ही अस्तित्व में आने से रोकना चाहती है। जैसा कि उसके गठन की रूपरेखा से ही स्पष्ट है, यह सबसे निचले स्तर के सन्निकट और केंद्र के हाथों में सत्ता के केंद्रीकरण का विरोध करेगा, जबकि कांग्रेस और भाजपा केंद्र के हाथों में सत्ता की पक्षधर हैं। ऐसा प्रस्तावित गठबंधन एक ओर तो क्षेत्रीय शिनाख्तों को कायम रखेगा वहीं दूसरी ओर देश के बहुलवाद को भी मजबूत करेगा। यह दु:खद है कि वामदल अपने अस्थाई लाभ के लिए ऐसे गठबंधन का विरोध कर रहे हैं। जनता दल का शासन थोड़े समय तक ही चला, किंतु उस दौरान राज्यों की आवाज अधिक प्रभावी थी, क्योंकि केंद्र में सरकार का गठन उन्होंने ही किया था। यदि विश्वनाथ प्रताप सिंह को भाजपा के समर्थन पर और देवगौड़ा तथा इंद्र कुमार गुजराल को कॉंग्रेस के समर्थन पर निर्भर नहीं रहना पड़ता तो संभवत: उनकी सरकारें बेहतर कर सकती थीं। उपरोक्त दोनों दलों ने राजनीति खेली और जो खेल वे खेल रहे थे उसका समापन इन तीनों के पैरों तले से सत्ता का कालीन खींच लेने से हुआ। कॉंग्रेस और भाजपा की परेशानी को तब देखा जा सकता है, जब उन्हें विधानसभा चुनावों में जूझना पड़ता है। हरियाणा के अलावा अन्य दो राज्यों बिहार अथवा झारखंड में दोनों ही दलों के कोई चमत्कार कर पाने के आसार नहीं थे इन चुनावों में स्थानीय मुद्दों की महती भूमिका हूई और इन मुद्दों पर कांग्रेस और भाजपा, दोनों के ही हौसले पस्त हैं। टिकट पाने के लिए राजधानी में इन दोनों दलों के मुख्यालयों पर कतारें लगी थीं। इन दलों के आलाकमान ने ही यह तय किया था कि कौन कहाँ से प्रत्यासी होगा? केंद्रीय नेताओं तक पहुँच की ही खासी भूमिका रही, न कि गुण-दोष की। क्षेत्रीय दलों ने कम से कम इतना तो किया है कि उन्होंने अपने-अपने राज्यों में प्रत्याशियों के चयन के मामले में यह कसरत की और जिला मुख्यालयों को इस उद्देश्य से कुछ समय दिया।

जब विधानसभा चुनाव होते हैं तो क्षेत्रीय दल कॉंग्रेस और भाजपा, दोनों के ही विरोध से डरते हैं। यह सुविदित ही है कि लोकसभा चुनाव में इन दोनों अखिल भारतीय दलों को ही विपुल अंश प्राप्त होता है, परंतु जब वे क्षेत्रीय दलों से व्यवहार करते हैं और उनके क्षेत्र में दखल देते हैं तो दोनों ही अपना बेदनुमा लोभी पक्ष दर्शाते है। कॉंग्रेस और भाजपा स्वेच्छा से क्षेत्रीय दलों को विधानसभाओं

में अपना बहुमत लाने देना चाहते है तो वे स्थानीय आकांक्षाओं का प्रतिनिधत्व करते हैं। संघवाद का सारतत्व भी यही है। काँग्रेस और भाजपा को यह अनुभूत कर लेना चाहिए कि राजनीतिक दलों का अखिल भारतीय स्वरूप वर्षो से अवरूद्ध है। मुख्य पक्ष भाषा है। आम आदमी अपनी समस्याओं का हल जानने के लिए अपनी भाषा का ही सहारा चाहता है दिल्ली में बैठे नेता क्षेत्रीय भाषाओं में पांरगत नही हैं। भाजपा का राजस्थान और मध्यप्रदेश में वर्चस्व है, क्योंकि वह वहाँ के लोगों की क्षेत्रीय भाषा हिंदी के माध्यम से ही अपनी गतिविधियाँ चलाती हैं। दक्षिण में क्षेत्रीय दलों की प्रभावी आवाज है, क्योकि उनका माध्यम वहाँ मातृभाषा है। केरल जहाँ कांग्रेस ने अपनी सरकार बनाई है वहाँ वह मुस्लिम लीग की मदद से ही सत्ता में आ पाई है जो अपने स्वरूप में क्षेत्रीय दल है।

कर्नाटक में देवगौड़ा का क्षेत्रीय दल जनता दल (सेक्युलर) है, जिसने राज्य विधानसभा में कांग्रेस को बहुमत दिलाया। जब कांग्रेस या भाजपा राज्यों में बड़ा हिस्सा चाहती है तो वह कंजूसी ही दर्शाती है। मतदाताओं की दृष्टि में भी संसद के लिए अखिल भारतीय दल और विधानसभाओं में क्षेत्रीय दलों की प्रमुखता ही बेहतर है। कहीं-कहीं सामान्य सोच से अलग हटकर भी मतदाता व्यवहार करते हैं, पर ऐसे उदाहरण विरले ही हैं उनसे बुनियादी सोच में कोई बदलाव नहीं आ पाता। मेरी निजी सोच यह है कि जो लोग दागी है वे विकल्प का नेतृत्व नहीं कर सकते। आदर्श गठबंधन मानवाधिकारवादी कार्यकर्ता ही खड़ा कर सकते हैं। ऐसा ही आकार पा रहा है। यह निर्णय चुनावी राजनीति से जुड़े जन आंदोलनों से उद्भूत है। इसके प्रमुख पुरोधा संदीप पाटील, निखिल डे, मेधा पाटेकर, अरुणा राय, अरूंधति राय तथा थॉमस कोचेरी हैं। वे एक वैकल्पिक राजनीतिक शक्ति खड़ी कर रहे हैं, जिससे एक दल का गठन हो रहा है।

दैनिक जागरण से साभार

अगली बार जब सरकार बनेगी...

विनय कु. सिन्हा

चुनावी सरगर्मी परवान पर था... राजनीतिक दलें मतदाताओं को अपने-अपने पक्ष में आकर्षित करने के ख्याल से प्रचार के नये-नये प्रयोग कर रहे थे। चुनाव में लोक-लुभावने वायदे भी मतदाताओं के लिए खास महत्व रखते है। इस दफा सत्ताधारी दल चुनावी घोषणापत्र को नये अदांज एवं ढंग से प्रस्तुत की। खुलामंच बनाया गया। मंच पर दल के प्रमुख नेतागण मंचासीन थे। मंच पर ही एक तरफ छुटभैये नेतागण धक्का-मुक्की और शोरगुल मचा रहे थे। मंच के नीचे और सामने राज्य के कोने-कोने से और जनता की असंख्य भीड़ मंच की तरफ टकटकी लगाये खड़ी थी जैसे तिलस्म का पिटारा... खुलने वाला था। सहसा दल के बड़े नेता माइक के सामने आते थे उनके हाथ में सफेद कागजों पर टकिंत चुनावी वायदा की सूचि थी, जो राज्य की जनता की तकदीर थी।

नेताजी शुरू हुए-इस बार तो न सही, अगली बार जब सरकार बनेगी। मिलेंगे गरीब को धोती कम्बल, हर वृद्धा को मासिक पेंसन। सारा ऋण माफ होगा, फिर से ऋण का इंतजाम होगा। विश्व में बिहार की गरीबी का नाम होगा। तभी तो विश्व बैंक से पैसे का डिमाँड होगा।

हर हाथ को डंडे मिलेंगे, चौराहे पर भिखमंगे मिलेंगे। साहित्यकारों को मिलेगी दुत्कार, चापलूसों का होगा सत्कार। शिक्षा के नारे आयाम जुड़ेंगे, ईटा-खपड़ा पास करेंगे। धर्मो के अरमान बढ़ेंगें, गलि-कूचों में भगवान मिलेगें। चंदा का व्यवसाय बढ़ेगा। बेकारों की आय बढ़ेगी। अपहरण का कारोबार बढ़ेगा। बेरोजगारों को चांस मिलेगा। नेताजी ने मोंह चढ़ाते हुए बोला, तब तो जाहिर है कि बम-पिस्तौल की माँग बढ़ेगी, कुटीर-उद्योग को नयी जान मिलेगी। तब तो निश्चित तौर पर हम अपने राज्य में समाजवाद की जड़ मजबूत कर पायेंगे। पूंजीपतियों के दिन ढलेंगे, समाजवाद फले-फूलेंगे। दलालों को नये काम मिलेंगे, नेतागण भी आम मिलेंगे। फिर नेताजी ने दम भरते हुए जनता की ओर इशारा करते हुए कहा-गाँधी मैदान घुमाया था। तभी भीड़ से आवाज आयी-कब महाराज...। याद नहीं. .. जब तुम बसों पर लटक कर आए थे। अगली बार लाल किला घुमाऊँगा। जनता ने एक स्वर से पूछा, फिर कहा-अन्नदाता। हांगकांग की सैर करवाऊँगा। वह किस माध्यम से। एयरबस पर लटक कर जायेंगे। क्या खायेंगे... (एयर बस पर)? ताजी हवा खाएँगे। तब कैसे जियेंगे सरकार...। तभी तो हम अपनी गरीबी का हाल सुनायेगें, लाखों-करोड़ों की भीख लायेंगें, बापू की शान बढ़ायेंगे।
उसका क्या होगा सकरार? पटना की धरती पर एक जुबली पार्क बनवाएंगे।
उस पैसे का हमारे लिए क्या योजना है सरकार...? अरे भई, तुम तो मेरे सबसे चहेते हो, तुम्हारे लिए एक विशेष योजना है।
क्या सरकार...! बाकी पैसे का हम अपनी तस्वीर बनायेगें। साथ ही साथ अपनी गीत माला छपवायेंगे। उसका क्या होगा सरकार? सब भूख प्यास मिट जायेंगे। जब मेरे गीत आप गायेंगे। महापुरुषों में क्या रखा है, सारी धरा पर मेरे नाम का डंका बजा है। तभी जनता की तरफ से (एक स्वर से)आयी आवाज, तेरी ही सरकार बनेगी, जबतक मेरी सांस रहेगी। आधी रोटी खायेंगे, बस तेरा ही गुण गायेंगे।

संपर्क: *लोहरा भवन, बिहार क्लब के निकट कागजी मुहल्ला, बिहार शरीफ नालंदा*

मधुर शास्त्री हुए पिच्चहतर के

चित्र-कला-संगम एवं हिंदी भवन के संयुक्त तत्त्वावधान में सुप्रसिद्ध गीतकार पं. मधुर शास्त्री के 75वें जन्म-दिवस पर अमृत महोत्सव का आयोजन हिंदी भवन में किया गया। इस अवसर पर उनकी दो सद्य: प्रकाशित कृतियों का लोकार्पण विश्व विख्यात सरोदवादिका श्रीमती शरनरानी बाकलीवाल ने किया।

मधुर शास्त्री के गीत संग्रह 'मैं चकित हूँ' पर अपने विचार व्यक्त करते हुए प्रसिद्ध कवि श्री बालस्वरूप राही ने इस कृति को गीता परंपरा से हटकर एक नए गीत की स्थापना को संकेतित किया है। उन्होंने कहा कि शास्त्रीजी के गीतों में वर्तमान मानव की पीड़ा को व्याख्यातित किया, साथ ही छंद के क्षेत्र में भी उन्होंने नए प्रयोग किए हैं।

उनके दूसरे संग्रह 'प्रकारांतर' पर अपने विचार व्यक्त करते हुए प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. श्यामसिंह शशि ने इन छंद मुक्त कविताओं में संवेदनाशील प्राणी के स्वभाव को लयात्मक प्रवाह के साथ चित्रित किया गया है। उन्होंने कहा कि इन कविताओं में समाज की संवेदनहीनता और उत्तर आधुनिकता के प्रति युवापीढ़ी का रूझान विनाश की ओर अग्रसर है।

हिंदी भवन के मंत्री एंव व्यंग्य कवि डॉ. गोविन्द व्यास ने कहा कि मधुर शास्त्री ने अपना सारा जीवन मनुष्य की सहायता और गीत की साधना में व्यतीत किया है। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि इस साधना के लिए उन्हें जो प्राप्त होना चाहिए था वह अभी तक नही मिला।

श्री राजेन्द्र अवस्थी ने शास्त्रीजी की रचनाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि उन्हें सदा प्रकाशित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्रीमती शरनरानी बाकलीवाल ने साहित्य और संगीत के संगम को अभूतपूर्व समन्वय कहा। उन्होंने कहा कि संगीत में गीत की ही प्रधानता है। परंतु संगीत जिसे नहीं कह पाता गीतकार उसे अपने गीत में विस्तार पूर्वक कह देता है।

कार्यक्रम का शुभारंभ श्रीमती रंजना अग्रवाल की सरस्वती वंदना से हुआ। साथ ही श्री मधुर शास्त्री ने अपने गीतों से श्रोताओं को आनंदित किया। कार्यक्रम का संचालन सुपरिचित कवयित्री श्रीमती इन्दिरा मोहन ने किया। धन्यवाद ज्ञापन पद्मश्री वीरेन्द्र प्रभाकर ने किया। कार्यक्रम में राजधानी के विशिष्ट साहित्यकार, पत्रकार तथा गणमान्य व्यक्ति भारी संख्या में उपस्थित थे।

डॉ० गोविंद व्यास,
हिंदी भवन , दिल्ली से

...पृष्ठ 31 का शेषांष

कीदड़-कादो-गटर नालियों भी सुअरों की तरह पगते फिरते है। इसी में चमक का कमाल किये-दिखते कितने पावन पामर हैं भाषा आंलाकरिक व मुहावरेदार तो है हिंग्लिश भी है। धक्का-प्रुफ, टिकटार्थियों, की भी खूब खबर ली गई है। तुकान्त, अतुकान्त के बीच पद, ग़ज़ल व क्षणिकाएँ भी पिरोयी गयी हैं। यहाँ भी सरनजीत शमाजीत में यमक और कुतर-कुतर में विण्सा द्रष्टव्य है जमाने के विदूप से नये मुहावरे अनोखे ढले हैं। जैसे-पैसे की खातिर पाताल चले जायेंगे। तथा बहुत करीने से तराशकर टुकड़ा एक देश का लेते। रोज चाय के साथ सुबह वे कितनों लोक्षाणिक व्यंग्य गुंफित है उक्त नमूने में। लगता है जैसे कोई दरिन्दा इस देश को रोज सुबह एक-एक टुकड़ा दवा की तरह तेज छुरी से तराश कर बेरोक टोक चबाये जा रहा है। वैसे ही लीलाघर लौआलाठी में तो चाराचोर घोटालेबाज ही जैसे साक्षात मूर्तिमान हैं कवि ने इसमें केवल राष्ट्रीय व्याधियों केंसर को ही नहीं दर्शाया है, बल्कि इसका कुछ इलाज भी सुझाया है। इसमें है एक लूट व आतंक की मौजूदा पीढ़ी हेतु लगुआ-भगुआ, चमचा साला समेत, देश निकाला, और दूसरा इलाज है अगली पीढ़ी के लिए इनकी जबरिया नशबन्दी जो संजय गाँधी इमरजेंसी में करवाये थे। देखे-नेताओं को बधिया कर दो, बढ़े न उनका घर-परिवार। वंश-बेल जो उनकी फैली होगा सबका बंटाढार। कुल मिलाकर घोष जी की इस तल्ख रचना में राष्ट्रीय निराशों और वेदना तो है ही, कहीं-कहीं सच्चा नेता का आशावादी दिवा स्वप्न भी है जिसमें अच्छे, धर्म-निष्ठा जन नायकों की गीत की कामना की गई है।

संपर्क: *पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष*
भागलपुर विश्वविद्यालय,
7, लाल बाग, तिलकामाँझी, भागलपुर

वैचारिक क्रांति को गति प्रदान करने के संकल्प के साथ मंच की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक

राष्ट्रीय कार्यालय, दिल्ली। विगत् 13 मार्च को गाजियाबाद के सूर्यनगर स्थित विद्या भारती स्कूल के सभागार में राष्ट्रीय विचार मंच के नवनिर्वाचित राष्ट्रीय कार्यकारिणी की प्रथम बैठक मंच के वरिष्ठ उपाध्यक्ष डॉ. देवेन्द्र आर्य की अध्यक्षता में वैचारिक क्रांति को गति प्रदान करने के संक्ल्प के साथ संपन्न हुई। बैठक में देश के राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र राज्यों सहित राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। राजस्थान इकाई की महासचिव सुश्री पल्लवी सिंह चौहान द्वारा प्रस्तुत प्रतिवेदन पर बैठक के प्राय: सभी सदस्यों ने संतोष जताया तथा राष्ट्रीय महासचिव ने इकाई की अध्यक्षा प्रो. राज चतुर्वेदी के साथ सभी सदस्यों के प्रति मंच के कार्यकलापों को गति प्रदान करने के लिए आभार व्यक्त किया।

वर्ष 2005 के वार्षिक कार्यक्रमों में लौह पुरुष सरदार पटेल, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, फणीश्वर नाथ रेणु, मौलाना अबुल कलाम आजाद, डॉ. भीमराव अंबेडकर, सुब्रह्मण्य भारती के अतिरिक्त राजस्थान इकाई के प्रो. राजकुमार साहनी के सुझाव पर शहीद राम प्रसाद बिस्मिल की भी जयंती मनाने का निर्णय लिया गया। सर्वसम्मति से यह भी निर्णय लिया गया कि विगत् 31 अक्टूबर 2004 से प्रारंभ राष्ट्रीय एकता व अखंडता को अक्षुण्ण बनाए रखने के मंच के अभियान को पूरे वर्ष में सभी शाखाओं द्वारा एक आंदोलन का रूप दिया जाए।

मंच तथा उसके मुख-पत्र 'विचार दृष्टि' के सदस्यता-अभियान में और तेजी लाने के प्रयास के साथ 'विचार दृष्टि' के नियमित प्रकाशन एवं स्तरीय बनाने का हरसंभव सहयोग प्रदान करने का आश्वासन सभी सदस्यों ने दिया तथा मंच के संयुक्त सचिव (संसाधन) श्री मिथिलेश कुमार ने सभी सदस्यों से मंच के कार्यकलापों को मूर्त रूप देने हेतु उसकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने का अनुरोध सभी सदस्यों से किया।

कार्यकारिणी ने डॉ. राकेश कुमार सिंह को उत्तर प्रदेश, डॉ. रमेश चंद्र बेलावत को मध्य प्रदेश के लिए गठित मंच की तदर्थ समितियों का संयोजक मनोनीत किया गया तथा राष्ट्रीय महासचिव और उपाध्यक्ष डॉ. देवेन्द्र आर्य को उत्तरांचल में इकाई गठित करने हेतु देहरादून जाकर प्रो.(डॉ.) राजनारायण राय से संपर्क करने का निर्देश दिया। डॉ. राकेश कुमार सिंह, डॉ. शांति ओझा तथा श्री अरविंद पटेल राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य मनोनीत किये गये।

मंच की ओर से राष्ट्रीयता पर आधारित अँग्रेजी तथा हिंदी में प्रकाशित की जानेवाली पुस्तकों के लिए प्रकाशकों एवं प्रायोजकों से संपर्क करने का निर्देश राष्ट्रीय महासचिव को देते हुए शाजपुर के डॉ. रमेशचंद्र बेलावत से हिंदी वाली पुस्तक के प्रकाशन में हर संभव सहयोग प्रदान करने का अनुरोध कार्यकारिणी ने किया। कार्यकारिणी के निर्णयानुसार प्राप्त रचनाओं की संख्या के मद्देनजर हिंदी में अब दो पुस्तकें प्रकाशित होंगी। मंच की सभी सात उपसमितियों के गठन के लिए उसके पदेन संयोजक से राय लेकर राष्ट्रीय महासचिव को अधिकृत करने का निर्णय लिया गया।

कार्यकारिणी ने राष्ट्रीय विचार मंच और विचार दृष्टि के लेखा को अलग-अलग रखने का निर्णय लिया। मंच को और अधिकं क्रियाशील एवं जनता की अपेक्षाओं के अनुरूप बनाने तथा लोगों में राष्ट्रीयता की भावना जाग्रत करने के ख्याल से प्रो. रमाशंकर श्रीवास्तव, डॉ. धर्मेंद्रनाथ अमन, डॉ. रमेशचन्द्र बेलावत, प्रो. राज चतुर्वेदी, डॉ. मंजुला गुप्ता, प्रो. राज कुमार साहनी, श्री मनोज कुमार, डॉ. साधुशरण, श्री ज्योतिशंकर चौबे, डॉ. सीताराम बंधु पाटीदार, श्री विनोद सिंह आदि ने कई सुझाव प्रस्तुत करते हुए अपनी ओर से भी सहयोग करने की बात कही। श्री मिथिलेश कुमार ने सभी सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त किया। बैठक के अध्यक्ष डॉ. देवेन्द्र आर्य ने अपनी कविता की इन पंक्तियों से बैठक की समाप्ति की घोषणा की-

"हराने को कुछ नहीं है नाम तेरे
और जीतने को सामने दुनिया पड़ी है।"

प्रस्तुति: **सिद्धेश्वर**, *मंच के राष्ट्रीय महासचिव*

विचार दृष्टि को
हमारी हार्दिक
शुभकामनाएं
मे. पोपुलर फार्मा
अंग्रेजी दवाखाना
न्यू मार्केट, पटना-1

रेणु की कहानियों में ग्रामीण जीवन के यथार्थ

प्रो. डॉ॰ नवल किशोर प्रसाद श्रीवास्तव

राष्ट्रीय विचार मंच की बिहार शाखा द्वारा पटना के सिन्हा लाइब्रेरी में 4 मार्च 2005 को आयोजित साहित्यिक संगोष्ठी में राजनारायण कॉलेज, हाजीपुर के पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष एवं सप्रसिद्ध साहित्यकार प्रो॰ (डॉ.) नवल किशोर प्रसाद श्रीवास्तव ने 'रेणु की कहानियों में ग्रामीण जीवन के यथार्थ' विषय पर एक सारगर्मित आलेख प्रस्तुत किया जिसे सुधिजनों ने मुक्त कंठ से सराहा। प्रस्तुत हैं यहाँ डॉ. श्रीवास्तव द्वारा इस संगोष्ठी में पाठ किया गया तथ्यपरक आलेख जिससे पाठक को अमरकथा शिल्पी फणीश्वर नाथ रेणु की कहानियों को गहराई में जानने-समझने का मौका मिलेगा और शोधार्थी इससे लाभान्वित होंगे, ऐसा मेरा विश्वास है। डॉ. श्रीवास्तव को हार्दिक साधुवाद

–संपादक

हिन्दी में आंचालिक उपन्यास के प्रणेता, क्रान्तिकारी व्यक्तित्व-सम्पन्न लोकप्रिय और समर्थ साहित्यकार उच्च कोटि के कथा-लेखक फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में जहाँ ग्रामीण जीवन के चित्र यथार्थ के धरातल पर उकेरे गये हैं। वहाँ उनकी कहानियों में भी यथार्थ का अंकन बड़ी ही कुशलता के साथ किया गया है।

लोकवद्ध प्राणी होने के नाते सच्चा साहित्यकार अपने युगीन वातावरण से प्रभावित होकर जब संवेदनशील हो उठता है तो वह अपने द्वारा अनुभूत यथार्थ को अपने साहित्य में अभिव्यक्ति दिये बिना नहीं रह सकता।

इसमें संदेह नहीं कि प्रेमचन्द के पश्चात् ग्रामीण परिवेश से जुड़े हुए साहित्यकारों में रेणु का स्थान अप्रतिम है। उनकी रचनाएँ ग्रामीण जन-मानस से जुड़ी हुई अमूल्य निधियाँ हैं। गाँवों के प्रति रेणु का मोह अनुपम था। चाहे गाँव उपेक्षित, गंदा और बगलीज, ही क्यों न हो, उसी से उन्होंने सौन्दर्य तराशा। उनकी रचनाओं की पृष्ठभूमि गाँव ही है। अपने जीवन के परवर्ती काल में वे अधिकतर पटना में रहते थे। पर जब भी शहरी जिन्दगी से जी ऊब जाता था तब वे अपने गाँव औराही-हिंगना चले जाते। सप्ताह दो सप्ताह, कभी महीनों तक गाँव में रहकर ग्रामीण जीवन की निजता का अनुभव करते रहते और शहर लौटकर अनुभूत सामग्री के आधार पर संस्मरण बुनते रहते। जीवन के विविध पहलुओं का चित्रण प्रभावशाली ढंग से करने की क्षमता रेणु में थी। गाँव के जन-'जीवन के प्रत्येक पक्ष का चित्रण उनके साहित्य में सजीव और प्रभावशाली बना है। चूँकि रेणु ने ग्रामीण वातावरण और ग्रामीण लोगों की प्रकृति और प्रवृति को निकटता से देखा था इसलिए उनकी कहानियों में ग्रामीण यथार्थ का बड़ा ही स्वाभाविक और जीवन्त चित्रांकन हो सका है। समाज का दर्पण होने के कारण साहित्य में समाज का सही-सही प्रतिविम्ब देखा जा सकता है। जिस साहित्यकार को सामाजिक यथार्थ का जितना ही अधिक ज्ञान होता है उसके साहित्य में यथार्थ उतने ही वास्तवकि रूप में उभर पाता है। साधारणीकरण के लिए रचनाकार को आलंबन, उद्दीपन, वस्तु-व्यापार, उपमान, प्रतीक, बिम्ब आदि सभी यथार्थ जीवन और जगत से ग्रहण करना पडता है।

यथार्थ अपने नग्न रूप में वीभत्स और रुक्ष होता है। मगर ऐसा यथार्थ साहित्य का धर्म न होकर आपद्वर्भ है। इसीलिए सच्चा साहित्यकार उस यथार्थ को अपनाकर अपने साहित्य में उसका उदात्तीकरण कर देता है जिससे उसके साहित्य की महार्घता और गरिमा में वृद्धि हो जाती है। रेणु ने अपने कहानी-साहित्य में ग्रामीण जीवन के ऐसे ही यथार्थ को चित्रित करने का प्रयास किया है रेणु की कहानियों में बिम्बित यथार्थ पाश्चात्य साहित्यकार ज़ोला, स्टैण्डल आदि की तरह वस्तुनिष्ठ, अतिवादी और वैज्ञानिक यथार्थ नहीं है, प्रत्युत ग्रामीण व्यष्टि-सत्य को समष्टि-सत्य में परिणत कर उन्होंने अपनी कहानियों में अद्भूत लालित्य कलात्मकता, नैतिकता और आद्रर्श का समावेश कर उसे मानव-संवेदना का अंग बना दिया है। यही रेणु के ग्रामीण जीवन के यथार्थ की सबसे बड़ी विशेषता है।

साहित्य में ग्रामीण-जीवन के यथार्थ चित्रण के तीन रूप मिलते हैं। (क) सामाजिक यथार्थवाद (ख) जैविक यथार्थवाद और (ग) मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद। इन तीनों ही प्रकार के यथार्थों के समावेश रेणु की कहानियों मे देखे जा सकते हैं।

रेणु-लिखित ठुमरी, एक श्रावणी दोपहरी की धूप मेरी प्रिय कहानियाँ, अच्छे आदमी, वन-तुलसी की गंध, आदिम रात्रि की महक, अग्निखोर, आदि कहानी-संग्रह पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो चुके हैं। इनके अतिरिक्त भारत-आयावर तथा प्रो॰ कैलाश नाथ तिवारी जैसे अनुसन्धानकर्ताओं ने उनके मरणोपरांत विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं से उनकी अनेक कहानियाँ खोज निकाली हैं। इनका प्रकाशन भी हो चुका है। इन कहानी-संग्रह की कहानियों में ग्रामीण जीवन के यथार्थ का बड़ा ही सजीव, मोहक, प्रभावाभिव्यंजक चित्र देखने को मिलता है। उनकी कथा में ग्राम-जीवन की सोंधी सुंगध और उस पर हर सिंगार के पीछे की पर्त इस तरह घुली-मिली है कि

पाठक का हृदय दोलायमान हुए बिना नहीं रहता।

मेरी दृष्टि में कथाकार प्रेमचंद्र के पश्चात् यदि ग्रामीण जीवन के यथार्थ का सही-सही बिम्ब किसी अन्य कथाकार की रचनाओं में पूरी संदीप्ति के साथ बिम्बित हो सका है तो वे हैं रेणु जी ही। वस्तुत: रेणु को अपनी कहानियों के लिए कथानक, पात्र और वातावरण कहीं अन्यत्र नहीं ढूँढ़ना पड़ा, बल्कि उन्हें अपने आस-पास ही ग्रामीण क्षेत्रों में उनका स्वाभाविक संचरण मिल गया जिसे देखकर पाठकों और आलोचकों को दंग रह जाना पड़ता है।

इतना ही नहीं, अधुनिक संश्लिष्ट युग के लेखक रेणु को यथार्थ की गली-कूचों कस्बों और छोटे नगरों से साक्षात्कार करने से बाधित नहीं किया। इसलिए प्रगतिवादी आलोचक भी इनके यथार्थ के दर्शन कर सन्तोष अनुभव करते हैं। मनुष्य के जीवन के दो पहलू हैं (I) यथार्थ और (II) भावना। रेणु एक सच्चे ईमानदार कलाकार थे इसलिए इनके साहित्य में दोनों तत्त्वों का मणिंकाचन संयोग मिलता है। रेणु ने निर्भीकता से यथार्थ के अथाह सागर मे पैठकर भावों के मोती को चुना है। इस सम्बन्ध में रेणुजी की पत्नी का यह कथन भी ध्यातव्य है- जिंदगी की प्रत्येक वस्तु से उन्हें (रेणु जी को) प्रेरणा मिलती थी। यहाँ तक कि अपने इर्द-गिर्द के वातावरण और लोगों का असर भी उनपर पड़ता था। इसलिए जाहिर है पत्नी होने के कारण कभी-कभी मैं उनकी प्रेरणा बन जाती थी। उदाहरण के लिए आपको बताता हूँ कि उनके प्रसिद्ध ***मैला आँचल*** में जो ममता का चरित्र है वह मुझसे प्रेरित है। इसी उपन्यास के डाक्टर के चरित्र वो स्वयं तथा कमला का चरित्र उनकी दूसरी पत्नी पद्मा से प्रभावित हैं।

अपने उपन्यासों की भांति ही अपनी कहानियों में उन्होंने ग्रामीण जीवन के यथार्थ को बडी ही ईमानदारी के साथ प्रस्तुत: किया है। रेणु की अधिकतर कहानियों में किसी-न-किसी रूप में यथार्थ के अंकन हुए ही हैं। रेणु ने अपने जीवन काल में बहुत -सी कहानियाँ लिखी, जो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में छपी थीं। उनमें से बहुत-सी कहानियों का आज तक पता भी नहीं चल पाया है, किन्तु उनकी 168 कहानियाँ आज भी उपलब्ध है। इन कहानियों में से हम उनकी कुछ वैसी प्रमुख और प्रसिद्ध कहानियों पर विचार करेंगे जिनमें ग्रामीण यथार्थ का बड़ा ही स्वाभाविक रूप दृष्टिगोचर होता है।

फणीश्वरनाथ रेणु का पहला कहानी-संग्रह ठुमरी है जिसमें नौ कहानियाँ संकलित हैं। इस संग्रह की पहली पहली कहानी रसप्रिया, पचकौड़ी मिरदंगिया, मोहना और मोहना की मां रमपतिया के चरित्र और कार्य-कलाप पर आधृत है। इसके ग्रामीण यथार्थ की ओर संकेत करते हुए लेखक कहता है- जेठ की दुपहरी में खेतों में काम करनेवाले गीत नहीं गाते हैं। कुछ दिनों बाद कोयल भी कूकना भूल जायगी क्या! ऐसी दोपहरी में चुपचाप कैसे काम किया जाता है। पाँच साल पहले तक लोगों के दिल में इलास कबाकी था। पहली वर्षा से भींगी हुई धरती के हरे-भरे पौधों से एक खास किस्म की व्यथा के भार में ग्रामीण जीवन के यथार्थ का सजीव रूप देखा जा सकता है।

ठेस शीर्षक कहानी में भी ग्रामीण जीवन का आदर्श प्राणवंत दीखता है। देहाती स्त्रियों में बात-की-बात में किसी की चिरौरी करने की प्रवृति होती है। मानू के लिए शीतलपाटी और आसानी बुनने के क्रम में बड़ी बड़रिया द्वारा जब उसे चटोर कहकर खरी-खोटी सुनाई जाती है तो उसके कलाकार हृदय को ठेस पहुँचती है और वह अपना आधा काम छोड़कर ही हनहनाता हुआ निकल भागता है। मगर उसके हृदय की उदारता में कमी नहीं आती और वह शीतलपाटी तथा आसनी स्टेशन पर रेलगाड़ी खुलते समय नि:शुल्क ही मानू को दे आता है। गाँवों में इस प्रकार की घटनाएँ प्राय: घटती रहती हैं और मालिकों की डाट-डपट से मजदूरों के हृदय पर चोट पड़ती रहती है। ग्रामीण जीवन के इस यथार्थ को रेणु ने बड़ी ही कुशलता के साथ ***ठेस*** कहानी में दर्शाया है।

छोटी-सी कहानी पंचलाइट में तो ग्रामीण जीवन का यथार्थ अपनी पराकाष्ठा पर पहुँचा हुआ परिलक्षित होता है। महतो टोली मे पंचायत के सरदार और दीवान द्वारा पेट्रोमैक्स इसलिए खरीदा जाता है कि अन्य जातिवालों की पंचायतों में पेट्रोमैक्स है। पेट्रोमैक्स आने की खुशी में सबके हृदय में उत्साह है। कीर्तन-मंडली कीर्तन करने को तत्पर है मगर लाइट जलाने की कला किसी को नहीं आती। इसी बीच उस गोधन को बुलाया जाता है जिसे मुनरी को देखकर सिनेमा के गीत गाने के अपराध में बिरादरी से निकाल दिया गया था। गोधन लाइट जला देता है इससे सबमें खुशी की लहर दौड़ जाती है। पंचों द्वारा उसे कहा जाता है गोधन! तुम्हारा सात खून माफ! तुमने जाति की इज्जत रख ली खूब गाओ सिनेमा के गीत। इस कहानी के माध्यम से राजनीतिक पार्टियों के सिद्धान्त और नैतिकता पर जो व्यंग्य किया गया है। उसमें ग्रामीण यथार्थ का बड़ा ही प्रकृत चित्र उभर सका है।

रेणु-लिखित सर्वाधिक लोकप्रिय और सफल कहानी है ***तीसरी कसम***, जिसमें भी ग्रामीण यथार्थ का वातावरण मनोवैज्ञानिक और सामाजिक पृष्ठभूमि मे प्रस्तुत हुआ है। कहानी में घटित घटना और अंत में हीरामन के अकेलेपन में जो संवेदना दृष्टिगोचर होती है। वह ग्रामीण जीवन का यथार्थ नहीं तो और क्या है।

भितिचित्र की ***मयूरी*** कहानी के माध्यम से लेखक ने गाँव में कैद कला को और निखारने का प्रयास किया है। तभी तो सनातन द्वारा दिल्ली से जाये जाने पर भी फुलपतिया की माँ गाँव में ही लौटकर आ जाना चाहती हैं। यद्यपि दिल्ली में उसे काफी पुरस्कार मिलते हैं और इससे उसके गाँव के लोग भी प्रसन्नता और गर्व का अनुभव करते हैं तथापि वह गाँव में ही लौट आती है सनातन उससे विवाह करने की बड़ी चेष्टा करता है। मगर वह इसके लिए तैयार नहीं होती। फलत: सनातन मोहनपुर गाँव में मधुबनी आर्ट सेंटर

खोलकर रह जाता है। अनेक प्रलोभनों के बावजूद भी फूलपतिया की माँ द्वारा गाँव न छोड़ा जाना उसके ग्राम-मोह या ग्राम-प्रेम का परिचायक है। यह भी ग्रामीण जीवन के यथार्थ का एक मनोवैज्ञानिक चित्र है।

गाँवों में प्राय: ऐसा देखा जाता है कि जनहित के लिए सभी जाति धर्म और सम्प्रदाय के लोग मिल-जुलकर काम करते हैं। फणीश्वरनाथ रेणु ने *जलवा* शीर्षक कहानी में ग्रामीण-जीवन के इसी यथार्थ को दर्शाने का प्रयास किया है। यह यथार्थ फातिमा दी द्वारा हिन्दू सम्प्रदाय के साथ मिलकर समाज और राष्ट्र के कल्याणार्थ किया जाने वाला कार्य है।

मेरी प्रिय कहानियाँ कहानी-संग्रह में भी नौ कहानियाँ हैं जिनमें रेखाएँ वृत्तचक्र अगिनखोर. आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इन कहानियों में भी ग्रामीण जीवन के यथार्थ की झाँकी देखी जा सकती है। ग्रामीण-जीवन में प्रचलित अंधविश्वास का पर्दाफाश 'ईश्वर रे मेरे बेचारे' कहानी में किया गया है। इस कहानी में गाँव के एक देवता बट बाबा का गुणगान किया गया है। इस कहानी का उपस्थापन लेखक ने इस ढंग से किया है कि कहानी का अंत होते-होते पाठकों के मन में बट बाबा के प्रति अटूट और असीम श्रद्धा घर जाती है और मन एक अनदेखे अचम्भा में डूब जाता है। वर्तमान प्रगतिशील युग में भी ग्रामीण लोगों के बीच जो अंधविश्वास और रूढ़ि व्याप्त हैं उसका बड़ा ही यथार्थ चित्रांकरण इस कहानी में देखा जा सकता है।

संवदिया कहानी आदि से अंत तक ग्रामीण जीवन के यथार्थ कहानी है। गाँव में प्राय: देखा जाता है कि विधवाओं की परिवार के लोग बड़ी यातना देते हैं, जिससे उनका जीवन बड़ा ही दु:खमय हो जाता है। संवदिया कहानी की बड़ी बहुरिया का जीवन भी कुछ ऐसा ही है जो तीन-तीन देवरों के रहते हुए भी मोदिआइन के कर्ज तले डूब जाती है। वह अब तंग आकर अपने मैके में हरगोबिन द्वारा यह सन्देश भेजना चाहती है कि वह भाभी के बच्चों की जूठन खाकर वहाँ घर के एक कोने में पड़ी रहेगी मगर अपने गाँव की शिकायत के डर से हरगोबिन यह संदेश उसे मैके में जाकर देना नहीं चाहता। वह बड़ी बहुरिया से कहता है-'तुम गाँव छोड़कर मत जाओं तुमको कोई कष्ट न होने दूँगा मैं तुम्हारा बेटा। बड़ी बहुरिया तुम मेरी माँ, सारे गाँव की माँ हो। माँ अब निठल्ला नहीं बैठा रहूँगा। तुम्हारा सब काम करूँगा। बोलो बडी माँ तुम गाँव छोड़कर चली तो नहीं जाओगी ग्रामीण जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत करनेवाली यह कहानी हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियों में परिगणित कही जाती है।

इसी प्रकार आदिम रात्रि की महक कहानी-संग्रह में अतिथि-सत्कार, कहानी के अन्तर्गत तोच्छ नामक संस्था के कार्यक्रम में भाग लेने हेतु जाने वाले अतिथि को सत्कार के बदले बैलगाड़ियों पर सवार लठैतों का जो सामना करना पड़ता है उसमें गाँव के विघटित सांस्कृतिक यथार्थ का बड़ा ही स्वाभाविक चित्र मिलता है।

नैना जोगिन कहानी में भी माधो बाबू तथा नैना जोगिन के सम्बन्ध द्वारा ग्रामीण जीवन के यथार्थ को ही उकेरा गया है। आज भी गाँव मे माधो बाबू पुरुष हैं और नैना जोगिन जैसी जबर्दस्त नारी है।

इसी प्रकार रेणु की कतिपय अन्यान्य कहानियों में भी ग्रामीण जीवन के यथार्थ के चित्र मिलते हैं।

रेणु की भाषा में भी ग्रामीण शब्दों के खूब प्रयोग मिलते हैं तथा उनकी शैली में ग्राम्यता की गंध मिलती है।

जो भी हो इतना तो मानना ही होगा कि फणीश्वर नाथ रेणु की कहानियों में ग्रामीण जीवन के यथार्थ के एक-से-एक स्वाभाविक और मनोवैज्ञानिक चित्र उभरे हैं।

संपर्क: *प्रो. डॉ. नवल किशोर प्र. श्रीवास्तव, पूर्व अध्यक्ष,*
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,
आर.एन.कॉलेज, हाजीपुर (वैशाली)

रेणु की रचनाएं ग्रामीण मानस से जुड़ी अमूल्य निधियाँ

मंच ने रेणु को याद किया 84वीं जयंती पर

विगत 4 मार्च को राष्ट्रीय विचार मंच की बिहार इकाई की ओर से पटना के सिन्हा लाइब्रेरी में अमर कथा-शिल्पी फणीश्वरनाथ रेणु की 84वीं जयंती पर एक साहित्यिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें बिहार विश्वविद्यालय के राजनारायण कॉलेज के पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो॰ (डॉ) नवल किशोर प्रसाद श्रीवास्तव ने रेणु की कहानियों में ग्रामीण जीवन के यथार्थ विषय पर एक तथ्यपरक आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि प्रेमचंद के पश्चात रेणु की रचनाएँ ग्रामीण जन-मानस से जुड़ी अमूल्य निधियाँ है। जिसमें ग्रामीण जीवन के चित्र यथार्थ के धरातल पर उकेरे गये हैं।

मंच के राष्ट्रीय महासचिव सिद्धेश्वर ने संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए विषय वस्तु को प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने कहा कि प्रेमचंद की विरासत को पहली बार एक नयी पहचान दिलानेवाले कथाकार रेणु का मन, मानों सरसों की पोटली है। तीन बिंदिया रेणु की कहानियों की सुक्ष्म अंतर्ध्वनियां है जहाँ रेणु का कथाकार- मन छुपा है। अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री सिद्धेश्वर ने पुन: कहा कि कोसी के आंचल में बसे गाँव और हिंगनाऔराही का आज कोई रेणु नहीं जो गाँवो की व्यथा लिखे और ग्रामीण जीवन के यथार्थ को सामने लाये।

संगोष्ठी में निर्धारित विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए विशिष्ट वक्ता डॉ. राम शोभित प्रसाद सिंह, डॉ. सतीश राज पुष्करणा, डॉ. शिव नारायण, देवेन्द्र देव, युगल किशोर प्रसाद, सीताराम यादव, आदि साहित्यकारों ने भी रेणु को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि आर्पित की। प्रारंभ में मंच के संयुक्त सचिव (साहित्य) दुर्गाशरण मिश्र ने जहाँ अतिथियों का स्वागत किया वहीं कार्यकारणी सदस्य राजभवन सिंह ने आभार प्रकट किया। मंच के महासचिव डॉ. शाहिद जमील ने कार्यक्रम का संचालन किया।

प्रस्तुति: डॉ. शाहिद जमील

हैदराबाद की चिट्ठी

राजनीति: 23 दिसम्बर 2004 ई॰ को आंध्र प्रदेश के एक अनमोल लाडले तथा भारत के भूतपूर्व प्रधान मंत्री और देश के आर्थिक सुधारों के सुत्रधार कहे जानेवाले नेता पी.वी. नरसिम्हा राव जी का निधन हो गया। अपने कार्यकाल में उन्हें मौनी बाबा से लेकर चाणक्य के उपनामों से पुकारा जाता रहा। स्व॰ पी॰ वी॰ नरसिम्हा राव जहाँ अपने मौन से विरोधियों के खिलाफ राजनीतिक हथियार की तरह प्रयोग करते थे, वहीं अपनी राजनीतिक चाल से एक अल्पमत सरकार के कार्यकाल को पूरा किया। हैदराबाद के प्रसिद्ध झील हुसेन सागर के किनारे उनकी अंत्येष्ठी 25 दिसम्बर को पूरे राजकीय सम्मान के साथ की गई।

त्यौहार: 13 जनवरी 2005 ई॰ को बड़े भव्य ढंग से लोहडी त्योहार मनाया गया। विभिन्न संस्थाओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जिनमें पंजाबी लोक गीत एवं भांगडा नृत्यों का आनंद उठाया गया।

14 जनवरी को मकर संक्रांति का पर्व बड़े हर्षोल्लास से मनाया गया, जहाँ महिलाओं ने अपने प्रांगण को रंगोलियों से सजाया, वहीं बच्चों ने दिन भर पतंगबाजी का आनंद लूटा।

कला: हिंदी रंगमंच की ओर दर्शकों की रूचि मोड़ने के लिए हैदराबाद की नाट्यशाला सूत्रधार अभिनय स्कूल ने नाटकों का सुंदर मंचन किया। सुत्रधार ने दर्शकों को हँसाने वाली करोड़ीमल की लाश जैसी हल्की-फुल्की नाटिका के साथ-साथ प्रदीप दलवी के सुप्रसिद्ध मराठी नाटक मी नाथुराम गोड्से बोलतोय का हिंदी रूपान्तर प्रस्तुत करके दर्शकों का मन मोह लिया।

नाटक में नाथुराम... का निर्देशन प्रो. भास्कर शिवालकर और विनय वर्मा ने किया था। गोड्से की भूमिका में विनय वर्मा और पुलिस अधिकारी के रूप में अरुण शेंडूरनिकर के अभिनय को बहुत सराहा गया।

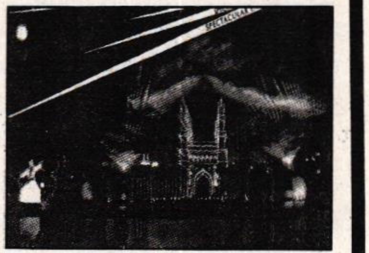

पर्यटन: हैदराबाद का सलारजंग संग्रहालय पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र बन गया है। 2 मार्च 1949 को जब सालारजंग तृतीय का देहांत हुआ। तब भारत सरकार ने उनके द्वारा संग्रहित दुर्लभ वस्तुओं को एक संग्रहालय में रखने का निश्च किया। डॉ. जेम्स कजिन्स और जी. वेंकटराचलम की देख-रेख में इस संग्रहालय की स्थापना 16 दिसम्बर 1951 को हुई। पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए संग्रहालय ने 16 से 22 दिसम्बर 2004 तक ग्लिम्पसेस ऑफ सालारजंग पैलेस कार्यक्रम का आयोजन किया जिसे दर्शकों का उत्साहवर्धक समर्थन मिला।

शहर के बीचोंबीच स्थित लुमिब्नी पार्क पर्यटकों का आकर्षण रहा है। इस पार्क को चार चाँद लगाने के लिए अब इसमें देश का पहला सब से बड़ा लेजर-कम-म्यूजिकल फाउंटेन स्थापित किया गया हैं आधा घंटा चलनेवाले इस शो में डांसिंग पीकाक टेल, सन बस्ट, डांसिगं फाउंटेन, रोटरी व्हील आदि का प्रदर्शन दर्शकों को आकर्षित कर रहा है।

साहित्य: 21 दिसम्बर 2004 ई॰ को अखिल भारतीय कवयित्री सम्मेलन का पाँचवा अधिवेशन प्रारम्भ हुआ जिसमें देश के विभिन्न क्षेत्रों से पधारे कवयित्रियों का सम्मान किया गया। हैदराबाद के रवीन्द्र भारती सभागार में आयोजित सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि दैनिक सामाचार पत्र स्वतंत्र वार्ता के सम्पादक डॉ. राधेश्याम शुक्ल थे। इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि नारी जन्म से ही कवयित्री होती हैं तथा महिलाओं से निहित संवेदनशीलता उनकी कविताओं में झलकती है। 28 दिसम्बर 2004 ई॰ को भारतीय भाषा-संस्कृति संस्थान की दो दिवसीय अखिल भारतीय राजभाषा प्रशिक्षण संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें छ: विभिन्न राज्यों से आये 17 वरिष्ठ अधिकारियों ठाकुर तथा दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, धारवाड के उच्च शिक्षा और शोध संस्थान के अध्यक्ष प्रो॰ दिलीप सिंह ने भी भाग लिया।

प्रो॰ दिलीप सिंह ने राजभाषा हिंदी के मानदण्डों का परिचय देते हुए कहा कि हिंदी को अनुवाद की बैसाखी के द्वारा स्वाभाविक गति पर नहीं लाया जा सकता।

प्राकृतिक प्रकोप: प्रकृति पर किसी का वश नहीं चलता। मानव जब प्रकृति का अँधाधुंध शोषण करता है तो पृथ्वी डोल जाती है। 26 दिसंम्बर 2004 ई॰ को आए सुनामी लहर का प्रभाव आंध्र के कुछ इलाकों पर भी पड़ा। आंध्र प्रदेश के निजामपटटणम, कोटटापालेम, लक्ष्मीपुरम आदि तटीय क्षेत्रों में सुनामी प्रभाव देखा गया। प्रलय चाहे जहाँ भी हो, मानव संवेदना तो हर जगह व्याप्त हो जाती है हैदराबाद के कई संस्थानों, संस्थाओं और समाजसेवियों ने अपने-अपने तरीकों से राहत कार्य में हाथ बटांया। इस घटना ने यह जतला दिया कि मानव चाहे कितनी भी प्रगति कर लें, फिर भी वह प्रकृति के अधीन ही रहेगा। परंतु किसी भी प्रकृतिक प्रकोप से निबटने के लिए जब सारा समाज एकजुट होकर खड़ा होता है, तो यह आशा बनी रहती है कि अभी मानवीय संवेदना जीवित है।

केरल के करीम का इतिहास

पिछले 25 वर्षों से केरल के पहाड़ी क्षेत्र नीलेश्वर को हरे-भरे जंगलों से आबाद करने के अभियान में जुटे अब्दुल करीम ने एक ऐसा करिश्मा कर दिखाया है जिसकी कल्पना सहज नहीं है। केरल के नीलेश्वर में सन् 1947 में एक सामान्य परिवार में जन्मे करीम का मन जब विद्यालय में शिक्षा के बाद उच्च शिक्षा में नहीं लगा तो वह मुंबई जाकर डाक्यार्ड कंपनी में काम करने लगे। सन् 1969 में इस नौकरी के छूट जाने के पश्चात् वे घर वापस आ गए और निराशा के दौर में उन्होंने लेखाकार का काम प्रारंभ किया, किंतु बड़े-बड़े सपने देखने का आदमी करीम ट्रेवेल एजेंट तब बन गया जब केरल के मुस्लिम समुदाय के लोग खाड़ी देशों में पलायन करना शुरू किया। लेकिन नीलेश्वर क्षेत्र की उबड़-खाबड़ चटटानों की वजह से वर्षा नहीं होने के चलते उस इलाके के लोगों को जल संकट का सामना करना पड़ता था, जिससे करीम को बेहद परेशानी हुई। इसी सोच की वजह से उसने 5 एकड़ बंजर भूमि खरीदकर तीन साल तक उसमें विभिन्न प्रकार के पौधे लगाने का प्रयास किया। उनका परिश्रम निरर्थक होने के बावजूद उन्होंने हार नहीं मानी। फिर चौथे साल से उन्हें सफलता मिलने के बाद उन्होंने पड़ोसी किसानों की 32 एकड़ बंजर भूमि मुँहमांगी कीमत अदा कर खरीद ली। उनके इस कारनामे पर लोग इसलिए हँस रहे थे कि उस भूमि पर वर्षों से कुछ उपज नहीं रहा था। दरअसल करीम को संभावना नजर इसलिए आने लगी कि उनके पौधे बढ़ रहे थे। पक्षियों की संख्या बढ़ रही थी और कभी-कभी वर्षा भी होने लगी थी। देखते -देखते उस क्षेत्र का जलस्तर उठने लगा और लगभग नीलेश्वर के 10 वर्गकिलामीटर के दायरे तक यह प्रभाव देखने को मिला। पहाड़ी क्षेत्र हरे-भरे जंगल मे आबाद हो रहा था और इस इलाके का जल-सकंट धीरे-धीरे दूर हो चुका है। करीम आज भी अपने परिवार के साथ उसी जंगल में रह रहा है। करीम ने अकेले वह कर दिखाया जिसे सरकारें नही कर पा रही थी।

डॉ. एन चन्द्रशेखरन नायर, तिरुवनंतपुरम से

प्रकृति और मानव

मेरीना समुद्र तट चेन्नै का नगीना है, जिसके तट पर महानगर का जीवन धड़कता है यहाँ के निवासी अपने जीवन के उतार-चढ़ाव को समुद्र की लहरों के साथ एकाकार कर लेते हैं। अकेले व्यक्तियों की तन्हाई का साथी है यह समुद्र और कई दर्द एव दिलों का हमराज भी है। यहाँ दिलों में हजार तुफा एवं गुबार लिए आते है इसके किनारे लोग, किंतु वापसी पर ताजा दिलो-दिमाग एवं जीवन-संघर्ष से जूझने की अदभुत ऊर्जा लिए वापस लौटते हैं वे लोग। साम्राज्यों के उत्थान-पतन का साक्षी रहा है यह समुद्र और राजनैतिक उठा-पटक का मूक गवाह भी, किंतु गत 26 दिसंबर को चेन्नैवासियों ने समुद्र के स्वभाव के विपरीत उसका जो रौद्र रूप देख, उसकी दहशत भरी कहानियाँ आनेवाली कई पीढ़ियों के रोंगटे खड़े कर देगी।

वैज्ञानिक अन्वेषक और आविष्कारक के बलबूते पर मानव प्रकृति पर विजय पाने का चाहे लाख दावा करे क्लोनिंग विधि के जरिए भेड़-बकरी के सृजन द्वारा वह ईश्वरीय सत्ता को ललकारने का अहं पाले, किंतु समय-समय पर प्राकृतिक प्रकोप जैसे ज्वालामुखी-विस्फोट, सूखा-बाढ़, अकाल, महामारी और अब सुनामी के प्रकोप ने मानव-जाति पर कहर ढा कर प्रकृति के आगे उसकी तुच्छता, उसके बौनेपन का एहसास दिलाने के साथ उसे प्रकृति की मर्यादा का भंग न कर अपनी सीमा में रहने की चेतावनी भी देते हैं।

हर रोज सुबह शाम बीच रोड से गुजरते हुए समुद्र के आगे बढ़ आए कदम को देख सोचने लगती हूँ क्या प्रकृति अपना संतुलन स्वयं बनाती है। दादी-नानी के किस्से कहानियों का पाताल-राक्षस क्या इससे भिन्न होता होगा? कामायनी में वर्णित जल-प्लावन ऐसा ही होगा, जिसमें प्रकृति पुराने का विनाश कर पुन: नए सिरे से सब कुछ रचती है ताकि यह सृष्टि जीवन-यापन के लिए सत्य से प्रेरित एक सुंदर स्थल बन शिवत्त्व रूप को प्राप्त कर मानव-जाति के लिए मंगलमयी हो।

जीवन रुकता नहीं और समय-चक्र थमता नहीं इस तर्ज पर चेन्नै एवं तमिलनाडु के प्रभावित इलाकों में विनाश से बचे अवशेष को जोड़कर की नई शुरूआत को सुनहरा अंजाम देने के भरसक प्रयत्न किए जा रहे हैं। चुप्पी साधे वर्ष 2005 की दस्तक और पोंगल एवं मकर संक्राति के त्यौहार पर उत्साह के स्थान पर उदासीनता एवं गमों के बादल छाए रहना, मानव-जाति के विनाश एवं प्राकृतिक प्रकोप की भयावहता को नि:शब्द कह देते हैं। ऐसे मानव को चाहिए कि वह अपने जीवन-मूल्यों का पुन: आकलन करे एवं अपने जीवन की प्राथमिकताओं को परखते हुए अपने भौतिक सुखों के संसाधनों को लगाम देते हुए प्रकृति से छेड़खानी न कर उसका संरक्षक बने, तभी प्रकृति के इस रूप की पूजा का विधान है और नदियों को जीवन-रक्षक व पालक मान उसे माँ का पवित्र एवं श्रेष्ठ स्थान दिया गया है। सृष्टि के नियामक सूर्य चाँद-सितारे, वन-पर्वत समुद्र आदि को देव मान उनकी आराधना की जाती है, जिसमें इनके मंगलमय रूप की अर्चना की जाती है। विज्ञान इसे अंधविश्वास माने, चाहे इसका उपहास करे, किंतु देश का कालजयी सत्य यही है।

सुनीता जाजोदिया, चेन्नै

22 रचनाकार सम्मानित

पिछले दिनों नई दिल्ली के फिक्की सभागार में हिंदी के जाने माने कवि वीरेन डंगवाल सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं के निर्मांकित 22 रचनाकारों को साहित्य अकादमी पुरस्कार से अकादमी के अध्यक्ष प्रो. गोपीचंद नारंग ने प्रत्येक को 50 हजार रुपये की नकद व स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया।

क्रमांक	भाषा	पुरस्कृत रचनाकार
1.	असमिया	हिरेन्दनाथ दत्त
2.	बांग्ला	सुधीर चक्रवर्ती
3.	डोंगरी	शिवनाथ
4	अंग्रेजी	उपमन्युचटर्जी
5	गुजराती	आतमलाल वेगड
6	कन्नड़	गीता नागभूषण
7	कश्मीरी	गुलामनबी फिराक
8	कोंकणी	जयंती नायक
9	मैथिली	चन्दभानु सिंह
10	मलयालम	पोल जकारिया
11	मणिपुरी	वीरेन्द्रजित नाओरेम
12	मराठी	सद्धानन्द नामदेव देशमुख
13	नेपाली	जस योज्जन प्याली
14	ओडिया	प्रफुल्ल कुमार मोहांती
15	पंजाबी	सुतिन्दर सिंह नूर
16	राजस्थानी	नंद भारद्वाज
17	संस्कृत	देवर्षि कलानाथ शास्त्री,
18	सिधी	सतीष रोहए
19	तमिल	इरोड तमिषनबन
20	तेलुगू	नवीन
21	उर्दु	सलाम बिन एजाक
22	हिंदी	वीरेन डंगवाल

इनमें से सात कवि, छह उपन्यासकार, तीन कहानीकार, दो आलोचक, एक यात्रा-वृत्तांतकार तथा अन्य विधाओं के तीन रचनाकार सम्मनित हुए। इनमें मात्र दो महिलाएं थी। मुख्य अतिथि थे कन्नड़ लेखक यू. आर. अनंतमूर्ति।

मृणाल सेन को फाल्के पुरस्कार

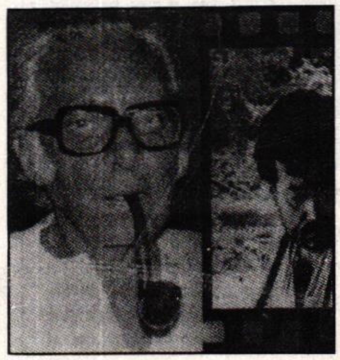

भुवनसोम, मृगया और खारिज जैसी पुरस्कृत फिल्मों के निर्माता मृणाल सेन को राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने विगत दो फरवरी को नई दिल्ली में भारतीय सिनेमा का सर्वोच्चय सम्मान दादा साहब फाल्के पुरस्कार प्रदान किया। वर्ष 2005 के लिए फाल्के पुरस्कार से सम्मानित फिल्मकार मृणाल सेन का जन्म 14 मई 1923 को फरीदपुर बांग्लादेश में हुआ था।

उनकी पहली फिल्म ***रात भोरे*** थी। सत्यजीत राय, ऋत्विक घटक और मृणाल सेन, शास्त्रीय सिनेमा की इस अदभुत त्रयी के श्री सेन अंतिम जीवित कड़ी हैं। नया सिनेता का व्याकरण रचनेवाले और विशिष्ट मुद्रा विकसित करने वाले मृणाल सेन में सत्य को उभारने की छटपटाहट है। हर फिल्म में कुछ न कुछ मौलिक दिखा सकने की उनकी विलक्षण प्रतिभा मुग्ध करती है।

उनकी राजनीतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक चेतना प्रखर है। उनकी सृजनशीलता में निरंतरता है, उनकी फिल्में छोटी होती हैं, किंतु चिंताएँ से बड़ी हैं। वाम प्रतिबद्धता की कसौटी में कसकर उनकी फिल्में मनुष्य के जीवन में आ रही जटिलता को भी रेखांकित करती हैं और दर्शक को दिल-दिमाग से झकझोर देने की उनकी फिल्मों में सामर्थ्य है।

नेमिचंद को शलाका तथा जैमिनी को काका सम्मान

नेमिचंद को शलाका तथा जैमिनी को काका सम्मान सुप्रसिद्ध साहित्यकार नेमिचंद्र जैन को वर्ष 2004-2005 का शलाका और अरुण जैमिनी को काका हाथरसी सम्मान से साहित्य अकादमी द्वारा नवाजा गया।

उर्दू अकादमी द्वारा 12 हस्तियाँ सम्मानित

दिल्ली अर्दू अकादमी की ओर से पिछले 9 मार्च से दिल्ली के श्रीराम सेंटर में आयोजित एक सालाना कार्यक्रम मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित ने समालोचक डॉ. तनवरी अहमद अलवी को एक लाख ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह रुपए की राशि के अतिरिक्त शॉल, प्रतीक चिन्ह तथा प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया। इक्कीस हजार रुपए की राशि से सम्मानित अन्य हस्तियों में अजीज बनर्जी,, वकार मानवी, सुरजीत सिंह लांबा, योगेन्द्र बाली, मोईन एजाज, रईस सिदि्दकी, राहत सुलतान, रियाजत अली माईक और जकीर उद्दीन थे। इस अवसर पर आगा हश्र कश्मीरी के नाटक 'यहूदी की लड़की' का मंचन भी किया गया।

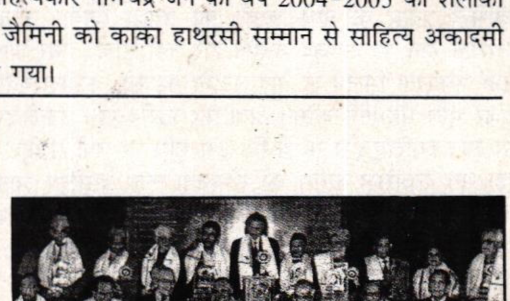

रजनीकांत: देहावसान एक बाल साहित्यकार का...

सिद्धेश्वर

जब जीवन निस्तार तथा अर्थहीन होने लगता है और व्यक्ति बेबस, लाचार निस्सहाय , और तनहा, तो मृत्युजीवन की मूल समस्या ही नहीं, बल्कि केंद्रीय दर्शन भी बन जाती है। रजनीकांत सिन्हा, जिन्हें हम बड़े अदब से रजनी बाबू कहते रहे और लोग उन्हें मास्टर साहब कहा करते थे, के आखिरी जीवन पर जब हम एक नजर डालते हैं तो पाते हैं कि जब से वे शय्या-ग्रस्त (Bed Ridden) हुए बच्चों के साहित्य को लेकर हो या समाज अथवा राजनीति, अपनी बेबसी, लाचारी और तनहा की स्थिति में उनसे मुझे दर्शन की बातें ही सुनने को मिलीं। कारण कि उन्हें जीवन के निस्तार होने पर उनका अपनी निकटतम दुनिया से कोई संबंध नही रह गया। फलत: उनके जीवन में एक शून्य उत्पन्न हो गया। अपनी वंचनाओं की व्यथा से साक्षात्कार करने, स्वत्त्व को पुनर्स्थापित करने, जीवन के मूल्यों को निर्धारित करने तथा मूल्यों को नए परिणामों से जोड़ने की अपेक्षा एवं प्रयास ने मुझे अत्यंत प्रभावित किया।

रजनी बाबू मुख्य रूप से एक बाल साहित्यकार थे। आज के बच्चों एवं युवा पीढ़ी को लेकर वह बहुत चिंतित रहा करते थे। घूम-फिरकर उनकी चर्चा में बाल व युवा वर्ग आ ही जाता था। एक बार ऐसी चिंतन मुद्रा में उन्होंने कहा-'सिद्धेश्वर जी, आज बाल व युवा किस दिशा में जा रहे हैं?'... मैंने उन्हें थोड़ा कुरेदा। बोला-'रजनी बाबू, अब जमाना करवट ले रहा है' वह आक्रामक होते हुए बोले-'क्या खाक जमाना बदल रहा है, जमाना नहीं हमारे मूल्य बदल रहे हैं मान्यताएँ बदल रही हैं'।

रजनी बाबू बड़ी सिद्दत से यह महसूस करते थे कि बच्चों का बालमन, उनको बचपना, हिंसा और अपसंस्कृति फैलाती इलेक्ट्रॉनिक बिंबों के कारणों से कैसे बचाया जाए। उनकी इस चिंता से हम वाकिफ हैं कि प्रतिस्पर्द्धात्मक समाज में आशा से अधिक

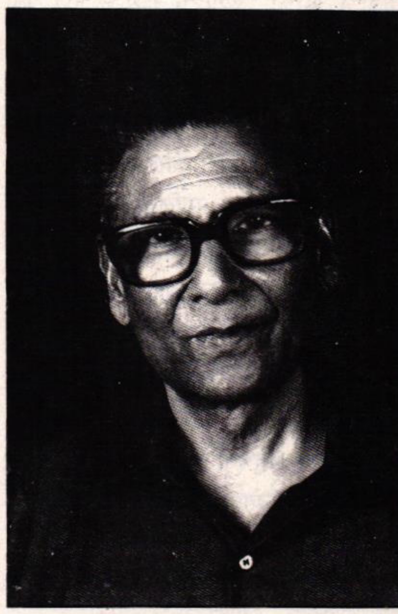

उम्मीद संजोए अभिभावकों की बच्चों को उनक नैसर्गिक प्रकृति से दूर रखने की मानसिकता ने दूरदर्शन की सार्वभौमिकता को ग्राहक बना दिया है। बच्चों पर दायित्व बढ़े हैं और उनसे अपेक्षाएँ भी बदली हैं। ऐसे में उनकी चिंता यह थी कि बच्चों में बढ़ती जिज्ञासाओं को ध्यान में रखते हुए उनकी बौद्धिक एवं मानसिक खुराक की पूर्ति समृद्ध बाल साहित्य से की जानी चाहिए और बदलते परिवेश एवं बदलते मिजाज के साथ बाल साहित्यकारों को भी किसी नएपन की आस जगानी चाहिए। यहीं नहीं बाल-साहित्य के नाम पर लिखी जानेवाली सामग्री हाइटेक और कंप्यूटरीकृत जमाने के बच्चों के लायक सर्वथा उपयुक्त होनी चाहिए ताकि बच्चे एक ओर तो समाज-संस्कृति से जुड़ सकें और दूसरी ओर वे सामाजिक-वैज्ञानिक बदलावों से भी अवगत होते रहें।

रजनी बाबू कहा करते थे कि बालक का जीवन निर्माण का जीवन है। अत: बाल साहित्य के माध्यम से बालकों को ज्यादा-से-ज्यादा नैतिकता आदर्शों और मूल्यों की शिक्षा दी जानी चाहिए, जिसका आज की शिक्षा में अभाव है।

यही कारण है कि आज बाल पाठक कॉमिक्स से इतने अधिक प्रभावित हैं कि स्वस्थ साहित्य पर आधारित पत्र-पत्रिकाओं के प्रति बालकों का लगाव कम हो गया है। अभिभावक अज्ञानवश बालकों को अनपेक्षित कॉमिक्स से अलग नहीं कर पा रहे हैं, इसलिए रजनी बाबू अधिकाधिक मौलिक बाल साहित्य के लेखन की आवश्यकता पर बल देते रहे।

रजनी बाबू का संपूर्ण जीवन एक कर्मयोगी-की तरह लक्ष्यनिष्ठ था। बाल साहित्य के काव्य पक्ष को उनके शिशु और बाल गीतों ने प्रसिद्धि दिलाई। बालकों के लिए उन्होंने विज्ञानपरक गीत देकर बहुत कुछ सफलता प्राप्त की थी।

उनकी प्रसिद्ध बाल पुस्तकों में इक्कीसवीं सदी के *पूर्व की गूँज*, *संतों के संदेश*, और *गुनगुनाते बच्चे* उल्लेखनीय हैं। उनके गीतों को सत्य की तलाश कैसेट में संजोया गया है, जिसके गीतकार हैं पंडित रामदास मिश्र।

एक बाल साहित्यकार होने के साथ ही वे कभी-कभी संगोष्ठियों का आयोजन नयी पुरानी पीढ़ी के रचनाकारों और शिक्षकों

की सम्मान भी करते थे और उसी संगोष्ठी में अपने गीतों पर बने कैसेट्स भी सुनवाते थे। उनका जीवन अँग्रेजी तथा हिंदी की आधुनिक और अद्यतन जानकारियों से परिपूर्ण था। इसके अतिरिक्त वे सांस्कतिक और संस्कार संपन्न थे। आखिर तभी संगीत के मर्मज्ञ श्री रामदास मिश्र उनके समीप बैठकर अक्सर कर हर संगीत पर चर्चा किया करते थे। श्री मिश्र ने रजनी बाबू के बताए गीतों को कैसेट्स में संगीतवद्ध किया था। बाल साहित्य उनकी प्राथमिकताओं में से सर्वोपरि था। उसमें भी बाल गीत व कविता में उनकी विशेष अभिरुचि थी। बाल गीत से न सिर्फ वे जुड़े थे, बल्कि उसे पल-पल जीते रहे। उनके भीतर बच्चों के प्रति एक विराट हलचल थी जिससे वह अपने पोपले मुँह के स्फुट स्वरों में बाँधने की कोशिश कर रहे थे।

साहित्य में गुटबंदी को लेकर मेरी उनके चर्चाएँ होती रहती थीं। उन्हें बार-बार लगता था कि साहित्य में गुटबंदी हो रही है, श्रेत्रीयतावाद पनप रहा है और चाटुकारिता प्रमुख हो गयी है।

रजनी बाबू एक ऐसे कवि थे, जिन्होंने बाल गीत को जीवन-साधना को काम माना और बराबर सृजनरत् रहे। जीवन के आखिरी वर्षों में अपने पुत्रों खासकर बड़े पुत्र शशि के साथ पटना के पार्क रोड स्थित मकान में पड़े रहे और उनका मन जहाज़ के पंछी की तरह अंतत: बाल कविताओं में ही रमता रहा। उनकी मैत्री साहित्य व समाज की दुनिया में कम लोगों से थी पर जिनसे थी, उनसे उनका वास्ता आजीवन बना रहा। प्रो॰ राम बुझावन बाबू के अतिरिक्त उन खुशनसीब लोगों में से एक मैं भी था। इस लिहाज से जनवरी 2005 में जब मैं दिल्ली से पटना लौटा तो राम बुझावन बाबू से उनकी मृत्यु की खबर मेरे लिए आघात जैसी थी, कहते हैं- अटूट संबंधों को नियति सबसे अधिक पहचानती है। एक बार उन्होंने बहुत विकल और आर्द्र होकर रहा था- *'सिद्धेश्वर जी, जिन हालात में मैं रह रहा हूँ, उनमें मैं जीवित कैसे हूँ, खुद मेरी समझ में नहीं आता, क्योंकि कायदे से तो जिन हालात में मैं हूँ, उनमें मुझे जीवित नहीं रहना चाहिए था...'*

रजनी बाबू अपने यशस्वी जीवन काल मैं एक लंबे समय तक साहित्य एवं पत्रकारिता से जुड़े रहे। अपने आकर्षक और व्यवहार-कुशल व्यक्तित्व, उत्कृष्ट बाल गीत सर्जना और प्रभावपूर्ण वक्त शैली के माध्यम से वे सामाजिक एवं साहित्यिक मंचों पर सदैव आदर और सम्मान के साथ सुने जाते थे। उन्होंने अपने जीवन काल में प्रेस से जुड़े होने के कारण प्रेस मालिकों तथा उनके कर्मचारियों से भी अच्छा ताल्लुक रखा। रजनीबाबू के बारे में एक बात दो-टूक शब्दों में कही जा सकती है कि वह शुरू से लेकर देहावसान के पूर्व तक 'स्वतंत्र पथ-' के पथिक रहे। बड़ी-बड़ी किताबी बातें करने की बजाय, अपने अनुभवों पर ज्यादा भरोसा करते थे और सदैव चिंतनशील रहे। ऐसे समय में जब वे बहुत कुछ भुलकर अब जा चुके हैं उनकी कृतियों को एक बार फिर पढ़ना, अजीब-सी करुणा से भर देता है। इसलिए कि एकओर ये कृतियाँ उनके जीवन के कठिन संबंधों की गवाही देती जान पड़ती हैं तो दूसरी ओर पता चलता है कि वे अनुभव कितने मूल्यवान थे जिनसे गुजर कर उन्होंने इन्हें लिखा होगा। सच तो यह है कि आज के निरंतर नीले पड़ते संबंधों के दौर में जबकि असली जीवन रस बहुत कम रह गया है, रजनी बाबू की कृतियों एवं समय-समय पर लिखे गए उनके आलेखों को पढ़ना एक गहरी सांद्रभावना या सघन अनुभूतियों से जुड़ जाने जैसा है। वह पूरी तरह एक सामाजिक एवं पारिवारिक व्यक्ति थे और उन तमाम सभ्य लोगों से अलग थे जो अहं से जीवन भर

> *'सिद्धेश्वर जी, जिन हालात में मैं रह रहा हूँ, उनमें मैं जीवित कैसे हूँ, खुद मेरी समझ में नहीं आता क्योंकि, कायदे से तो जिन हालात में मैं हूँ, उनमें मुझे जीवित नहीं रहना चाहिए था...'*

लिपटे रहना चाहते हैं। आप कह सकते हैं कि समाज रजनी बाबू की सोच और संवेदना के केंद्र थे।

रजनी बाबू जीवन के अंतिम दशक में काफी अस्वस्थ रहे। उन्होंने इस अवधि में भयंकर दारुण स्थितियाँ देखीं और उन्हें भोगा भी, किंतु देखे-भोगे हुए को भी तटस्थ रहकर सदैव वही दिखाने की कोशिश करते रहे जिसे नंगी आँखें या कैमरे का लेंस नहीं पकड़ पाता। जब भी उनके समीप घंटों बैठकर मैंने उनकी बातें सुनीं तमाम मानवीय सस्कारों, उसके स्वार्थों और परोपकारी मनोवृत्तियों को जगानेवाली बातें कहते रहते थे। कठोर पठारों के भीतर से निकाला गया अर्क जो विपरीत-से-विपरीत परिस्थितियों की अग्नि-परीक्षा से तप जाए, वहीं जिंदगी के मायने समझा जा सकता है। वही मनुष्य को मनुष्य के द्वारा समझे जाने का माध्यम हो सकता है, सामाजिक संदर्भ में वही तप उपेक्षित जिंदगी जी रहे उन करोड़ों लोगों का साक्षात्कार करा सकता है, जो रजनीकांत सिन्हा के सान्निध्य में रहा है। संवेदना सुने और देखे हुए से जाग्रत हो सकती हैं, भोगा हुआ उन्हें गहराता है। नि:शब्द की संगीतात्मकता को वही मर्म तक पहुँचा सकता है।

अपनी तमाम शारीरिक कठिनाइयों और पारिवारिक विसंगतियों के बाबजूद रजनी बाबू में मेहमान- वाजी गजब की थी। उनके घर जब भी मैं अपने मित्रों के साथ गया या कोई भी लेखक अथवा सामाजिक कार्यकर्त्ता जाता उसे अल्पाहार के साथ चाय अवश्य पिलाते थे। मेरा न जाने कितना वक्त उनके साथ साहित्य, समाज तथा पत्रकारिता की चर्चा करते हुए उनके शयन कक्ष में गुजरा। शायद मेरी उपस्थिति से वे थोड़ा-बहुत राहत और तनाव से मुक्त हो लिया करते थे।

ज्ञान विकास केंद्र द्वारा प्रकाशिति बाल रजनी बाबू सिन्हा की रचनाओं में गुनगुनाते बच्चे, संतो के संदेश तथा इक्कीशवी सदी के पूर्व की गूंज उल्लेखनीय है। ज्ञान-विकास केंद्र के निदेशक श्री सिन्हा ने इक्कीसवी सदी के पूर्व की गूंज को भारतीय बच्चों के तृतीय उपहार के रूप में केंद्र की इस पुस्तक में कहा है कि आजादी के पूर्व तक भारतीय बच्चों के मस्तिष्क में अंग्रेजी हुकूमत ने हासवृत्ति के बीज को उनकी शिक्षा व्यवस्था के ढाचे की संरचना में ही बो कर उनके खून में ही दासवृत्ति के विष घोल दिये थे जिसे आजादी के बाद अकेले गांधी जी ने समझा और उन्होंने सबसे पहले भारतीय शिक्षा के ढाचे मे ही श्रम के आधार पर रोटी कमाने वाली शिक्षा-व्यवस्था की संरचना करना अपना धर्म समझा और उन्होंने इसे बुनियादी शिक्षा व्यवस्था के नाम से देश में शिक्षा व्यवस्था चालू करने की अनुशंसा की। किंतु गांधी जी के निधन के बाद सभी बुनियादी विद्यालय अपेक्षा के शिकार होते चले गये। फिर जब जनप्रति निधि तथा शासक वर्ग ही सामंतवादी संस्कृति के पोषक हो गए और शिक्षा के मंदिर ही गंदी राजनीति एवं गुडा-गरदी के केन्द्र बन गये तब पानी की सतह आज नाक तक पहुंच चुकी है। ऐसी स्थिति में राजनेताओं की गले से तरह-तरह की गुहार के स्वर, जो इस पुस्तक में रचनाकार रजनी कांत सिन्हा द्वारा व्यक्त हुए है। को भारतीय बच्चे इस पुष्पमाला में सुन सकते है। श्री सिन्हा की ध ारणा थी कि बच्चे ही देश की संस्कृति और उसकी विरासतों को अनुभव बनाये रखे सकते है।

बशर्ते कि उनको दी जानेवाली शिक्षा के मॉडल की संरचना में ही उक्त तत्व को समाहित कर दिया जाए। उनका मानना था कि आज अक्सर बच्चे स्कूल जाना नहीं चाहते या स्कूल जाकर भी आधा से अधिक बच्चे जो स्कूल छोड़ देते है उसका कारण गरीबी के साथ-साथ स्कूली शिक्षा कार उबाऊ, नीरस पाठयक्रम और भयावह परीक्षा प्रणाली है।

बाबू राधे सिंह के सुपुत्र रजनीबाबू कांत सिन्हा का जन्म नालंदा जिले के हरनौत प्रखंड में सन् 1919 में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा हरनौत में होने के पश्चात बिहार टाउन स्कूल में मैट्रिक की परीक्षा पास की। फिर बी एन कॉलेज पटना से आई एस सी करने के बाद बी ए में राजनीति विज्ञान का अध्ययन किया। लगभग 20 वर्षो तक उच्च विद्यालय में शिक्षक के पद पर काम करते हुए अपने विद्यालय की ओर से एन सी सी ऑफिसर भी रहे। प्रेमस से जुड़े रहने के कारण न केवल बिहार मुद्रक परिषद के उपसभापति के पद पर कई वर्षो तक आसीन रहे। बल्कि परिषद द्वारा संचालित मुद्रक तकनीकी प्रशिक्षण संस्थान का इन्हें प्राचार्य श्री बनाया गया।

अमर कथा शिल्पी पुणीश्वर नाथ रेणु की स्मृति में प्रकाशित हो ग्रंथ-रेणु स्मरण और श्रद्धांजलि तथा रेणु कर्तव्य और कृतियों के प्रकाशन का श्रेय रजनी बाबू को जाता है। बिहार एवं मगध विश्व विद्यालय के कुलपति बी एम के सिन्हा की दो कृतियों- मेरी दुनिया और टुबईस लाइट के प्रकाशन में भी इनका उल्लेशीनय योगदान रहा।

रजनी बाबू ने अपने पुत्र अरूण का विवाह तथा शिल्पी रेंणु तथा श्रीमति पद्मा रेणु की दूसरी सुपुत्री नवीनता के साथ बिना तिलके-दहेज रचाकर इन्होंने एक उदाहरण प्रस्तुत किया। मुझे अच्दी तरह याद है इस शादी के अवसर पर लोकनायक जय प्रकाश नारायण ने उपहार एवं आशीर्वाद स्वरूप वर-वधू को एक घड़ी भेंट की थी।

रजनी बाबू ने जो कुछ भी सोचा, समझा, उसके पीछे उनके जीवन का अनुभव था। उनकी कृतियों में जो कुछ भी है वह नितांत उनका अपना मौलिक है। वह उनके अनुभव का, उनके अपने जीवन-दर्शन का साहित्य है उन अनुभवों से गुजरना रोमांचकारी है। निश्चय ही समाज व साहित्य को आज जिस विपरीत परिस्थितियों से गुजरना पड़ रहा है उसे देखने के लिए रजनी बाबू नहीं बचे हैं और संभवत: हममें से भी कई लोग इस परिस्थिति की परिघटना को घटते देखने के लिए मौजूद नहीं रहेंगे। पर मेरा दृढ़ विश्वास है कि आनेवाली पीढ़ियों-मौजूदा अन्याय को पहचानने और दूसरा-प्रतिकार करने में देर नहीं लगाएगी। सच मानिए, रजनी बाबू की मृत्यु जैसे हममें नई चेतना जाग्रत करने और समाज, साहित्य तथा देश के प्रति और अधिक सोचने और करने के लिए ललकार रही है। इस मायने में मैं उनके प्रति श्रद्धान्वत हूँ और तेहदिल से मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

●

'तुम चंदन, हम पानी के प्रतीक'
डॉ. विद्यानिवास मिश्र का निधन

'प्रभुजी तुम चंदन, हम पानी', भारतीय संस्कृति के पोषक और हिंदी तथा संस्कृत के प्रतिष्ठित लेखक डॉ. विद्यानिवास मिश्र की विनम्रता ऐसी थी, जिसने हिंदी साहित्य जगत को अपने ललित निबंधों की चंदन-सी खुशबू महकाया और खुद को हमेशा पानी माना। कागज की शिला पर अपनी कलम को चंदन की तरह घिसते रहनेवाला विनम्रता और विद्वता का यह वह वृक्ष पिछले 14 फरवरी को ढह गया। उ.प्र. के मऊ आजमगढ़ जनपद की सीमा पर दोहरी घाट थानांतर्गत चिउंटी डांढ़ गांव के पास एक दस वर्षीय बालक को बचाने के प्रयास में उनकी गाड़ी सड़क किनारे एक गुलमोहर के पेड़ से टकरा गई और इस दुर्घटना में आचार्य मिश्र के अलावा उनके एक सहायक का निधन हो गया। देवरिया में एक कन्या महाविद्यालय का शिलान्यास करने के बाद आजमगढ़ होते हुए डॉ. मिश्र वाराणसी लौट रहे थे कि हवा का यह बुलबुला फूट गया।

'पदमश्री' तथा ज्ञानपीठ पुरस्कार के अलावा कई सम्मानों से सम्मानित डॉ. मिश्र मौजूदा समय राज्यसभा के सदस्य थे। उ.प्र. के गोरखपुर जिले में 28 जनवरी 1926 को जन्मे डॉ. मिश्र ने वाशिंगटन विश्वविद्यालय में अध्येता, वाराणसी के संपूर्णानंद संस्कृत विश्व विद्यालय में अध्यापक तथा कुलपति के पद को सुशोभित करने के अतिरिक्त काशी विद्यापीठ के कुलपति पद का दायित्व भी संभाला था। उन्होंने अपनी बौद्धिक-यात्रा की शुरुआत पत्रकारिता और निबंध लेखन से की और अपनी रचनाओं से भारतीय संस्कृति और साहित्य की अभिवृद्धि में उल्लेखनीय योगदान दिया। वे एक लंबे अरसे तक नवभारत टाइम्स के संपादक भी रहे। वर्तमान में वे साहित्य अमृत के संपादक थे। भारतीय प्राचीन परंपराओं के ऋषितुल्य डॉ. मिश्र के निधन से भारतीय संस्कृति, साहित्य और ज्ञान के क्षेत्र में जो क्षति हुई है वह अपूरणीय है।

सचमुच डॉ. मिश्र बहुत बड़े थे। वे इसलिए बड़े नहीं थे कि वे भारतीय मनीषा और वांङमय को मथ कर उसका तत्व नवनीत निकालने वाले तत्वमिनिवेशी भारतीय अस्मिता की पहचान थे, लोक-संस्कृति के व्याख्यता थे, अपितु वे इसलिए बड़े थे कि वे किसी को छोटा नहीं मानते थे। मनुष्य की सारी सीमाओं और संभावनाओं के साथ जानते-मानते थे

अपने अंदर गजब का उत्साह रखनेवाले इस चोटी के साहित्यकार को *विचार दृष्टि* परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

●

नंदन के संपादक जयप्रकाश भारती का निधन

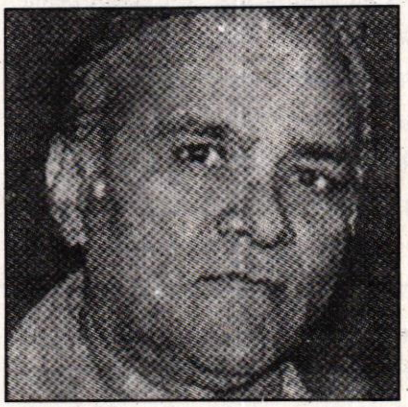

विचार कार्यालय, दिल्ली। तीस वर्ष से अधिक तक बाल पत्रिका **नंदन** के संपादक पद रहे जय प्रकाश भारती का निधन पिछले 5 फरवरी को हो गया। भारती जी जब लिखने बैठते थे तो उनकी कलम रुकती न थी। वह गुस्से में बौखलाए आदमी को जरा सा भी अहमियत नहीं देते थे। और न उसकी बात को सुनते थे। उन्होंने बहुत सी पुस्तकें लिखीं उन्हें ढेरों पुरस्कार भी मिले। पुरस्कारों की राजनीति करने से भी उन्होंने कभी परहेज नहीं किया। भारती जी को स्वादिष्ट खाने का बहुत शौक था। रसगुल्ले, रबड़ी, गजक और न जाने क्या क्या।

नंदन में भारती ने कभी भी ऐसी कहानियाँ नहीं छापी जिनके अंत में उपदेशों की घुटटी पिलायी जाती है क्योंकि उनका मानना था कि कोई बच्चा उपदेश से कुछ नहीं सीखता है। भारती जी की इच्छा थी अंतिम समय वह अपने गृहनगर मेरठ में ही हो, सो उनकी इच्छा का सम्मान किया गया और मेरठ में ही उन्होंने अंतिम सांस ली। विचार दृष्टि परिवार उन्हें अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

साभार स्वीकार

पुस्तकें

1. साग विदुर गृह खायो-खंडकाव्य
रचयिता: राजभवन सिंह, पटना

2. शैला के प्रति: गीत संकलन
गीतकार : डॉ. दीनानाथ शरण, पटना

3. प्यासा बन पाखी - हाइकु संग्रह
हाइकुकार: डॉ. रमाकांत श्रीवास्तव
प्रकाशन: एल-6/96, सेक्टर- एस
अलीगंज, लखनऊ-226024

पत्रिकाएं

1. चारु चंचल-अगस्त अक्टूबर
प्रधान संपादक: डॉ. रामनाथ सेन
प्रकाशक: सरस्वती सदन, 'राणा'
नाइयों की पुलिया हटवारा,
ताल बेहट (ललितपुर-284126)
झांसी, (उप्र)

2. क्रांतिस्वर - जनवरी 2005
संपादक: डॉ. तोताराम गुप्त 'विरही'
प्रकाशक: फतेहपुर सहकारी मुद्रण
एवं प्रकाशन औद्योगिक उत्पाद
समिति लि.
212, सी.-कटरा अब्दुल गनी,
फतेहपुर

3. केरल हिंदी अकादमी शोध पत्रिका
संपादक: डॉ. एन. चन्द्रशेखरन
नायर, केरल

4. मैसूर हिंदी प्रचार परिषद पत्रिका-
दिसंबर 2004
प्र. संपादक: डॉ. बि. राम
संजीवय्या
प्रकाशक: मैसूर हिंदी प्रचार परिषद
58, वेस्ट ऑफकार्ड रोड,
राजाजी नगर, बैंगलूर-560010

5. जागो बहन - जनवरी-मार्च '05
प्र. संपादिका: डॉ. शांति ओझा
प्रकाशक: 2/30, श्रीकृष्णपुरी,
पटना-1 फोन: 2233131

त्रिमूर्ति ज्वेलर्स

बाईपास रोड, चास, बोकारो
झारखंड
दूरभाष: ६५७६५
फैक्स: ६५१२३

परीक्षा
प्रार्थनीय

सुरेश एवं राजीव

त्रिमूर्ति अलंकार

त्रिमूर्ति पैलेस
(रूपक सिनेमा के पूरब)
बाकरगंज,
पटना-८००००४
दूरभाष: २६६२८३७

आधुनिक आभूषणों के निर्माता, नए डिजाइन, शुद्ध सोने-चाँदी तथा हीरे के गहनों का प्रमुख प्रतिष्ठान

Prithviraj Jewellery

Specialist :Bangal Set, Chain & Jewellery

All Kinds of Export Manufacturing of Gold Ornaments.

Deals in Export Jewellery.

25/3870, Regharpura, Karol Bagh, New Delhi-110005
Phone : 011-25825745, 011-25713774
Mobile No. : 9811138535

Prop. : Raj Kumar Samanta
Sambhu Nath Samanta

वर्ष : 7 अंक : 23 अप्रैल-जून 2005 RNI REG. NO. : DEL HIN/1999/791

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ के
75वें संयम पर्याय वर्ष में

हम गुरुदक्षिणा समर्पित करें

अणुव्रत आचार संहिता को
जीवन में प्रतिष्ठापित कर

स्वयं अणुव्रती बनें, औरों को बनायें

अहिंसा सव्वभूयखेमंकरी
अहिंसा यात्रा
2001–2006

अनुरोध
मगन जैन
छगनलाल, चन्द्रभान, जम्बू कुमार, अशोक, सुदर्शन जैन

कुन्दनलाल रामचन्द्र जैन
पोस्ट : तुषरा (बलांगीर-उड़ीसा) 767030
दूरभाष : (06652) 256114,256341

प्रकाशक, मुद्रक व स्वामी सिद्धेश्वर द्वारा 'दृष्टि', यू-207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92 से प्रकाशित एवं प्रोलिफिक इनकारपोरेटिड, एक्स-47, ओखला फेस-2, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित। संपादक-सिद्धेश्वर